







॥ कविता ॥ सज्जन जे जगदी सरचे तिलक ॥ १ ॥  
॥ १ ॥ वैद्य सील सुभाऊ गौह सहजें अनुकूल परकें हैं  
दृष्टिये उच्ये पेटे ॥ नेहु करे सुषरो गहरो अनुरूप ले  
सुनक्यो हं घटो ॥ चोलके रंगनि चो नरग्ये सो वन  
रिपे फटे हं फटे ॥ १५ ॥ दाया ॥ कलकृत नैहा पियके उ  
गदकता अधिकार ॥ चढवां अवीरा तुहे टते तो उर उर ज  
नेचा ॥ यह परस्ता विक्रम विकी अक्रिा नुसो तिलिके  
अधतरो सो नो दो अये करावत हे सो टो का ॥ यह नाइका  
असरस तुहे ॥ कोहं कवि कस वाहि चरि कै सो तिलुको दु  
नेर विनि रवि जोई अति तरस तुहे ॥ १६ ॥ कविता तो  
जोधतरे तै सरस मदु बह तो पतल ॥ तो अति प्यारो  
॥ १७ ॥ वाहि जव वाइ तव वोरार्इ पुकोसे ॥ तव तै यह अ  
तया हि जोई परस तुहे ॥ १८ ॥ दाया ॥ ३ ॥ रि तो उर मे  
अपरे वूडे वेहे हजारा ॥ किते न अगुन ज ॥ ते सास उ  
ने चढ तो वारा ॥ टो का ॥ यह परस्ता वि ॥ १९ ॥ टो का  
॥ अक्रि अ न्या क्रि हस भवे ॥ कविता ॥ ये क ॥ नि क  
से चहलै ई भोजि गये इ क वूडि मये है ॥ ये क वै प्रो ति  
ते नकी नल ही सुधिये कनि धीर ज द्वा डि दये ॥ २० ॥



हालांकि सुसधी जाइके ॥ ११७ ॥ तिलि ॥ ११७ ॥  
विता ॥ पीनपयोधर भूधरसेतियतो उरउपरके हैं  
जवै ॥ कौवसिहपीयके उरभासिनि सुंदररूपले  
भूपतेवै ॥ नेक विलोचन लोल भणुन वजोवुन  
जातिजगीये चवै ॥ ते उकसे उरजात नही पियके उ  
रते उकसाईसवै ॥ ११८ ॥ दोहा ॥ वाटततो उरउरज  
भरुन रुतरुन ईविकासु ॥ वोजनुसौति निकै  
हीयो आवतिरुधी उसास ॥ टीका ॥ यहनाइका  
नवजोवन भूषिता है या कौंदे विवैसौति नु कौंदु  
बुहोतु है सवी नाइका सौ कहति है ॥ क्रावित ॥ तो  
नीतु हीरमनी कमनीय भयो वसतौ अतिप्यारी  
नेहारी ॥ वैसविला सुजगै जवतै तवतै यहज  
तवातनिहारी ॥ वाटतु है नवनागरितो उरमे  
रजातनु कौभरुभारी ॥ ताभरसौति निसासउ  
सतिपीरही सौं हियहोति दुवारी ॥ १२१ ॥ टीका  
॥ मानहुं सुहदिवरावनी दुलहिनि क  
नुराग ॥ सासुसदनुमनु ललनहुं सौति  
ही सुहाग ॥ टीका ॥ यहना

...नीबनचक्रकेसुखायईअंत... वटनलागस  
वीसवीसोंकहतिहे॥१॥कवित॥नेननिकीवटवा  
रिलहैंचितचातुरीकोउमगाअधिकार॥चातुरीको  
अधिकारलघीतवनेननिचोदगहीसरसाई॥कस  
कहैवरुवांधोरुहनिइतेपरघीसमनेजकीपाई॥हो  
डायंहाडांचलेवटिमानोविलोचनिचोचितको  
चतुराई॥१॥दोहा॥निरघिनवाठानारितनधुट  
तलरिईलेस॥भौप्यारोपीतमुतियनुमनोचल  
तुपरदेस॥दीका॥यहनाकानवाठोहैयाकोजाव  
नुचावतेदेघिसोतिनिरासभईसुसवीसवीसोंकह  
तिहे॥१०॥कवित॥कुंदनसीदिपेदेहकीदीपतिमे  
मनौनिजुसोंहनीघालतु॥धूटतिसीलरिका  
कधूतरुजापनुरंगतरंगउछालतु॥बालवधूत  
नजोवनुचावतुसोतिनुकेउरसूलसौसालतु॥प्र  
ननुतैअतिपारंगयोहरिमानोकहंपरदेसकांच  
लतु॥१०॥दोहा॥गाटेगाटेकुचनुठिलिकोपीस  
दीयठहराइ॥उकसोंहईतोहियेईसवैउकस  
॥दीका॥यहनाइकानवाठोहेजाइकया

सवीसवीसौ कहति है ॥ ७ ॥ कविता ॥ प्यारे न  
दलाल वहवाल अलवेली नव जेवन को जेति दि  
ने है कौतै भरति है ॥ दंपति चरित्र चित्र मुरि चित वन  
लाजी काम की करानी कछु कान नु धरति है ॥ रं च  
कउरो जनु की कोर उकसै ही भई नै सकुल जे ही  
ता चितौ निहृ टरति है ॥ सब को वचाइ दी ठि नि जु द  
गो वार वार गुं जाहार मिसु करि करि वो कारति है ॥ ७ ॥  
अधन बोटा ॥ दोहा ॥ अपने अंग के जानि कै जे व  
नवपति प्रवीज ॥ सन मन नै न नित व कौ व डोइ जा  
रकी न ॥ ८ ॥ टीका ॥ यह नाइ कानव जेवन मुग्धा  
वी कौ वचन सवी सौ ॥ ८ ॥ कविता ॥ जेवन भूप  
हा परवी न विचक्षण ताइ हिरी ति ठई है ॥ राजु लद्यो  
वला तन को कटिसुनु की संपतिलू टिलई है ॥ दरि की  
से सुता के सहाइ के चातुरता चित चास मई है ॥ नैन  
तं वउरो जनु को अपने गनि कै वट वारि दई है ॥ ८ ॥ दो  
॥ अरतै टरत नवर परे दई मुरकमनु मेन ॥ हो डों हो  
॥ वाठि चले चित चतुराई नैन ॥ ९ ॥ टीका ॥ यह नाइ



जा॥ पा॥ कवित॥ कैसी सुहाई ललाल रि काई मै जो व  
न जो तिल सों हों भई है॥ वाल विनोद नु सौ उ चट  
र चु काम कला सर सों हों भई है॥ वाहि विलोकि रि  
हाति सधी वती यां न की वां नि ह सों हों भई है॥ अ  
जुही का क्लि मे वाल वधू की कचू छ ती या उ क सों हों  
भई है॥ पा॥ दोहा॥ हे रि हि डो रंग जग न तै पॅ परीः  
सी रू टि॥ धरी धा इ पिय वी च हीं करी वरी र स लू  
टि॥ ६॥ टी का॥ यह ना इ का मुग्धा हे ना इ क को दे वि  
हि डो रै ते चा स क्त भई रू टि परी सु सधी को व च नः  
सधी सों॥ ६॥ कवित॥ वाल दू वी ली सधी नि के  
संग वनी ठनी जूल ति रंग हि डो रै॥ नंद ल ले ल  
वि ऊं चै तै रू टि परी ज्यो परी अ तिला ज नि हो रं॥ प्र  
न पियारे ने वी च हीं धा इ करी र स लू टि लई भरि  
रं॥ चाले की चू नरी चा रु क सूं भी सुरंग सनी र म के  
त न गौरं॥ ६॥ अघ ग्पात जो वना॥ होहा॥ भाव  
भरों हों भयो कचू प स्यो भ सु जाइ॥ सी प हार के  
सहियो नि सु दि न हे र त जाइ॥ टी का॥ यह ना इ  
का मुग्धा ग्पात जो वना सधी ना इ क सों कह ति है

याको जो वनु देखि नाइ क्यु या होके वस भयो यो रू।  
नोति नुहुंको सुहा गुइ निली नो सुस सी सवी सौं  
कहति है ॥ कविता ॥ गौने आई दुलहनिलो नैत न  
नारी मानो जगर मगर होतु भवनको भागु हो ॥ विधि  
नेस वारी गुन चातुरी की सौं वजाके रूप अंग रति  
को रती कहू न लागु है ॥ मेरे जोने सुह दिवरा वनी  
गौने गुजानि आपु ही तें सौं पिदी नो की नो अनुरा  
गु है ॥ सासुने सदनु दी नो प्यारे लाल मनु दी नो औ  
रूपी तिपनु दी नो सौं तिनु सुहा गु है ॥ १३ ॥ दोहा देह  
डुलैया की वटे ज्यौं ज्यौं जो वन जोति ॥ त्यों त्यों ल  
विसौ तें सेवे वदनु मालिन रुति होति ॥ टीका यह  
नाइ कानवो टानव जो वन भूषिता देया को जो  
वनु आवत देखिसौ तिनुके मुह फीके परत हैं सु  
सवी सवी सौं कहति ॥ कविता ॥ मंथर गौं नग है प  
गपंकज मत्र गयं दनु दूषन लागे ॥ त्यों वध भान ल  
लीतनु जो वनु जोति के लहरा भूषन लागे ॥ मे  
नके टो नासे वन भयेति निके सम ऊषम यूष  
न लागे ॥ ज्यौं ज्यौं विलोकि भई मलिनी रति सौं  
तिनुके मुह सूषन लागे ॥ १४ ॥ दोहा ॥

जो वन जेठ दिन कुचमिति अति अधिक है ॥  
दिन दिन कटिदि पाद्येन परति नित जाइ ॥  
का ॥ यह नाइ का आरुत जो वना है जैसे कुचक  
उत है कटि घटति है सघी सघी सौ कहति है ॥  
दिता ॥ वातन रूप की रासिल से ति हं लोक मै गे  
रहिती कलही किनि ॥ वाजिक वेस लुनाई विले  
कि कै तोरति वार हीं वार रहितुनि ॥ जो दिन जेठ  
हिचा वत ज्यौं ज्यौं उरो जनि कौ परिमानु वटे  
न ॥ त्यों हीं त्यों हीं ललगी कवि कल्प पाका  
घीन परी दिन हीं दिन ॥ १५ ॥ होहा ॥ नवना  
रित मुमुल कुल हि जो वनु आ मिल जोर ॥ घटि  
टि तें वटि घटि रकम करीं और की और ॥ टि  
यह नाइ का केत न में जो वनु जाये अंग घटि हेते व  
टि गये वटि हेते घटि गये यह आ मिल कौ प्रसंग व  
रि सघी सौ कहति है सघी कौ वचन नाइ कह सौ सं  
भवे ॥ दी ॥ सुवरन वेली कौ सीन वेली कौ  
ललितत नुराजतु सुदेस अति सोभा सरसायो है  
पायो है हं सुदिनि पालमीन केतनु कौ जो वनु  
प्रवलत हां आ मिल के जायो है ॥ और हीं और हीं  
तिरकम वनाइ की नी अमलु जगयो सवही के

मनभायौ है ॥ घटि हे ते वटि की नै वटि लै घटाइ दोन  
कहे कविक सत्रै सो चलनु चलायौ है ॥ १५ ॥ अथ  
मध्यामा दोहा ॥ भेटत वनतन भावतौ चितुतर सतुच  
तिप्यार ॥ धरतिलगाइ लगाइ उर भूषन वसन हूप्यार  
टीका ॥ यह मध्यामाइ कालाज कामसमान है स  
वीसौ कहै है ॥ कविता ॥ प्यारी कौन हल ज्यो पीय प्यार  
रसौ ध्यान मै प्रानर है दिन राती ॥ भेटि वै कौन उपाउ  
वने पुर लो गालिके उपहास सकाती ॥ जानिके प्रीतम  
केतन के तिनिके मिलि वै कौहि प्यं अकुलाती ॥ भू  
षन वास अ वासके कौन मै वार ही वार लगावति छ  
ती ॥ १६ ॥ दोहा ॥ छुटति नलाजन लालचौ प्यो लखि न  
हरजेहा ॥ सटपटात लोचन घरे भरेसको चसनेहा ॥  
टीका ॥ यह मध्यामाइ कालाज कामसमान है सुस  
वीसवीसौ कहति है ॥ कविता ॥ माइके मै मन भावन  
कौ लखि प्यारी निसके देविसके ना ॥ देवि वै कौत  
रसे हियरादि वसाधालंगी चिते न लहेना ॥ छुटै  
नलाज अट्टै नला लचलोक की लीक उलंघि  
परेना ॥ तासौ सनेहसको चभरे अकुलात घरे ज  
लजात सनेना ॥ १७ ॥ दोहा ॥ समरसंमरसको चव  
सविवसनई अकुलाइ ॥ फिरि फिरि उर्जकति फिरि दु

रेदुरिदुरिउगकतिजाइ॥ टीका॥ यहनाइ काम  
हेलाजकामसमानहैसवीकोबचनसंधीसों॥  
दिता॥ प्राणनुमाऊवसीपीयमूरतिनेननुमाऊस  
कोचविवेको॥ जांकिऊरोघादुरैफिरिजांकेहु  
रौठहरातिनपुको॥ त्रसुइतौगुरलोगनुकोउत  
नचुलालनकेलधिवेको॥ लाजऔकामकेवाम  
उवीचपरीयोचलाचलिहालुहीयेको॥ १५॥ १६॥  
नईलगनिकुलकीसकुचविकलभईअकुलाइ॥  
उहंचोरअंचौफिरेफिरकीलौदिनुजाइ॥ टीका॥ य  
हनाइ कामधालाजकामसमानहैपरकियाहहेइ  
नईलगनिकुलकीसकुचयाप्रदतैसवीकहतिहै॥ व  
दिता॥ नईलागीलगनिरसिकामनमोहनसौउरअभि  
लाबतुउमगभरतिहै॥ कुलकीसम्हारकीसुरतिअ  
अंसीरीहोतिअतिहोविकलजीवुकलतधरतिहै॥  
धिवेकोतरतिठरतिमनहीमनमेभरतिउसासप  
प्रकारनकरतिहै॥ चाहकुलकानिवीचफिरकी  
लौवालवधूइतउतअंचौअंचौफिरिवेकरतिहै  
होहा॥ छलाछुवीलेलालकीनवलनेहलाहिजा  
रि॥ चाहतिचमतिहाइउरपहरतिधरतिउतारि॥  
टीका॥ यानाइकाकोसनेहनाइकमेवहुतेहसुवा

कैहल को पाइवाके मिले को सुधमानति है लाजें  
मिलिवे को प्रिया सौ जाही करति नाइ काम ध्या पर कि  
माह होइ तो होइ सघी सघी सौ कहति है ॥ कविना ॥  
नागर सौ न वेहे ने हल भो न वना गरि चालि निहं सौ  
दुरावै ॥ दिखिवे को चुकुला ति ही ये अतिला जनु  
तै वनि पे न ही आवै ॥ नंदल लोको कुलाल हि कै त  
किता हिर ही न निमेष लगवै ॥ चूमति द्वा वति अ  
घिनिसौ कवहं पहिरे कवहं उर लावै ॥ २१ ॥ दोहा ॥  
चाले की वातें चली सुनतं सघी नुके टोला ॥ गोपे  
लो रन ह सत विहसत जा तक पोला ॥ टीका ॥  
यह ना नुका मध्या है सघी को वचन सघी सौ ॥ क  
वित ॥ सो है सघी नु समाज मे सुंदरि जा हिल धै र  
ति रूप ज्या यो ॥ एक ही वै स सवै गुण आगरि चो  
परि धेलु महा वनि आयो ॥ चाले की वात चली  
तव ही सुनि कै सौ हो अचर जी नै दुरायो ॥ नैन  
नु लाज कपोल नु हा सी उहं मिशलि अति रंग के  
देषायो ॥ २२ ॥ दोहा ॥ उर उर ज्यो चित चोर सौ  
गरु रजन की लाज ॥ २ ॥  
संहीये

कीयें मनो प्रहकाज ॥ श्रीका ॥ यह नारकामध्या  
षी कौ वचनु सषी सौ ॥ कवि ॥ नंद किसोर के  
पलु म्यो चितु यौ उर जो सु मु रैन हि मो रे संक ही  
यें गुर लो गनु की प्र हका जुक रे अति लाज नि हे  
रे ॥ मै न मर रनु सौं मुर जा ति क दून व सा ति फ सी  
वि वि अरै ॥ वा मृ ग लो च नि कौं दि न द्वै तें च ढ्यै चि  
त चा रु वि चारि हिं डो रे ॥ २३ ॥ दो न ॥ स ट प टा ति  
सी प्रा पि मु षी मु ख बू ब ट प ट ढां कि ॥ पा व क र  
र सौं ज म कैं कैं ग र ज ये षां जा कि ॥ श्रीका ॥ यह नार  
कामध्या लाज काम समां न हे सो नार कु सषी सौं  
जै सी जा ति दे षी है तै सी अ वं स्या कह तु हे सषी कौ  
वचनु सषी सौं हे ॥ कवि ॥ मो ह नी सी मुर ती  
की धु नि सु नि अ व न नु लु कं ति अरै प्रा पि मु षी सी  
"स ट प ट सौं ॥ नै स कु उ ज कि आ न अ व लो कि वे  
कैं ड र दा वि ली नौ आं न नु लु ज्य र प ट प ट सौं  
क हे क वि कृ ष्म बाल जा नि की नि कारे दे षि वे  
कौं द्र ग अ कु ला त म द न व ट प ट सौं ॥ दी प ति

कीतिरपकरपकिधौपावककीजकिगईजमकिज  
रोधाजपटजपटसौ॥२५॥ प्रोटा॥ दोहा॥ विह  
सिवुलाइविकिउतपोठातीयरसधूमि॥ पुलकिप  
सीजतिपूतकोपीयचूम्योमुहचूमि॥ टीका॥ यह  
नाइकाप्रोटाहैसुसनेहकीअधिकेईतेंपीयनेच  
म्योवहीपूतकोमुहचूमिकेंआनेदमानतिहैसाहि  
कभाबहैहोइवातसत्सहै॥ कवित्त॥ पूरनप्रेमउना  
हेंतेंप्यारीकिरेसवमाजहीयेंहुलसाती॥ पूतकोअ  
ननचूम्योपीयातीयचूमतिजातिमहारेसमा  
ती॥ चाहिउतेमुसक्याइवुलाइहीयेंसुषपाइला  
गावतिद्धाती॥ गतपसीजिसमंचितहोतेंभईअनु  
रागकेरंगमैमाती॥२५॥ दोहा॥ कोरिजतनकीजे  
तजतनकीतपतिनजाई॥ जोलौभौजेचौज्यारेहै  
नप्योलपटाई॥ टीका॥ यहनाइकाप्रोटाहैकामके  
अधिकारहैनाइकाकोवचनसधीसौ॥ कवित्त॥  
कीयेंकोटिजतननतनकीतपतिजाइअतल  
कीपौरअतिउरसरसातिहै॥ हरितेंविलोडि  
कैचितचौगुनौउमंगैचाउटिगआयेभेटिव  
कौनितकुलातिहै॥ लीजीयेनुजानिभरि-

लो

र



की जो ये नन्या दो क्यो हं जो बनु सुप्रस्त जो ल  
दियो ही न दाति है। आले पट के सी भाति प्रा  
पति चो नो जा मर है ह्य पटा लो छाती तो ही लो  
सि राति है। २५ दो ह्य ॥ दिन कु उ धार ति दि  
बु बु वति रा वति दिन कु दि पाइ ॥ सब दिन प  
नयं डै त ज धर हर पनु दे वत जाइ ॥ दो का ॥ यह  
न इ का पो टो है ना इ क सो सने ह्य धि के ह्य ह न  
इ का ना इ कु के कत दि कु सु त के चि न्ह का मन  
लगा वति हे स वी को व च न स वी सो ॥ क दि  
न ॥ रा ति र ति रंग पति रंग मि ली की नी चंग  
चंग स न स च की त रंग रंग व र से ॥ भौ र भ ये व  
न स न ली ग न मे वे डी वे नि सां की वा त सु मि  
रि सु मि रि जी य त र से ॥ प्यारे के ह स न के च धर  
पर चि न्ह ता हि आ र सो ले वार वार दे खै र स व  
र से ॥ क व हं उ धारे क हं टां कि रा वै अ नुरा ग  
र से ॥ उ मं गि पा नि प ल भ से ॥ २५ ॥ दो ही ॥ दु  
वि हा इ नु च र चान ही आ न न चान न चान ॥  
ल गी र ह ति हं का दि ये का न न का न न का न ॥  
दो की ॥ यह न इ का पो टा ना इ का को व च न

सखीसोंपर किया हुआ ॥ कावित्ता ॥ लाल मन भा  
वनसोंमिलिकरिआपुसकेलिकेमनोरथावि  
विधिवहुमानहों ॥ कष्टपानप्यारोंनेकमेरी  
घोरदुःखोताकोचहचरुमेरेईचवावनुको  
अनहों ॥ कुंजवनवीधीमूकाधिरकीकिवारहा  
रलागैरहेंनिसुदिनटं कादियैकानहों ॥ दे  
धोमाईइनिदुविहारनिकेऊलटजुआनन  
आननप्रतिआनचरचानही ॥ रखादोहा ॥  
पौहोंचतिरनऊठिसुभटलेंरोकिसकेसव  
जाहि ॥ लावनुहंकीभीरमेंआंघिउहांचलि  
जाहि ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रोटापराकियाना  
इकानाइककीआंघेदेविसधीसधीसोंबहु  
तिहै ॥ कावित्ता ॥ भीरभईसुभकाजसमाजमेंल  
धनुआनजुरनरनारी ॥ दोऊनुकेउमगेचित  
चाहसोंप्रेमकेभारभरेअतिनारी ॥ काहकी  
रोकीचितोनिरहैनविलोअतिआपुसमें  
पियप्यारी ॥ दीठिउहोंठहरातिभटसवतें  
कछूपोतिकीरीतिहीन्यारी ॥ रखादोहा ॥ सो  
त्रतलाधिमनमानुधरिदि . . .

इस रस सुपन को मिला निमि लि पीय ही य  
पटाइ। टी का। यह नाइ का प्रो टा मान वत  
साइ है नाइ क टिंग आइ से थो सु स्व पन की मि  
निमि सु कर ल पटाइ गड मानु हं रा थो स  
वी सों कह ति हे। ना नि त। मानु की थो ति व म  
न वें सु जालीं र ही वह भां ति म नाइ वें। सो उ  
ही र स ही जी य मै धरि सो इ र थो टिंग मो ह व  
इ वें। ग स ह मै सर सां घोर स्वो कह तें न व नै जु  
ही व वि धा इ वें। वाल व धु स पु नै क सु ना इ र  
पी य के हि सौ ल प टा इ वें। इ ना इ र हो। ज पु न  
र ज नि वौ ली थै क हा नि हो रों तै हि त प्पारें  
को जी य को मो जी य प्पारें मो हि। टी का। यह  
इ का प्रो टा है आप नै जी य की वि त्त स्था ना इ का  
क हा ति है कि ते र वि नु र वें मे रो जी य र ह त्त ना  
आप नै जी व के रा वि वे कों तै सों वौ ल ति हों  
क वि त्त। आप नै आप नै प्रारा स व ही कों प  
ही हों त जा तें भां ति रा वि वे स व हि च ही य त्त है  
पी सी क ह वानि आ नि परी मे र पान सु कें  
हि र वें तौ लों जी लों चै नु ल ही य त्त है। क

तिउपाउहैंतौतिनिहींकेराविवेकौकल्पप्राण  
प्यारेकितत्पारेरहोजनुहैंतातेलालवोलीय  
तुअपनीयेगरजनुताकौकछूतुमसैंनिहोरौ  
कहीयतुहै॥३१॥दोह॥जांसयानअयानेद्वे  
ठगकाहिठगैंन॥कोललचाइनलालकेल  
धिललचौहैंनैन॥टीका॥यहनाइकांपोठहै  
सधीसीछादेतिहैकैवेनेत्रदेविको ललचातुना  
हैंसनेहकौअधिकारसधीकौवचनसधीसैं॥  
कवि॥कोनरहैठगमूरिसीघाइकैंभूलतुकोन  
विवेककले॥कहिकहिनवेविसरावैसवैसुधि  
मोहैंनवेकाहिकाअवलै॥होतसयानअयान  
सवैचतुराईअनेकनएकचलै॥सुआलीरी  
मोहैंमोहनलालकोलोलविलोचनदेवतके  
नछलै॥३२॥दोह॥परकिया॥इंहिकाटेमो  
प्राइलजिलीनीमरतजिवाइ॥पीतिजनाव  
तभीतसैंमीतजुकाटेनोआइ॥टीका॥यहना  
३३॥कियाकौवचनसधीसैं॥कवि  
॥जादिनैतैमिलिमैनकोमूरिसीडारिगयो  
॥नतेअकलातहैंलो

चन्द्रशिविवैकौकंडाउनपावो॥ मोपगम  
मेगडिकैरहेकांटेनेचाजुअमीवरसायो॥  
तिजनावतुपेभयभीतसोंमौहनमोतजुका  
नचायो॥ ३३॥ देहा॥ कोनेहंकोरिकजतन  
वकाहेकांटेकौन॥ भोमनमौहनरूपमिति  
पानीमेंकौलौना॥ टीका॥ यहनाइकाउटा  
परकियाहेआपनेचित्तकोआसक्तिस्वीसों  
कहातिहे॥ कविता॥ जादिनतैवनवाचिक  
निरघोवलवोरकालिंदीकेतोर॥ तादि  
नसुहातुकधूसुधिकोत्ववले  
मै॥ नैननिमोजवसौवहमूरतिजाइयस्वै  
मनुयोंद्विभीरमे॥ कोहिउपाइकियेकटे  
सैंवित्ताइगयोसबीनौनज्यौनीरमे॥ ३४॥ दि  
कारवरसाउरावनेकतआवतइहेजेह॥ कैवा  
ल्यौसधीलधेलेजेघरहराहेह॥ टीका॥ य  
नाइकापरकियाहेहेतुगुणानाइककौंदेविसालि  
नभयोहेतिनिकोसबीसोंदुराइवोंकहातिहे  
कविता॥ आपुकरंगगरेचिरिमिकेदुराधरे  
हेवैकौकारोएककामरीयहेविसालि सीस  
रफैराएकुपीरोसोंअमेहिवांधोतापेएक

वरहीकीपद्योयाफहराति॥मटकिचलतुडर  
प्रावलोसौखांगुकीयेजवइतओरेआवतुअही  
रजातिहै॥तवतवदेविसवीकेउहवारदेधोया  
हेदेधेडरलागेदेहपुलकिघहरातिहै॥अ॥हो  
हा॥परकियागुप्राज्ञो॥केसरिकेसरिकुस  
मकेरहेअंगलपटाइ॥लगेजांनिनवअनघु  
लीकतवोलतिअनुघाइ॥टीका॥यहनाइ  
कापरकियाभूतसुरतगुप्राज्ञाइककेवचनुस  
वीसौजौनाइकेप्रतलसधीनाइकासौकहे  
मोषडितांहुसंभवे॥कविज्ञा॥तोहितोवांवालि  
परीअनघेवैकीअसैहोकेयोअनघाहठुठाने॥  
कीजियेतोनिरधारकछुकिधौमोहचटाइके  
थोलवधाने॥केसरिसौउवटोतनुसोकहके  
नरिहैकैरहेलपटाने॥आउरीतोहिवतांअंन  
नीकहैवावरीतैवेनवज्ञतजाने॥अ॥परकि  
यावाकविदग्धाहोहा॥रहोमोहमितनोर  
धोपौकहिगहैमरोर॥उतदेअलिहिउराहने  
तचितईमोओर॥टीका॥

प्रावाकविदग्धाजकिपौकरिगं

सवीसों कहतु है ॥ कावित्त ॥ जादि नैत बहज्वा  
लिगली में मिलो हती कालि गइ चित चोरि कै  
एक ही वार करी डकठौरी मना विधि रूप कोरा  
सिव टोरि कै ॥ द्यौ डौरया करि कै मिलि वौ उपरो  
सिनि सों कह्यो भौं हमरो रि कै ॥ यौ सजनी सौं उ  
राह लौं देखि मोत नहे रि गइ सुह मो रि कै ॥ ॐ  
किया विरग्या दोहा ॥ पूसमा ससु निस विरुपे  
साई चलतु सवार ॥ लेकेर वीन प्रवीन तियरा  
ग्यौ राग मलाहा टीका ॥ यह नाइ का पर किया  
किया विरग्या सु किया उहे इतो संभवे ॥ का  
त्त ॥ सीत सै परदेस कौ पीय पयान सुन्यो वहरा  
वन लागी ॥ यारि तु मे हरि कौ हंर हे घर देवता  
पूजि मना वन लागी ॥ और उपा उक छनत क्यो  
तव साजि कै वीन वजा वन लागी ॥ प्यारी प्र  
भरे सुर मेघ के राग अलापि कै गा वन लागी  
दोहा ॥ फेरु कछु करि पोरि घंफिरि चितई मु  
काइ ॥ आई जाम बुलेन जीय नै हे चली  
टीका ॥ यह नाइ का पर किया किया विरग्या  
चेष्टा करि गइ सुनाइ कु सवी सौ कहतु है ॥ टी  
कावित्त ॥ वेली लीयै कर आई अचानक कं  
वेली सी वाल अकेली ॥ जो वन जोति ज

जवतैरतिकीरुतिलेजिहिपाइनिपेली॥उठम  
सौंमुरिकेंचितईसुमनोमुसक्यानिमैमोहनी  
मेली॥जांमनुलेरसजामनुदेसुगईजियनेहुज  
माइनवेली॥३॥दोहा॥न्हाइपहरिपटुडटिकी  
घौवैदोमिसपरिनामु॥दुगचत्ताइघरकौंचली  
विदाकीयेघनस्यांमु॥टीका॥यहनाइकापरकि  
याकीयाविदग्धासघीकोवचनसघीसो॥कावि  
३॥न्हाइपटपहरिदुखकीचारुचातुरीसोंडटि  
मनभवनकोंमुरिमुसिकानीहें॥कहकहैंवै  
दीकेसुधारिवेकौमिसुकरिकीनींपुरापतित्र  
तिहितसुषसांनीहें॥कहकहैंआलीकधुकर  
तवनेनकोंहूंजैसीउहिसरससनेहरीतिठानी  
हें॥दुखकोंघरकौचलतचारुलोचनचलाच  
लकेंचातुरीसोंचाहिविदाकीनोरधिदांलीहें  
अचलाइतादोहा॥पूछेंक्योंरुधीपरतिस  
गिवजिरहीसनेह॥मनमोहनछविपरकरीक  
हेकटांनीदेह॥टीका॥यहनाइकालहित  
हेरुघाईकरिसघीसोंदुरावतिहैपेहर्षरोमांच



देखिसतीसहीसोंपुगरकर तिहेसहीकोव  
ननारकासों ॥ कवि = पुठें तें ज्यों वहराव  
तिवातकहातेचनौषीयेरीतितेठानी पा  
रेकेपुमतेपागिरहायवहोंकहामुकरहमन  
नौ क्योउरअंतरकीदुरपीतिसनेइकीरीति  
रहनहोछानी तमनमोहनकोछविपैकटी  
सुखहैसदेकदानी ॥ ५१ ॥ औरआप  
कनीनिककिगनीधनीसिरताज मनीध  
केनेहकीवनीछनीपरलाज ॥ ५२ ॥ य  
जडकालछितासबोवचननारकासोंनार  
कोहितयासोंअधिकहेसुनेवनुकीसोना  
रहोहेयापरतेपुमगरविताहो ॥ ५३ ॥  
लिकलोलकरंगमेसुंदरपीतयसंगरमीरज  
नीहे ॥ जेहसनीदरसातिभरुअरसातिपुना  
सरसातियनीहे औरइसोभदुगंतनयोप  
जंतनिकीसिरमेरगनीहे कानकेपुमकी  
हमनीपरलाजमेयादहनीसीवनीहे ॥ ५४ ॥  
पुनचुडालडुलैनहीमुहवालेजनक  
अपचितउनिकीमूर्तिवसीचितवनिमाह

॥ टीका ॥ यह नाइक पर किया सनेह लखि  
नधीको वचन नाइक सों ॥ कवि त ॥ वोल  
तू इतौ जून वाइ कै हेतु कहा अब साधे रु  
धुं धिरे प्रेम की वानि सु जानि परी  
दुरै नदुराई ॥ तू हरि के हिय माऊ वसो सु भि  
रोइ न उर है सुषदाई ॥ प्यारे की मूरति तो  
धत माऊ वसो जु चितौ निमैरे ति रि घाई ॥ ३ ॥  
रोहा ॥ रुष रूषी मिसरो य मुष कहति रुषी है  
नेह ची कने नैना ॥ टीका ॥

यह नाइका पर किया लखिता रुघाई करि सधी  
सों दुरावति है पै प्रीति के नेत्रे विसयी सों क  
॥ कवि त ॥ भकुटी मरोरि मुह मोरि रोस  
मिसु करि ऊपर रुघाई साधिके हेरु खे वै न है ॥  
॥ लिनु को यह पनु प्रीति ही को धरें तनु कै स  
ऊ दुराऊ कहु इनि सों दुरै न है ॥ हरि के सनेह  
सान्नी के संधी रहति दानी कहै देति प्रगटव  
न ॥ रूषी रुषु करि रूषी वा  
निठानि वैठी परि रूषे के सें हो तनेह ची कने नै

ननु... विष्णोः...  
महापत्न... विष्णोः...  
ननु... विष्णोः...  
कौन्ते... विष्णोः...  
नित... विष्णोः...  
इत्यु... विष्णोः...  
सैन... विष्णोः...  
ना... विष्णोः...  
यन्... विष्णोः...  
नया... विष्णोः...  
नानि... विष्णोः...  
वृति... विष्णोः...  
दित... विष्णोः...  
रति... विष्णोः...  
ना... विष्णोः...  
ननु... विष्णोः...

राजवत्पौरातेरे॥ जैसे कौयें कहि के सेंदुरै हरि  
पारे को प्रेम चटने॥ चित तेरे॥ ४६॥ दोहा॥ रहि मु  
ह फेरि कि हेरि रूत हित समुहों चितु नारि॥ ३॥  
ठि पर सउ ठि पीठि के पुलकत कहतु पुकारि॥  
टीका॥ यह नारका पर क्रीया सषी को देखि  
पीठि देखै ठी दुराखे कौ पैरो मांच देखि पीठि  
षी कहति है नारका लक्षिता॥ कवित॥  
हित कौ निरषि पनु हरषे हितू कौ मनु हम तो  
प्रौरै तनु प्रेम कौ प्रतीतिकों॥ तिनै तू मुरावति  
है वात वहरावति है काहे कौ दुरावति नबे लीने  
हुनीतिकों॥ भावै इत हेरि भावे रहि मुह फेरि  
तेरौ चित सन मुषवी स विसर सरीतिकों॥ दी  
ठिके पर सहीतें उठे यह पीठि पै पुँकव्यांति प्र  
गटकहत तेरी प्रीतिकों॥ ४७॥ अथ कुलटा दो  
॥ लखिलौ नै लो रू ननु के को रूनु हो रू न आ  
जु॥ कौ न गरीव निवा जिवों कित तू म्यौर तिराजु॥



धुपेअलिभलेचतुरअहेरीमार॥काननचारीलेन  
नुसिकार॥टीका॥यहनाइकापर  
कयाकुलटासधीकोवचननाइकासौंजागरन  
रनुसिकारयापदेतैवहतनाइकनुंप्रतीतिभई॥क  
वित्त॥काननचारीकहावैइतेपरदोरकरैपुरमेसुग  
जाये॥ओरअभेडिअचूकहैगुनजागरजातिकेमा  
गिराये॥घाइलेकेफिरिलेतिसुधोनपलैोनध  
कअतिकौतिकह्ये॥नीकेमनेजपुवीनकरैले  
ननैनकरसिघाये॥५०॥मुदिताहोहा॥च  
भारुसुनिउहोपरोसोनाह॥लसीत  
मासेकीइगनिहोसोअसुनिमाह॥टीका॥यह  
सन्तताकोहांसोभईसधीकोवचनसधीसो॥क  
वित्त॥देधिपरोसोकीचीकनीचाहनिप्यारीहोयें  
परीपेमकीफासी॥त्योंपीयजातविदेसलघ्योविल  
निसोसी॥त्योंलसीअ  
जनेनीकेनेननुअसुनुमाजतमासेकीहांसी॥५१॥

चुन चुन लय जा रहा ॥ सनसूक्यो वीत्यो व  
 धौ लई ऊधारि ॥ हरी हरी अर हरि अज्यो धरि धर हर  
 जीय नारि ॥ टीका ॥ चुन चुन य नाना रका संकेत की  
 धौर जा निजा तें सो च कर ति हे सवी समाधा  
 ह्युत्पुतर ॥ कविता ॥ वीनन फूल सहेली के स  
 ली भू जलो च नि मोद भरी है ॥ कलि घली उज  
 अब लो कि उसा स भरी अलि सों उ चरी है ॥ वीति  
 यो वन सूक्यो सनो अरु उ धौ ऊधारि लई  
 ज्यो ह हरी मति धीर धरो अ व हों तो अरा हरि प्या  
 हरी है ॥ पर ॥ दोहा ॥ फिरि फिरि विलवी के लघे फि  
 रि फिरि लेति उसास ॥ सांई सिर क च से त ज्यो वीते  
 चुनति कपास ॥ टीका ॥ यह नाराका चुन सयना स  
 की धौर वीतो जा नि विलघति हे सु सवी सवी सों कह  
 है ॥ कविता ॥ बालम के सिर के सिरो सह ज्यो से त ज्ये  
 से लेती चुनि चुनि सिरं मुर जाति है ॥ वीनति है तूल  
 पसूल के सलत होयें मानि दुष मूल फूल जि मि कु ति  
 लाति है ॥ वार वार कहति अली सों के सी भली रीति  
 कलि विलस की घली यो चुली जाति है ॥ विलघि

लखिकेंउसासैलेइ नब्रलवधूलखिवनुवी तैमन  
अतिअकुलातिहै॥५३॥अथअनेकलजाइकरोह  
नहिहरिलेंहीयरांधरौनहिहरलेंअरंधंग॥५४॥एकत  
हीकरिराधियैअंगअंगप्रतिअंग॥टीका॥यहना  
इकअनेकलहैसुनाइकैलेमनकोविचारजांनीयें॥  
कवित्त॥राधीयैजोहरिलेंहीयरांधरिऔरसेवैअ  
गहोतदुवारी॥तोहरलेंधरियैअरंधंगतोएकही  
री॥तातैयेहेजियआवतिहैकरीयेन  
जोबहन्पारी॥अंगमेंअंगमिलाइकैएक  
हीकरिराधियैपारापियारी॥५५॥दक्षिरानाइ  
रोहा॥जोपिनुसगनिसिसुरदकीरमतरसिअर

॥टीका॥यहनाइकुदक्षिराहैसुरासमेंअपनी  
भेतरईकरिकेंसबकोप्रसन्नराध्याएककेआधीनकी  
इनेनजांन्योसबीकोवचनसबीसैं॥कवित्त॥ज  
पनाकीपुलानिसुहाईह्विहाईतैसीसरदरयनिजो  
हविसराविलासहे॥अवलाअनेकनिमैकीनीनंद  
नालकहूअद्भुतचातुरीकीकलायेंप्रकाशहै॥जो



पि कानि संगर सरंग को उमंगर मेर सि कवन मोहन  
 र मत्त सरस है ॥ सवही को वा इग है सवही के संग  
 ना च्यो सवनि विलो क्यो कान्ह सवही के पास है ॥  
 अघ सदन इ क दो हा ॥ वेई गडि गा डें परी उपय  
 हार ही येन ॥ जालो मोरि मतंग मनु मारि गुरे र बु  
 ना टी का ॥ यरना इ क सठु है विनु गुन हार के चिं क  
 श्री टो वात कहि दुरा वत है ना इ क को व च नु ना इ क  
 सो तो ना इ क ना इ क सो कहै तो खंडिता ह है इ ॥ क  
 विता ॥ आजु मन मोहन मया के मे रे चो ये खाल से  
 हतु सिंगा रु च्रति मेरे खन म ल्यो है ॥ जाल सवलि  
 इग धुं मत त्व लित गति सिध ल क लित रूप मो  
 नी सो सा न्यो है ॥ कस प्रारण पार र हो उर पे उ  
 पटि ब्रह विनु गुन हार अर ग र जा तु जा न्यो है ॥  
 वेई गडि गा डें परी इ ट जो मतंग मनु मदन गुरे  
 लु मारि मोरि जाल्यो है ॥ पश दि हु ॥ वा ल क ह  
 लाली भई को इ नु लो र नु मा ह ॥ लाल तु न्हा  
 इग नु की परी इग नि मे हा ॥ टी का ॥ यह प्र

भरनाइकुसठनाइकाघंडिता॥ कविता॥ चारुनि  
कारीलवैजिनिकीरदलागतिओपरतोपुलकी  
हे॥ वंदनकीहुविमंदकरीचिदरीदुतिविदुमकेद  
लकीहे॥ प्रानपियारीकहाइनिनेननुजीजुल्लला  
ईइतील्लकीहे॥ लोचनलातुम्हारेलवेतिनकी  
इतआनिपुनाऊलकीहे॥ पु॥ दाहा॥ सकतनतून  
तातेवचनमोरसकैरसघोइ॥ विनुषिनुचौटेघारतै  
रोसवादिलुहोइ॥ टीका॥ यहनाइकसठसापराधजा  
मोहेसुनाइकाकेभूसैकहुवनकहतिहेतासोमीठेवव  
नकहिनिवारनुकरतुहेनाइकाअधीराजानियेनाइका  
कोवचननाइकासो॥ कविता॥ काहेतमोहतेनेनीन  
इतियकोनपैकीजतुकोपइतीको॥ तेरेतोतातेउवेल्  
हायेतेमोइमहातमैगावतजीको॥ कोरिकरोविनि  
गमिनिकेसंजहांतोहनहोतुहेमोरसहीको॥ ज्योईज्यो  
भीरुघरोघरोचौरीयेत्योंहांत्योंहोतुसवादिलुनीको  
धृष्टनाइकदोहा॥ मारोमनुहरितूनरीगास्योघरी  
मिठाइ॥ वाकोअतिअनवाहरोमुसिघाहरवि

श्रीटीका ॥ यह जाइ कधु वृहे जाइ के को वचन सर्वे में  
हयों गुन कथन नीकें संभवतु हेवा को या पद ते परे ह  
की प्रतीति मे ॥ कविता ॥ मारै तो फूल नि को हृदय  
सौं तें मंचु हरि जने क जनावे ॥ गारि ज्यो इ इ क हाव  
हयें मधु राई तो क ज मो क त पावे ॥ वारति मूरति को  
सतरा हट मेरे हीयें अति मोरु वटावे ॥ सील सुभा  
सुहा गिल के र सहं हसि हीं रिस हू हसि चावे ॥ ५०  
देहा ॥ लरि को लेव के मिस नु लंगर मो टि ग ज्राइ ॥  
गयो अचानक जंगुरी हाती छे लु छि वार ॥ टीका ॥  
यह जाइ कुधु वृहे जाइ के को कृत व ता जाइ का सर्व  
सौं कहति है ॥ कविता ॥ जो रस के मिस रो किर हे व  
गैल न हांडतु छे लु च वार ॥ भौन भरे मे क हा कहो  
सौं करे ज सुधा कल लाला राई ॥ मो टि ग ज्रा  
रे क हू की ली सने हस ज्यो अति की चतु राई ॥ हो ह  
वे के अठ म ज्राइ अचानक जंगुरी हाती छे वार ॥  
पति उ प्रपति हो ल कुं ज भ व न त जि भ व न को  
प्रे नंद कि सोर ॥ फूल ति क ली गुला व को च ट  
ट च हूं श्री ॥ टीका ॥ यह जाइ का सुकी या हू हा

को वचन नाइकसों ॥ कविज्ञा ॥ मुक्किलत कलीज  
 जातको कहु कभई भौरनुकी गुंजमंजु अवनसुनि  
 रीये ॥ फूलते गुलावुकलिकांनुको सुगंधपोनुचिटे  
 सवमदुमोदु उरधारीये ॥ कलधुनिकरतं अनिदध  
 वंदनि अनंतद्विलसतिविहारीये विहारीये ॥ अग  
 विभातको विलोकिये विहारीलालसुंदनि कुंजत  
 सदनसिधारीये ॥ ६५ ॥ अथरूपनिवेदननाइकादि  
 ॥ समएकसो ॥ रही लहकै लालहो लघिवहवाल  
 रूप ॥ कितो मिठासदई द्योइते सलौनेरूप ॥ कवि  
 ॥ जैसी जहांचा हीयति ते सोतहां वनी विधिविधिह  
 अद्विरके न्याइवनि आई है ॥ सुषदसुहई कापेवरने  
 ताईजातिरतिहनेताको तिलसमतानपाई है ॥ वा  
 नछविछाईतामै औरअधिकई दई दई यालुनाईमा  
 कितनी मिठाई है ॥ सुंदरकन्हाईहोतौ निरवि वि  
 काई बहुरूपकी निकाईमानौ देहधरि आई है ॥ ६६ ॥ नी  
 रकको रूपनिवेदननाइकासों होहा ॥ मोहिभरे  
 सोरीजिहें ऊफूकिजांकिइकवार ॥ रूपुरिजावनहा  
 रवहयेनेनारिजवार ॥ टीका ॥ ग्रहनाइकेकोरूप

निवेदनसुखीनारकासोंकहतिहेसवीकोप्रयोजनपी  
कराइवै॥कविता॥सुंदरजोकहीयेतोतिहंपुरमेर  
कलंददुलारोईहै॥यामेंकहाकहजावतिहेकछूप्रमै  
पंघनियारोईहै॥नैकजरोकाद्वै॥जंकिवला॥लै  
हिभरोसोतिहारोईहै॥रिजवारहेतौदगरोजहि  
रूपरिजावनहारोईहै॥५३॥गातवर्णनंदोहो॥है  
रोजालिखिरोजिहेंद्विहृद्वीलेलात॥सौनजुह  
सीहोतिदुतिमिलतमालतीमाल॥टीका॥यह  
इकाकेगातवर्णनसुखीनारकासोंकहतिहे॥कविता  
नीकीलसैवसभानललीनवजोवनजोतिजगी  
अंगहि॥ताहिविलोकिल्लामनमेरोतोभोइर  
तिरीजतरंगहि॥हेलद्वीलेलेषेंद्विरीजिकेक्ये  
नहियेंरसभावउमंगहि॥मालतीमालननंदुतिसै  
मिलिसौनजुहोकेप्रकाशतिरंगहि॥५४॥दोहा॥  
अंगनगजगमगतिदीपसिघासोदेह॥दीयोवटोये  
हरेहेवडोउजावोगेह॥टीका॥यहनारकाकोदेह  
कोद्विसुखीनारकासोंकहतिहे॥कविता॥दीपके  
सीलोइऐसीदूसरीनकोइरहीदुगनिसमोइमानो

ति है ॥ जटित जवाहर के भूषण ललित जं  
लित जगजोति सी जगति है ॥ दोहा ॥

! पद्य ॥

हे ॥ दीपति की दुति भरि भवन अखिल जग  
इवाहि को और उजकति है ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ र  
लोइन लगे कौन जूवति की जोगति ॥ जो प्रत

हटि गजो न्हं हं सो होति ॥ टीका ॥ य

गकी देह की दीपति सधी नाइ कसौ निवेद

तै है असु जो नाइ कु सधी सौ कहै तौ गुन क

संभवे ॥ कवित्त ॥ अजिद्ध विद्या गरी वि

व्रज नागरी के अंग अंग रूप की तरंग उमग

कल्प प्राण प्यारे वरन तन तन के पाहं जो व

तंगी जोगति जोगति सी जगति है ॥ को है असी अ

यसुर नर नाग पुरवा के अंगों जा की दुति द्रुग नि

गति है ॥ जाके लौं नैन की ललित परछाह पर स

द जुन्हाई परछाई सी लगति है ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ भई सुद

तन वसन मिलि वरनिस कै सुनि वैज ॥ अंग अंग प

गोदुरी अंगी अंग हरेन ॥ टीका ॥ यह नाइ का की



मौहनीलसति है ॥ जटितजवाहरके भूषनललितत्रं  
गत्रंगनिमित्तजगजोतिसीजगति है ॥ दीपकवडो  
हभयेंदेहको उजासुहोतुवडोई प्रकाशचक्रचौंधी  
सीलगति है ॥ दीपतिकी दृतिभरिभवनअधिलजा  
लरंधुनिकेवाहिकी औरउजकति है ॥ ५५ ॥ दोहा ॥  
वाहिलघैलोइनलगेकौनज्वलतिकीजोति ॥ जोकेत  
नकोछांहटिंगजोन्हछांहसीहोति ॥ टीका ॥ य  
हनाइकाकीदेहकोदीपतिसधीनाइकसौनिवेद  
नुकरति है असुजोनाइकुसधीसोंकहेतौगुनका  
धनुबहुसंभवे ॥ कवित्त ॥ अजिद्विआगरीवि  
लोकी वृजनागरीकेअंगअंगरूपकीतरंगउमग  
ति है ॥ अक्षयपांराप्यारेवरनतनवनकेपाहंजोव  
कीजोगीजोतिजोतिसीजगति है ॥ कोहैअसीअ  
रतियसुरनरनागपुरवाकेअंगोंजाकीदृतिद्वगनि  
षगति है ॥ जाकेलौनैतनकीललितपरछांहपरस  
रदजुन्हाईपरछांहसीलगति है ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ भईसुद्ध  
वितनवसनमित्तवरनिसकेसुनिवैल ॥ अंगअप  
आंगीदुरीआंगीअंगदुरेन ॥ टीका ॥ यहनाइकाकी



सोभासधीनाइकसौनिवेदनुकरतिहे ॥ कवित्त ॥  
हरिकंचनवेल्कीसीचालकीदेहकीदीपतिकोबरने  
कविहे ॥ अरुताहिमिलीवहुकंचुकीकेसुअनूपमअ  
परहोफविहे ॥ कछुजातिनहीकहीअंगप्रभाअरुवी  
रुमिलेसुभईद्विहे ॥ वहआंगिगईद्विआंगकीअ  
पमैआंगीमैआंगुकहादविहे ॥ ६७ ॥ दोहा ॥ सौनजु  
हीसोजगमगतिअंगअंगजोवनजोति ॥ सुरंगक  
सूंभीचूंकंचुकीदुरंगदेहदुतिहोति ॥ टीका ॥ यह  
नाइकाकेअंगकीसोभासधीनाइकसौवरननुक  
रतिहे ॥ कवित्त ॥ सुवरनवेल्कीकीललितद्विजो  
वनकीजोतिमिलिअतिसरसातिहे ॥ चुहचुहीचून  
रीमैगहगहोगातकीगुराईनदुरतिरंगरसवरसाति  
हे ॥ रूपकीतरंगअंगअंगतेंउमंगिसोभाहोतिवहुरं  
गलधिसौतिअरसातिहैं ॥ कंचुकीकसूंभीप्यारीप  
हैंसुरंगतअमिलिअंगरंगसौदुरंगदरसातिहैं ॥  
दोहा ॥ कहिलहिकोंनसकेदुरीसौनजाइमैजाइ ॥  
तनकीसहजसुवासवनदेतीजोनवताइ ॥ टीका ॥  
यहनाइकाकेतनकीदीपतिअरुसहजसुवासुता

सधी सधी सों कहै है ॥ कवि त ॥ घेलत चोर मिहू च  
 नी घेलुदुरी तिय सों न चमे लौ मै जाइ कै ॥ रंग मै रंगुर  
 द्यो मिलि कै सुकहं विधि रंचन होति लघाइ कै ॥ भौरनु  
 की अ वली चहुं अर सुगंध के लो भर हो मझ राइ कै ॥ को  
 लहतो उहि कुंज मे वाहि जौ देती न अंगु सुवा सुवता  
 इ कै ॥ दोहा ॥ देषी सोन जुही फिरत सों न जुही ॥ स अं  
 ग ॥ दुतिल पटनु पट सेत हं करत वबौ टोरंग ॥ दीका  
 यह नाइ का के अंग की गुराई सधी नाइ क सों निवे हनु  
 करति है ॥ कवि त ॥ सहज सिगार दुतिल सति अ पा  
 र लघि मन हूँ कै मन भाउ उ पे जे अ न ग कै ॥ अति सु  
 कुमारी यो तेल चक तुलां कुनारु सहिन सकतु विवि  
 उरज उतंग कै ॥ रूप की र शाल तु म देषी सोन वर  
 लला लकहा कहौ वान कवन कवा के अंग कै ॥ चा  
 सतन सुष पट पहिरत धन वाहित उदुति मिलि  
 होतु के सरी यारंग कै ॥ ७॥ दोहा ॥ दीठिन परतिस  
 मान दुति कनक कनकु सौगात ॥ भू घन कर कर क  
 सलगत परसि पिछौ नै जात ॥ दीका ॥ यह नाइ का  
 अंग की दीपति नाइ क सों कहति है नाइ क हू सधी

सों कहें तो संभवे ॥ कवि ॥ आजु लाल वज्रवाल  
 कमे विलोको जाकी ललित लुनाई ल  
 हात है ॥ साजति सिंगार रचि पचिकें प्रवीरा आली  
 निहंके चेत सव हेरत हिरात है ॥ करत विचार पे न हो  
 निरधार कछुते सोई कन कुते सो कन कके गाते है  
 वरे करे देके वितां न पहिंचा नीयत कर परसे ते आ  
 धन जां नै जाते है ॥ ७१ ॥ दोहा ॥ करतु मलिन आर्च  
 दुविहि हरतु जु सहज विकासु ॥ अंगरा गु अंग निल  
 ज्यो त्यों आरसी उसा सु ॥ टीका ॥ यह नाइका के अंग  
 के सरिलगी है नाइका के अंत नो हं अंतराय सुहात न  
 ही भावत यह जां निस घी नाइका सों कहति है नाइका  
 नाइका सों कहें तो संभवे ॥ कवि ॥ मैनकी प्रौहनी  
 सील विन्याइ ही मोहनरी फिर हेर सपांगे ॥ जो वन  
 पसुहाग सनी लखिसो तिनुके उरदाहने दांगे ॥ के स  
 रि लागे तें अंगल घात ज्यो आरसी दोसै उसा सके  
 लागे ॥ उजरे लगे न और कछु न वना गरितेरी गु  
 राई के आंगे ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ पहिरत भूषण कनक के  
 कहि आवतुं शिहेत ॥ दरपरा के से मार चादे हदि

घाई देत ॥ टीका ॥ यह सधीनाइकाके जंगकी गुरा  
ई कहति है जो भूषननुके जंतरायनजा निनाइ क  
रुनाइकासों कहतौ वनतु है ॥ कवि ज्ञा ॥ हितकीते  
वातहितहीसों कहि आवति है तातेतौसों कति  
छवीलीपुंमपागिकें ॥ तेरीसमिताकें रतिरंभा  
उरवसौ है नतेरे अनुरागप्यारौरह्यो अनुरागि  
कें ॥ लौं लौं तेरीतनुतामैसौनेके गैनेतूकतपहर  
तिरनेअवहींतैत्यागिकें ॥ नीकेलीकेतनपरफोके  
फोकेलागतहै मोरचारहैहैमानो मुकरमैलाइग  
कें ॥ ७३ ॥ दोहा ॥ कंचनतनघनवररावररह्यो रंग  
मिलिरंग ॥ जानीजातिसुवासुहीकेसरिलाई जंग ॥  
टीका ॥ यहनाइकाके जंगकी गुराई देसिसधीनाइ  
कसों कहति है अथवाले चलिबेकी उल्हाइतजंग  
कोलिवारनकरति है अंतराइनुजा निनाइ कुनाइ  
कासों कहतु है ॥ कवि ज्ञा ॥ जो कछुतेतनमैतरुनी  
सुरतीनलेहरतिरूपुनिकाई ॥ तापदजोवनजोति  
जगैकविकोवरनेछुविकीसरसाई ॥ रंगमैरंगसमो

इगयौतवकेवनसेतनमेघसिलाई। जंगधसुगंधति  
कीनलेहेसरिकेसरिवासुहीतिलधिपाई ७५॥ दे  
हा ॥ कैंवापूरमनिमेरहीमिलितनदुतिमुकतालि  
दिनदिनधरोविजहनेरहतिद्वारतिनुचालि ॥  
टीका ॥ जंगदीपैकीनिकाईसवीनाइकसौकहति  
समीहूसौंकोहेतौहोइ ॥ कविना ॥ कुंदनसेगातजल  
तसेनयजजाकीदीपतिजुहाईसीभवनमाजवेर  
ही ॥ कंचनकीचौकीपरवेठिवरवालसाजेसकल  
सिंजारजोतिजगमगकेरही ॥ मोतिनिकीमालस  
नीनेपरहाईसुतोतबदुतिमिलितकपूरकीसीकैर  
हे ॥ एकचलोचतुरजकीसीचकिंदूहीएककरिवे  
कोनैहैथैतिनूकाहाथलेरही ॥ ७५ ॥ देहा ॥ सोही  
धोतीसेतमैकनकवरतनवाल ॥ सारद्वारिद्वी  
जुरीभारदकीजतिलाल ॥ टीका ॥ यहनाइकाकीप  
राईसमीनाइकसौंकहति ॥ कविना ॥ कंचनवरन  
तजवनकअनूपमालोरूपकीअवधिमनमथकी  
रसालेहे ॥ एकधोतीसेतमैअनेकद्विदेतिवाल  
मानेहंसमंडलीमेंचंपककीमालेहे ॥ सरद्वारनु

ही

मधुदाभिनि लसति किधौं <sup>ही</sup> रसिंधुमाज वडवा  
 लकी जाल है। सुरसरि से तम सुधानिधि की कल  
 किधौं संकर के जं कल से पारवती वा ल है ॥ ७५ ॥ दो  
 ॥ कहा कुसम को को मुदी कित क आर सो जैति ॥  
 जाकी उजरार्ई लवें आधि रूजरी होति ॥ टीका ॥ प्र  
 हनाइ का की उजरार्ई सधी नाइ क सों कहति है नाइ  
 कुहू कहतौ संभवै ॥ कवि ॥ वालवनी वरवा नि  
 कवै सदर्ई विधितै सीयै सुंदर तार्ई ॥ फूलन की दुति  
 रूलन होति अतू ल्य प्रभा अंग अंग निहाई ॥ चैतकी  
 चांदनी चारु कितौ अरु आर सो हूइती जैति नपा  
 ई ॥ न्याइ हौं उजरारी होति है आधि निहारत वातन  
 की उजरार्ई ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ वरन वासु सुकुमार ल  
 तव विधिर हो समाइ ॥ पधुरी लगी गुलाब की गाते  
 न जानी जाइ ॥ टीका ॥ पहनाइ का की सहज सुगंध  
 रूजो वन की अरु नाई सुकुमार ता सधी नाइ क  
 निवेदनु करति है जो नाइ क की सेज की पांधुरी  
 नि सधी नाइ का सों कहतौ लहि ता होइ ॥ कवि  
 ॥ वीनति फूल भरे उर फूल प्रभा त समें सुख से जतै

जागी ॥ अथो तहं मलमौहलप्यारो प्रभाकं हिलयिरो  
जिरहो अनुरागी ॥ वैसोई रंगसुगंधहूवेसी येवैसिये  
कोमलतारसपागी ॥ कौनहूं भातिसौं जानिपरीनपु  
लावकीपांघुरीगतसौं लागी ॥ ७ ॥ चोहो ॥ रंचन  
लधियतपहिरो योकंचनसेतनवाल ॥ कुंभिलानी  
जानीपरतिउरचंपकीमाला ॥ टीका ॥ यहनाइकोके  
अंगकीगुराईसुसौहेसुचंपकीमालजानीनाहीजाति  
सधीनाइकसौंकरतिहे ॥ कविता ॥ लाईवुवनाईपुवी  
नअलीनचंपकमालसुगंधभरीहे ॥ लेअपनेकर  
मैनवनागरिकथ्यकेहेउरमेंपहरीहे ॥ कंचनसेतन  
कीछविमांऊगईमिलिरंचनहीउघरीहे ॥ चाहिरही  
सजनीचकिसीकुंभिलाइगईतवजानिपरीहे ७ ॥  
होहा ॥ लिषनेवेठिजाकीसवीगाहिगहिगरवगर  
र ॥ भयेनकेतेजगतकेचतुरचितेरेकर ॥ टीका ॥ य  
हनाइकाकोनिकाईसधीनाइकसौंकरतिहेअरु  
गटकरतिहेकिवाहिदेधिसात्विकभावहोतुहेजोवै  
संधिकहोयेतोरुसभवेयातेंचितेरेरुपेकेवाहंलिषत  
वजतुनाहीं ॥ कविता ॥ रूपकीअवधिअसौंओर

वनाईविधिजाँलिविवेकौंभालदेवनमनाइवौ।  
 ताकीसोभालिविवेकौंवेठतगरचुकारिअंजत  
 होमनहोतुघूमिघननाइवौ॥असीभांतिआइचा  
 इकरकहवाइगयेचतुरचितेरेतिन्हेकहालोग  
 नाइवौ॥कह्यप्राणाप्यारेबहचिविनीविचित्रग  
 तिकाहूपैनवन्पात्रकेचित्रकौवनाइवौ॥८॥  
 दोहा॥अंगअंगह्विकौलपटउपटतिजातिअ  
 देह॥घरीपातरीउतउल्लेगैभरीसीदेह॥टीका  
 यहनाइकाकोनाजुकताअरुहीपतिसखीनाइ  
 सौंकहतिहे॥कवित्र॥कंचनकंजैकलानिधि  
 कंचुकीभाइसुभाइहरीसी॥तानवनागरिकी  
 निसिद्योसरहेदुतिनेननुमांऊधरीसी॥अंग  
 निअंगउमंगैअह्वरुपभाकीतरंगसरंगघरीसी॥  
 पातरीवाकीअंगेठितअह्वविपुंजनुत्वागतिहे  
 हभरीसी॥८॥दोहा॥अंगअंगप्रतिविंवरिदर  
 पनसेसवगात॥दुहरेतिहरेचौहरेभूषनजानै  
 जात॥टीका॥यहनाइकाकेअंगनुकीउजराई  
 सखीनाइकसौंकहसखीसौंनाइकुनाइकासौं



कहे सद्यो सों कहे सो सब भांति संभवतु हे जौ ना  
 इका सद्यो सों कहे तौ रूप गरवता होइ ॥ कवि  
 वदतु विलोकि ससिसमता लहे न क्यौं लोचन  
 निहोदें जल जात हल जात हे ॥ नागरि न वली न  
 सिद्ध लों निकाई भरी वां निकु विचित्र लघिले  
 चन सिरात हे ॥ कक्ष पांगाप्यारे अति उज्ज्वल  
 सत वाके युकर से गत महा सोभा सरसात हे ॥  
 गपति विं वपरि के उठौर ये कये कये कभू घन  
 के कजा नै जात हे ॥ २५ ॥ दोहा ॥ वालद्ध वीलीति  
 यनु मै वैठी आपु छि पाइ ॥ अर गट हों पां नू ससी पर  
 गट होति लघाइ ॥ टीका ॥ यह नाइ का के अंग की दी  
 पति सद्यो नाइ कसों निवेदनु करति हे नाइ कुरु करे  
 लो संभवे ॥ कविज्ञा लों नतन वारी वन वारी मिनि  
 हारी प्यारी मुनिर हो वाकी उजियारी मेरे मन मै क  
 हे कवि कक्ष जैसी ललित लुनाई लघें मेरे जान  
 दामिनी दुरी हे जाइ घन मे ॥ छवि सों छ वीली मु  
 नारि नुकी सकु चतें वैठी आपु अंग निदुरा इति  
 गन मै ॥ अंज नै अरु अर गट होति पर गट दीप क

मैं जोति जगमगिर ही अलिनी भवने मैं ॥ आदोह  
मान हं विधित न अज्ञाद्विस्वहराधिवेकाज ॥ दु  
गगणों हन कौ की ये भूषण पाइं दज ॥ टीका ॥ घ  
हनाइ काकेतन की द्विसषी नाइ कसों कहति  
हे अरु सषी कौ वचन सषी सों नाइ कके वचन न  
इकाइ सों होतु है ॥ कविता ॥ तुहीं तीनों लोक की  
तुनाई लूटि लाई देवें रूप की निकारि नंदलाल ल  
लचायें हैं ॥ तेरे दुति आगें आली कंचन के गहने ये  
सषी के लागें जैसे गतें द्विच्छायें हैं ॥ टीठिके परस  
हीते भेले होत अंग असी उज्जलता सहित विरंचि  
ने वनायें हैं ॥ तन की निकारि स्वहराधिवेके हेतु ये  
तो दगलिकों मानों पगपों हना ॥ द्विच्छायें हैं ॥  
दोहा ॥ पत्रा हीं तिथि पाई यति वा घर के चहं पासा ॥ नि  
न प्रति पून्यों ई रहति आनन ओप उजासा ॥ टीका  
प्रहनाइ काके मुख कौ प्रकाश सषी नाइ कसों निवे  
दनु करति हे नाइ कुरु सषी सों कहें तो सुमिर लज  
लियें ॥ कविता ॥ येते मान आनन की ओप कौ उजा  
सुरै हें गेह आसुपा सुअंति चांदनी विहारि कैं ॥ ति

धिनिरधारकरिवेकौकेतेसुधरगनकविवोलिव  
ऊवेऊरहतविचारिकै॥पचाधोलिदेखिनांमुति  
धिकोंवतावैफिरिपूज्योँकहतुवहकोमुदिनिह  
रिकै॥कवहंकपचादेधैकवहंवदनप्रभाकहितस  
कुचतुयेकैवातनिरधारिकै॥८५॥दोहा॥लीनेउं  
साहससहसकोनेजतनहजार॥लोइनलौंइन  
सिंधुतनपैरिजपावतपार॥टीका॥ग्रहनाइकाके  
ग्रंगकोसुंदरतादेधिकैनाइकेनेत्रयकितकेरहा  
हंसुनाइकुसवीसोंकहेसवीनाइकसोंकहेसवीस  
वीसोंकहे॥कविता॥जातनकीद्विकोंकविदेव  
तकेतेकितोंउपमाबुवतावत॥तातनकीद्विविदे  
धिवेकौनवनैनलगेनइतेउतधावत॥साहसको  
रिसयानघनेवहभांतिअनेकउपाउवनावत॥से  
भाकेसागरमाजपरेअवपैरतेकैसैंहंपारनया  
वत॥८५॥दोहा॥सहजसंतुपचतेरियापहिरतअ  
तिद्विविहोति॥जद्विचारकेदीपलौंजगमगातितनजोति  
टीका॥गानाइकाकेतनकीदीपतिसवीनाइकसोंकहेना  
इकहसवीसोंकहेतोपूर्वानुराजुजांनियैजौनाइकासवीसों  
कहेतौसपगरवतादोश॥कविता॥कनकवरनतनवन

कविचित्रवालवालमकेउरबीजजानदकेवोतिहे॥वाके  
जोगेओरनुकेगतकीनिकाईलोगेमनिकेनिकटधरैलाग  
तिज्येपोतिहे॥जवपरितपचतेरियाकीसारीतवतन  
कीयेसहजजगमगतिजेतिहे॥कस्यपुंराण्योरेद्विद्व  
जतिविसालजलचादरिकेदीपतिज्येपरगतजेतिहे॥७  
स्वप्नदरसन्ना॥दोहा॥देवोंजागितोवैसियेसां  
रलगीकपाट॥कितेकेआवतजातभजिकोजानैकिहंवा  
२॥टीका॥प्रहस्वप्नदरसनुनाइकासघीसोंकहति  
हे॥कविता॥रंचकनीदपरैजवहींतवहींटिगजानि  
दिकैवगिकें॥हेरिहंसैरसकौंवरसैवतराइप्रहारिससोंप  
गिकें॥जागैतौडीठिपरैनकहुअरुत्तैंहोंकपाटरहेल  
गिकें॥यहजानैकोआवतुधोंकितेकेपुनिजातुकवैकित  
कैभगिकें॥२८॥दोहा॥सोवतसपुनेस्यामधनहिलिभि  
लिरहतवियोग॥तवहींटरिकितहुंगईनीदोनीदनजे  
ग॥टीका॥यहस्वप्नदरसनुनाइकासघीसोंकह  
तिहेनीदकीसिंदाकरतिहे॥कविता॥आलीविद्वे  
हुभयौतवतैद्वतिप्रवृहभान्तिवियोगतईरी॥आजूल  
लामनमोहनसौसपुनेभैअचानकभैरभईरी॥भैसुवि

यावहराइवेकौं हिलिकें नहि यसें रसके लिठईं ॥ नौदहूं  
 जीदविलाइ करैत वहीं कहूं भाजि गई सुगईं ॥ १६ ॥ साहू  
 तदर्शन जाइवा जाइक दो दो ॥ लट किलट किल  
 ट कतु चलतु डटतु मुकट की द्वाहा ॥ चट कुन स्यो नटु मिलि  
 गयो अटक भटक वट मांहा ॥ टीका ॥ यह सा ज्ञात दरसन  
 जैसी छवि सौं देव्यो हे नाइ कुते सैं ही नाइ का सवी सौं कहति  
 हे पूर्वा नुराग ॥ कवित्त ॥ लट किलट किचलि निरवा तुवा  
 रवार फेरि फेरि ग्रीं वांछं ह मंजुल मुकट की ॥ केसरि की वी  
 रि पारि कलित रुचिर भाल कुंडिल ललित सौं ह वनमाल  
 टट की ॥ के गई विपन मग अटक भैर तव हौं तैं नैन निमै  
 वुभी सो भामो हलवान टकी ॥ भूली सुधि घट की रीने क  
 लाज सट की री अट की हिये मै फहरां निपीरे पटकी ॥ १७ ॥  
 सा ज्ञां तदर्शन जाइक वौं नाइका वौं ॥ दोहा तु  
 नरी सगंभ सतार नन मुख ससि की उनहारि ॥ नेह दवा  
 तु नोद लौं निरधिनिसा सी नारि ॥ टीका ॥ यह सा ज्ञात  
 दरसन जैसै नाइका देव्यो हे तै सैं सवी हे तै सैं हीं नाइ कु  
 वी सौं कहतु हे ॥ कवित्त ॥ उन्नत पीन उरो जनु को क  
 लुकी छवि माह सु पावतु हे ॥ मुख सोह तु सैं मुजु नै या  
 सी दुति दीपको मोडु बटा वतु हे ॥ कविक रमविराजति च

नरीस्योमसतारकव्योमुलघावतुहे॥ वरजाप्रिनीसी  
नवजागरिदेघतनीरज्योनेरदवावतुहे॥ १॥ दोहा  
दृष्टानरागुनाइकाको॥ सनिकज्जलचषजवल  
गनुउपज्योसुदिनसनेहु॥ व्योन्नपतिद्वेभोगवैलहि  
सुदेसुसवुदेहु॥ टीका॥ यहदृष्टानुरागुहेनाइकाकेने  
त्रञ्जनसहितदेविनाइकाकेञ्चनुरागुउपज्योसुसवी-  
नारककेञ्चनुरागउपज्योदेविनाइकासैकहतिहेनाइ  
कापरकियानाइकुहसवीसैकहेतोसभवे॥ कवित्तादे  
वीयेकवनिताविचित्रवरवांनिकसैजाकीजोतिहोसैज  
गिमगिरद्वोगेहेहे॥ विहसिविहसिमुहवोलतिसरसवा  
जीवरसतुमानोत्रमीवृंदनुकोमेहेहे॥ कहैकविकसव्यो  
नभूपतिद्वेभोगकरैरजधानीसकलसुदेसुपाइदेहेहे॥ ने  
नमीनलगनपैञ्चजनुलसतुसनिजैसैसुभजोगसभैउ  
पज्योसुनेहेहे॥ २॥ दृष्टानुरागुनाइकाको॥ दोहा  
मोहसैतजिमोहुदृगचलेलागिउहिगेला॥ द्विनकुछाइ  
द्विगुरदरीद्वलेद्वीलेद्वेला॥ टीका॥ यहदृष्टानुरा  
गुहेनाइकाकेदेविनाइकाकेञ्चनुरागुउपज्योहेसुनाइ  
कासवीसैकहतिहेनाइकापरकियाउटा॥ कवित्ता॥

स्य

रौतें मोहनी को मंत्रु डारि दानी उन रूप को मिठाई ता-  
रौतें कल मले हैं ॥ ज्यों ज्यों हूँ हुकरि रोकि रावी जोर अंच  
ल की त्यों त्यों बलु करि उतही कौ लहे हैं ॥ मोह सों जुहुतौ  
नातौ पलक मैं करि हांतो द्यो डि सवतांतौ वा को गेल ल  
गि चले हैं ॥ नंद को कुमार आली वी सविसेठ गुहे रो देवत  
हैं देवि मेरे दो उने न द्ये लें हैं ॥ ३॥ देह ॥ चित वनि मोर  
भाइ की गोरे मुह मुस क्या नि ॥ लग निलगी आली गोरे वि  
त धटक ति नित आनि ॥ टीका ॥ यह चाइ का की चेष्टाना  
इकु सवी सों कहतु है पूर्वी नुरा गुहे है अरु दस अत्रवस्था के  
भेद में सुमिरन जांनिये ॥ कविता ॥ भूलति न क्यों हूँ वृषभ  
जत नया की वांनि वह अंगरांनि अंगुरी नि चटकाइ के ॥ व  
ह गोरे वटारो वदन की मुसिकांनि वह चह चही चित वनि  
मोरे भाइ के ॥ धूमरु करनिकर कमलु उसारि वह लटकनि  
मिलनि सजनी सों लपटाइ के ॥ ३ ॥ सी भांति जवतें मैं निर  
धी होत वही तें पलपल माज घटक ति चित आइ के ॥ ४ ॥  
रोहा ॥ इती भी रहूँ मेदि के कित हूँ देइत आइ ॥ करे डी ठि  
जुरि डी ठि सों सब की डी ठि वचाइ ॥ टीका ॥ यह चाइ का के  
चिते वे की चतुराई सधी सधी सों कहै तो होइ नाइ का पर कि  
या ॥ कविता ॥ सों लें से गत सुहाई सों वे स सजेह सजीर स

कैंवरसावे ॥ चाहेकाइनुकीचतुराईकहांलेंकहीक  
 हतैनहीआवे ॥ भीरभईअतिभारीतउमनभायोकरेको  
 उभेदुनपावे ॥ घातगौंहुंजुरिडीठिसैंडोठिफिरेसबकीबह  
 डीठिवचावे ॥ ५॥ दोहा ॥ गडीकुटमकीभीरमेंरहैवेठि  
 देपीठि ॥ तअजेकपरिजातिइतसलजहंसैंहींटीठि ॥  
 टीका ॥ यहनाइकाकेसलेस्कीलिकाईअरुचितेवेकी  
 चतुराईनाइकुकरतुहेनाइकापरकिया ॥ कविता ॥ प्य  
 रोपवीनसनेहसनीनघतेसिषलैंसुषकीनिधितैंहीं ॥  
 कैसैंअंमोउरतैनटैरेजुचुभीचितचाहनिनेहलिचों  
 हीं ॥ वेठीवधूगुरनारिनुमैजअनारिनवाइधरासकु  
 चोंहीं ॥ लालपगीपलयेकतअपरिजातिइतैवहडीठि  
 सैंहीं ॥ ५॥ दोहा ॥ नहिनचाइचितवतिद्वगनिनहि  
 वोलतिमुसिकाइ ॥ ज्योंज्योंरुषरुषोकरेत्योंत्योंचितुचि  
 कनाइ ॥ टीका ॥ यहनाइकाकीचेष्टानाइकुसवीसैंक  
 हतुहेकिवहरयाईमेरेचितकौचिकनावतिहै ॥ कवि  
 ता ॥ जेरतिनलोचननचाइबहचाइभेरमदुमुसिक  
 निकैलभाऊदरसातुहे ॥ वोलतिनकहंमनमोहलम  
 धुरवैनमोरतिनभुकुटामरोरतिनगातुहे ॥ कहेकवि  
 कुम्हवाकीगरवीलीवांनिव



वज्रं न्योजातु है ॥ ज्यो ही त्यों रहति प्यारी राधा रुखरुषे  
करि त्यों ही त्यों वरोई धरो चितु चिकना तु है ॥ ७ ॥  
चितई ललचौ है च वनु डटि घूंघट पर माह ॥ छल सौ  
चनी छुवाइ कै छिन कु छवी लो छाह ॥ टीका ॥ यह ना  
इका पर क्रिया हे चेष्टा जू करि गई सुनाइ कू सवी सौं कह  
तु है ॥ कविता ॥ पूरन सुधा निधि सौ वदनु दिवाइ क  
घूंघट की जोर कौं कक कल जाइ कै ॥ घूंघट के पट मै कै  
निरखी निसंक चित व निल लचौ हों चोहि ची कनी ज  
ताइ कै ॥ कहै कवि कसम दुमुल कि अही की जोर च  
ली काह छल सौ छवी लो छाह ॥ छुवाइ कै ॥ हाहा कहि  
कोही जाहिये छवि सौ ही वह मोही तै नटर तिर ही ज  
री जकाइ कै ॥ टीका ॥ दोहा ॥ ववली नाभि दिवाइ कै रि सि  
रुट कि सच्चि समाहि ॥ गली जली की जोर दै चली  
भली विधि चाहि ॥ टीका ॥ यह नाइ का पर क्रिया की जु  
चेष्टा देवी हे सुनाइ कू सवी सौं कह तु है ॥ कविता ॥ अ  
जु मै अचानक विले की वज्र बाल ये क वानी दुतिर ही मे  
रे उर मै विहारि कै ॥ दंमिनी लै है न चारु चातुरी कलाइ  
तोक कांम हंकी कांमिनी करो रि डारों वारि कै ॥ विवली  
उद्यारि कै दिवाइ कै गभीर नाभि घूंघट निहुटि की नो सक

चिसम्हारिकैं॥ भंतिभलीसां करी गली भेगजगमिनी चली  
 अलीकीओटजेंगईयेंनिहारिकैं॥ १६॥ दोहा॥ गंडे  
 कुडिगतिसीचलिठुकिचितईचलीनिहारि॥ लि  
 येंजातिचितचोरटीयेंहोरटीकारि॥ टीका॥ यहल  
 इकाकीचेससवीनाइकुकरतुहै॥ कवित्त॥ मनम  
 यवांमसीचपलअनियारचषअधरअरुनदुतिअतिस  
 रसातिहै॥ सौंनैसेसुदेसतनलौंनैसेउरोजवनेकौंन  
 णिनप्रतिलषिवेकौंललचातिहै॥ उगयेकडिगतिसी  
 चलीफिरिठाटीभईवहुरिविलोकिचलीमुरिमुसिका  
 तिहै॥ जेवनमरोरभरीगोरटीगयंदगौंनकौंनयहचो  
 रटीघुरायेंचितुजातिहै॥ १७॥ दोहा॥ भौंहउचैअंच  
 रुउलटिमोरमोरिमुहमेरि॥ नीठिनीठिभीतरगईड  
 ठिडीठिसौंजोरि॥ टीका॥ यहनाइकाजुक्रियादेवीहैसु  
 नाइकेचितभैवसौहैसुवारवारसवीसोकहतुहैनाइ  
 कापरक्रिया॥ कवित्त॥ रूपकीअपारराधाठाटोनिज  
 ग्रहहारजाकीद्विपररतिवारियेकरोरिकैं॥ मोहिदेव  
 रिहैं॥ मोरिनीरिमुहुंजमुहांनीअंगिरानीपुनि

१७७  
 रिहैं॥ मोरिनीरिमुहुंजमुहांनीअंगिरानीपुनि

आलसललितनैववदरारेदोरिकै॥नीठिनीठिगईभौ  
नभीतरसरोजमुषीडीठिसौमिलाइडीठिनीकैनेहजेरि  
कै॥१०१॥दोह॥अंचतिसौचितवनिचितेभईआंउजल  
साइ॥फिरिउऊकनिकोंमृगनयनिद्रुगलिलगनियं  
लाइ॥टीका॥यहनाइकाकीचितवनिदेखिलाइक  
केचितमैवसीहसुजाइकुसवीसौकरतुहेकैवेसेईफि  
रिचितवैयहअमिलाषेहे॥कविज्ञ॥धिरकीउघारिज्ज  
जागरिनिहारीइतठोडोवनवारीमनमथद्विदइकै॥  
अंचतिसौचितवनिभौहनिमरोरिकरिलगनिलगाइचि  
तुलेगईचुराइकै॥कहैकविकअइंदवधुकोंलविजंदला  
वरहोठगकीसीमूरिषाइकै॥उतचितवेतुसवकाजविस  
राइकैसुफिरिअवलाकिवेकीअसउरलाइकै॥१०२॥दो  
ह॥बैठाउउमदाहउतजलनवुजवउवागि॥जाहीसौ  
लाग्योहियौताहीकेउरलागि॥टीका॥यहनाइककेअ  
लिंगनुकरतिहेसुसवीपुगटकहतिहेनाइकासौ॥क  
विज्ञ॥आंगमरोरिभुजाभरिभैटतिमैसौकहाइठला  
तिहेठाली॥पांणीकीआगिसिराठिजुपांणीसौरीतिअ  
ल्लिकवतैयहचाली॥घाहउतेउमदाहभलीविधिठोड  
हेदेखिवेहेवनमली॥जाहीसौतेरोलाग्योहियकोहितु  
ताकेहियैकिनिलागतिआली॥१०३॥दोह॥देखोअ  
नदेखोकिनैअंगअंगसवैदिषाइ॥बैठतिसौतनेमस

कुचिवैठीचित्तैलजाइ॥टीका॥ग्रहनाइकापरकि  
 याकौचित्तैकैलाजकरिवोदेघोसुनाइकुसवीसौक  
 हतुहै॥कविज्ञा॥सोहतिसरूपसनीवैठीहीनै॥  
 द्वीलीराधाहैंहंतहानिकस्योअचांनकहींआइकौ॥  
 मेरीओरदेघिउनिदेघोअनदेघोकरिमुसकांनीअ  
 गअंगसकलदिघाइकौ॥पैठतिसीतनमैसकुचिम  
 नअचतिसीचितवनिचाहिवैठीसिमटिलजाइ  
 कैं॥बहमुसकांनिचितवनिसकुचनिक्योहंटरति  
 नरहीमेरेहियैमडराइकैं॥१०४॥दोहा॥चिलकचि  
 कनईचटकसौलफ्रतिसटकलौंआइ॥नारिसलै  
 नोसांवरीनागिलिलौंडसिजाइ॥टीका॥ग्रहना  
 इकाकोसांवरीद्विवेदिनाइकुआसकिभयोसुस  
 वीसौकहतुहै॥कविज्ञा॥चिलकतिचारुचिकन  
 ईकीचटकभरीचलतिलफ्रतिजेसैलगलचकति  
 है॥सांवलीसलौनीअतिलौनीअजौंहैंनीवेससो  
 भासनीसोसमंसहितलसतिहै॥कुटिलसुभाइचि  
 तवनिप्रेमविषभरीनागिलिज्योइंहिवजनागरि  
 वसतिहै॥मनकौंडसतिअरुतनकौलहरिआवेलो  
 गतुनजंमंत्रअरभुतगतिहै॥१०५॥अथनेलैंगनि  
 दोहा॥मेहो जान्योलोइनलुजुरतवाटिहैजाति॥

नि  
 ल

को हो जा न तु डी ठि कौं डी ठि किरि किटी होति ॥ टीका ॥ य  
ह नाइ का अने ने ननु की आसक्ति सखी सौं कहति है अ  
नु यह कहति है के जव तैं आ वि दे वी तव तैं औ रु क दू सू  
जतु नां हीं ॥ कवित्त ॥ जादि ना तैं आ ली तैं कही कि मन  
मौ ह न के लोचन सलौ नै दे वै अति हितु वा टि है ॥ ता  
दि ना तैं मै हं जां नी चारिय ह नै न भये जो ति को प्रकाश  
क दू अ धि का ई चा टि है ॥ जो रत हीं नै न वि घात न मै व  
ग रि ग ई म द न हु ता स नु व र तु जा टि जा टि है ॥ कौं नु  
य ह जां न तु हो डी ठि ही कौं डी ठि पी र हो ति किरि किटी के  
उ स क तु न का टि है ॥ १०६ ॥ दो हा ॥ त्यों त्यों प्या से ई र  
ह त ज्यों ज्यों पिय त अ धार ॥ सु गु न स लौ नै रू प को  
जु न च ध न धा वु जा इ ॥ टीका ॥ यह नाइ का के ने न  
ल गे है सु स खी सौं कहति है ॥ कवित्त ॥ हरि मुख ध  
र त्यों च को र कै र ह त जां नि लो च न क म ल ग ति नौ  
र की ग ह त है ॥ दे ष त ही दे ष त र ह ति रि ष सा ध ली गी  
हो त अ न मे ष यो वि स ष उ म ह त है ॥ दो नो क दू क  
अ प्रा न प्यारे को स लौ नो रू प ता तैं न वृ ज ति वै षा  
क ल न ल र त है ॥ न प त न हो त क्यौं हं मा ई री न य न  
मे रे पिय त अ धार त्यों त्यों प्या से ई र ह त है ॥ १०७ ॥ दो

हा॥ अलिइ नलौइ नसरनुको खरो विषमसंघास॥  
 लगे लगये ये कसे होउनु करत सुमास॥ टीका॥  
 यहलंइको अपनैने वनुकी अवस्था सघीसों कहत है वा  
 इका कहै वाना इकु को है॥ कवित्त॥ सरुजाके लगे  
 ताहि सुधिन रहति कच्छ जोहनतुताके उररंचक वि  
 ध्यान है॥ तिनतें अधिक कुसमायुधके धपांचो वान  
 जिनके लगेते तेरे मुनिनुके ध्यान है॥ कथापाराया  
 रेकी दुहाई जिय जानिअलीसवहीतें विषमविसेषने  
 नवान है॥ दुहुनि विकल करै जतलगे जन्मान दुहु  
 भातिगे हुन लगंअं हुं समान है॥ १०८॥ दोहा॥ इगनु  
 लगत वेधत हियहि विकल करत अंगअनायेतेरे  
 सवते विषमई क्षराती छुनवान॥ टीका॥ यहल  
 इकाकेने वदेसिनाइकाको विकलता भई सुसघी  
 नाइकासों कहति है अथ वाना इकुनाइकासों कहत  
 है॥ कवित्त॥ भोंहकमान विनाजिहितें दुरिट्टे  
 चलें दुहुं औरअनेरे॥ जेनुअं निअचूकलगेहि  
 यभेदत क्योंं फिरे नहि फेरे॥ औरसवे अंगव्याकुल  
 सरसात विधाघहलात घनेरे॥ रीतिगहै सवतें विष  
 में विषमें सरती छनई क्षरातेरे॥ १०९॥ दोहा॥ सोर

ठा ॥ कोडा आं सूवूंद ॥ किसि सां कर वरु ली सजल ॥ की  
ने वद न नि मूंद ॥ इग मलंग डारै रहत ॥ टीका ॥ यह  
नाइ क कौं दे विनाइ का के ले त्रु वि व स भ ये हैं त्रु र पर त  
है स धी स धी सों कह ति हे स धी नाइ का सों करे ॥ कवि  
न ॥ तैं त व तैं व व भान सु ता हरि के इग नैं क नि हारि ह  
रै हैं ॥ वे त व ते न ह ले न च ले रहे वा ही चितौं नि की च  
ह भ रे हैं ॥ कोडा किये जूं सू वानि की वूंद जं जी र व डी व  
रु नी ज करे हैं ॥ नै क त्रु वै नि की सु धि ले हु म लिंग म  
नौं मु ह मुं द परे हैं ॥ ११० ॥ दोहा ॥ कहत सै व क विक म  
ल से सो म ते ने न प धां न ॥ न त र क क न इ न वी य ल ग  
त उ प ज त वि र ह क सां न ॥ टीका ॥ यह ले त्रु ल ग नि है  
य ह व च नु नाइ क के हे तो व ने नाइ का के हे तो सं भे त्रु  
क वि त्त ॥ व र नि व र नि इ ग क ह त स क ल क वि का  
ल क रं ग मी न धं ज न स मा न है ॥ क हे क वि क अ र  
प धि च तुरा न न ले लो च न ये पा ह न व ना ये मे रे जा  
हैं ॥ क म ल सों क म ल ल ग अ रे धौं कै यौ वे र ये क आं व  
क्यौं हें उ प ज त क सां न है ॥ ला ग त हीं वि य ले न त व  
उ प जि उ ठे ल ग नि त्रु ग नि या तैं प ग ट स मा न है ॥ १११  
दोहा ॥ स व ही त्यों स मु हा ति दि नु च ल ति स व नु दे पी

ठि। वाही तौ ठहरा तिय हक विलनवा लें डी ठि। टी  
का। यह नाइकाल छिता सवी नाइका सौं करति है  
सवी कौ वचन सवी हसौं होइ। कविता। लाल मन  
गहन की छवि परतें तो वलिरी फिर ही मोहि वहरा  
नति है मोरी ज्यों। प्रीति उर अंतर की पुगट विलोकि  
यति सौं हकियें कै सै निवहति चोरा चोरी ज्यों। स  
नसौं लघति मिलै काहू सौं नतेरी डी ठि पीठि देखल  
पुनि सवही की चोरी ज्यों। इत उत हेरि चित चोर  
हा की चोर आइ रहति ठहराइ मंत्र की कटोरी ज्यों। है  
॥११३ दोहा॥ ठरं ठारं तै ही ठरत दूजी ठारठरं न॥  
क्यों हूं जानन अंन सौं नैना लागत नैना। टीका॥  
यह नाइक कौ आपने लेवनु की आसक्ति करतु  
हे अरु नाइका कौ भ्रमु हें कि नाइकु और के आसक्ति  
हे सुनाइका कौ भ्रमु दूरि करतु हे अरु जो नाइका न  
इक सौं कहै तो उराह नौ संभवै। कविता। और तै  
वां निपरी सुपरी नटरे बहकोटि उपाइ कियें हूं  
यस कहै जितरी फिर चेतितें नचलें नक हलल  
॥११३॥ तौं हीं ठरं जिहिं ठारठरं नहिं दूसरें ठारठरं स



पनेहूँ॥ आनकिये कही आनन आनसौ ये दुगने  
परे लागत क्यो हूँ ११३॥ दोहा ॥ हरिद्विजलजवतैत  
द्विजुविदुरैने॥ भरतटरतवूडततरतरह तघरी  
नेन॥ टीका ॥ यहनाइकाअपनेनेनुकीआसा  
सवीसैंकहतिहे॥ कविता ॥ आजुनिरखो मैवजरा  
कौकुरकांनूजाकेअंगअंगआलीमनहिहरतै  
कसपांराप्यारेकीदुहाईवांरिाकाईदेव  
कोरिरतिपतिअतिलाजनिभरतै॥ नाकीसोभास  
लिलमैजवतैनयनपरेतकनौघरीलौंदिनहंनवि  
दुरतै॥ असेभयेरहततहीकरतअनेकभाइभर  
टरतपुनिवूडतेतरतै॥ ११४॥ दोहा ॥ नेनलगे  
तिहिलगनिजुनदुंटेदुंटेहंपांन॥ कामनआवे  
यकहतेरेसैकसयांन॥ टीका ॥ यहनाइकापोटा  
परकियासवीसीद्वारेतिहेतासौओटाकहति  
हे॥ कविता ॥ नेननिअसोगह्योहितकोपनुच  
लैहजवलौंहरिहेरे॥ पांनदुंटेहंनवानिदुंटेज  
गक्यो नहसेपुउपहासघनेरे॥ कोकुलकामिकहो  
पुरीगईलाजलजाईयआवतिनेरे॥ तैभरअके

कसयांननयेकहकामनजावतमेरे॥१५॥ दोहा  
ललनातिहारेरूपकीकहोरीतियहकौन॥जासो  
लागतपलकूपललागतपलकूपलौन॥टीका॥  
यहनाइकाकीअवस्थासवीनाइकसोंकरतिहे  
किजवतेतुमेदेवेहोतवतेवाकेपलकहनाहोला  
गतनाइकाहनाइकसोंकहेतौसंभवौ॥कवित॥  
वारकेदेवेसुधौनरहेदिषसाधलगेकुलकांनि  
भगे॥मोहनोरीतिकहुमनमोहनरावरेरूपकी  
धौउमगे॥कौनठगोरीलहीकितकाहरमेंनव  
सीकरमंत्रपगे॥जाकीकहंपलयेकलगेपलता  
कीपलौपलकैनलगे॥१५॥दोहा॥हेयहररति  
हईहईनईजुगतिजगजोइ॥डीठिहिडीठिलगेइ  
इदेहदूवरीहोइ॥टीका॥यहनाइकाकेनेत्रनाइ  
ककौदेखिलगेअरुदेहदूवरीहोतिहेनाइकास  
वीसोंकरतिहेसवीसवीहसोंकहेतौवनेअद  
भुतहै॥कवि॥देष्टदेष्टतेहंनलहेकलपंपम  
रुउठैअतिभारी॥देवेविनाजसुहाइकधूपुनिह  
इरटेअतिहोतदुवारी॥व्याकुलहैअकुलाइम  
शामुरजाइरहेनिसिनीदविसारी॥नेनलगेत

नद्वरो होइ अ नोषी सनेह की रीति नि  
 रोहा ॥ इन अंधियां दुषियां नि कौं सुषसिर  
 नाहि ॥ देखै न देखतै अ न देखै अ कलांड  
 का ॥ यह नै उपा लभनाइ का अथवा नाइ  
 धी सौं कहै ॥ कादिता ॥ ला गति न पल कल ल  
 ला धि वे की वा हो ध्यान प गति ज गति दि न र  
 है ॥ ज्यौं ज्यौं निरघति त्यों त्यों उमहति भूषी व  
 होति न अ हूषी घरी घरी लल चाति है ॥ जो  
 यं वरति विषम विरहा गनि मै मी न जल ही  
 की सी गति दर साति है ॥ सिर ज्यौं न सुष इ नु  
 हाई अंधि नु कौं देखै न अघाति अ न देखै अ क  
 ति है ॥ ११५ ॥ देहा ॥ देखत कहु कौं ति गुर नै देखै  
 कृ नि राशि ॥ कव की इ कट कड टिर ही ट रिया अंगु  
 नु फारि ॥ टी का ॥ यह नाइ का कहूं है कै नाइ कौं  
 घति है सुसवी नाइ कौं वता वति है सवी कौ व च  
 नु नाइ सौं पीति कराइ वी प्रयोजनु ॥ कदिहा मै न  
 है तै अ न मन मोहन तु मारी दु वि नै न नु मे सु भी व  
 ज वारि अ वारि कै वगर कौ वा सुसा सुन नई कौ वा

क

१

पुतातै निरघिसकेलप्यारीवदनु उघारिकैं ॥ विनुदे  
 धेकलनपरतियातै देधिवेकैं कस्योहै उपाऊरेवौ  
 तधौ निहारिकैं ॥ कवकी निमेषभूलिलोचनलगाइ  
 तउटिरहीटाटी करपल्लवसौं प्रारिकैं ॥ ११ ॥ दोहा  
 धकीजकीसौं देरहीवृजैवोलतिनीठि ॥ कहंडीठि-  
 नागीलगीकेकाहकीटीठि ॥ टीका ॥ यहनाइका  
 वदितोहैसवीनाइकसौंकरतिहैसवीहूसौंकहै ॥  
 कविता ॥ आजुचकीसीजकीसीकराकहेजुगस  
 हरिराईसीहरी ॥ वृजैहूंलीठिकहेमुखवैनेहलेन  
 वलेजनुचित्रउकेरी ॥ मेरीलवैयहतेरीनईगति  
 मोमतसोचसमूहलिघेरी ॥ डीठिलजीकिधौंकाहकी  
 तोहिकिडीठिलगीकहंकांनसौंतेरी ॥ १२ ॥ दोहा ॥  
 नेहनेनेननिकैंकदूहेउपजीवटीवलाइ ॥ नीरभ  
 रनितप्रतिरहैतउनप्यासवुजाइ ॥ टीका ॥ यह  
 नाइकाअथवानाइकुआपनेनेत्रनुकीआसक्ति  
 सवीसौंकहैसवीसवीसौंकरेतोहंसंभवे ॥ कवि  
 ता ॥ एकपल्लोनलगेपल्लकैल्लकैल्लखिवेकहंका  
 जीचटी ॥ नीरभरेनिसद्योसरहैनमिततउभूरि  
 वयाउपटी ॥ आठहूजामतेपतरफेउपचारहसैलि

घटे न घटी ॥ यह पीतिलगी नहि जाधि लुको को उ  
पात्र कव्याधि प्रलेप गटी ॥ १२१ ॥ दोहा ॥ के वांश  
वै इहि गली रहों चलाइ चलै न ॥ दरसन की सा  
धै रहे सूर्य होहि न नैन ॥ टीका ॥ यह नाइ का अ  
ने ननु की दसा सघी सों कहति है कै देवौ तेल  
जसों देखि नाही सकति अ न देयें अ कुलात हे म  
धा पर किया ॥ कवित्त ॥ काह अली बहु वेर ग  
ली इहि आवतु चारु सिंगारु किये हं ॥ देखि वे कौत  
वहां तव ही ललचाइ रहों न चलाये चलै हं ॥ लज  
अ चांन क अइ डे पछितातिये हे अ पने जिय में  
हो ॥ सों ही चिते वे की सा धै रहे उर सध विलोचन रो  
त न के हं ॥ १२२ ॥ दोहा ॥ साजे मोहन मोहकों मोहि न  
रतु कुचै न ॥ कस करों उलटे परे टों न लौ नैन नैन ॥ टी  
का ॥ यह नाइ का प्रोटा पर किया नाइ क को देखि ने न  
अ कुलात हे सु सघी सों कहति है ॥ कवित्त ॥ वृजति  
हो सति भाइ सघी यह सीष इने सिषई कहि कौने म  
जे मोहन मोहि वे कों बहु अ जल साज व नाइ स लौ न  
इ सत ही ललचाइ रहे अ वय अ पने सपने ह न हौ न  
मो ही कों दे न लगे रु स नैन य ज्यो उलटे परि जात है टों

नें १२३॥ दोहा ॥ लोभलगे हरिरूपके करी सांठजुरि  
जाइ ॥ हों इनवेचीवीचहीं लोइनवडो वलाइ ॥ टी  
का ॥ यहनेत्रलगनिनाइकाकौवचलुसवीसों ॥ क  
वित्त ॥ नंदकिसोरकीमोहनीमूरतिदेवतहों अतिमे  
मनभाई ॥ तौलगिल्लोभलगेइंगअंगोंईजाइमिलेमि  
लिसांठमित्वाइ ॥ आपनोस्वारधुसाधोसवैविधिहों  
इनवीचहींवेचीरोमाई ॥ कैसीकरोंनकदुवनिअ  
वतिनेननुकेमतमैतौदगाई ॥ १२५ ॥ दोहा ॥ असुअ  
पजसुदेवतनहीदेवतसामलगाता ॥ कहाकरोंलाल  
चभरेचपलनेनचलिजात ॥ टीका ॥ यहनाइकासवी  
मिहादेतिहेतासोंअपनेनेत्रनुकीअसक्ति कहतिहे ॥ क  
वित्त ॥ सासुरिसातिरुकेननदौतउतूसिवेसविसी ॥ व  
षकेवैजा ॥ हेवजवासुचवाइरीमाईचेहुंअरचले  
उपहासकीसैंजा ॥ देघतसुंदरसांवरोमूरतिलोकअल्लो  
ककीलीकलवेंजा ॥ कैसीकरोंहटकेनरहेंचलिजात  
अलचिलालचीनैजा ॥ १२५ ॥ दोहा ॥ नैनानैकलजा  
नहींकितोकह्योसमुजाइ ॥ तनमनहारेंहंसैतिनसैंक  
हावसाइ ॥ टीका ॥ यहनाइकाआपनेनेत्रनुकीअ  
सक्तिसवीसोंकहतिहे ॥ कवित्त ॥ सहियेजगकेउप  
हासनिंतरहियेगुरुलोगलिमाजगसैं ॥ उरुअंगि

यहै जपने उर है समुजा इर ही नहिने क व से अकर  
कमेरो कह्यो न करै तनु हं मनु हारे तउ ललसे य  
ने मुगहो सजनी इनने निपे हरि हेरि हे सई हं सै  
॥ १२६ ॥ दोहा ॥ सकै सका इत म विरह लिस दिन सरस  
सनेह ॥ रहे नै हे लागी दुग निदी पसिषा सी देह ॥ टीका ॥  
यहना इकु लाइका कौ धां नुहं करतु हेत उ विरह यत्तु न  
हो सुनाइ कु सघी सौ करतु हे ॥ केवित्त ॥ त्रामगला चनि  
के विकुरै जु भई गति सो नहि जाति उचारी ॥ सुद्ध साप  
रि पूरन नेर विना तघली उर अंतर धारी ॥ जइ पिदी  
पसिषा समने ननु लागी रहे तन को दु तिप्यारी ॥ तदु  
पिसूजे कइ नहि यो भरि पूरि रह्यो विरहात मुभारी ॥ १३ ॥  
दोहा ॥ लाज लगाम न मान ही नै नामो वसनां हि ॥ ये मु  
ह जोर तुरंग लौं मै चत हं चलि जां इ ॥ टीका ॥ यहना  
का सघी सौ जपनी आस किने वनु की अवस्था कहति है  
कवित्त ॥ देषतवान टनागर की दु विफादि परे हटके  
नरहं ही ॥ लोचन लोलतुरी मुहं जोर सुला जलगामको  
गानतना ही ॥ चै चति है जपने इत कौ वलिये वलुके उत  
गं चलि जां ही ॥ के सौ करौ नहि मो वसये कुल कौ निके  
गहकौ तं जडरां ही ॥ १२४ ॥ दोहा ॥ चित्त लजानिको  
रि रि रि चितु उत हीं रहतु इ टी लाज की लावां अंगु

गद्यविजयमें भयो भौरकी लाव ॥ टीका ॥ यह नाइ  
 कुलाइके अंग अंगकी छविपेरी ज्यो है सुअपने चि  
 तकी आसक्ति सघी सौं कहतु है ॥ कविता ॥ जोवनम  
 हानदमै रूपको सलिलु भयो तरलतरंग हाउ भाउ न  
 को भाउ है ॥ अंग अंग छवि की उमंग जोर भारी भौर च  
 पलकटा हत हां फस्यो चितनाउ है ॥ चलिपेन सकतु  
 भ्रमतर है वाही ठौर तरफितिवू का जमि ट्टी लाजला  
 उ है ॥ लागति न क्यो हूं कुलकांतिकी विसाल वडी धी  
 रै प्रवलपतवारी को नदाउ है ॥ १२५ ॥ दोहा ॥ उतते ज  
 त उतते इतै छन्नक हूं ठहराति ॥ जकनपरति चकई भई  
 फिरि आवति फिरि जाति ॥ टीका ॥ यह नाइका परकि  
 यामध्या है सुर्या की विवस्था सघी सघी सौं कहति है जो  
 सघी नाइक सौं कहै तो हूं संभवे ॥ कविता ॥ तवतै अट  
 की नट नागर सौं तवते न कहु मन लावति है ॥ ठहरा  
 तिन हीं धिनु ये कहुं निसि वासरै वहरावति है वहुं ज्यो  
 इतते उतधावति है कवहुं उततै इत आवति है ॥ चकई जि  
 मि आवत जात कहु पलकौ न कहुं कलपावति है ॥ १२६ ॥  
 दोहा ॥ को जानै कहुं है कहु वृज उपजी अति आगि ॥ म  
 नलागै नैन नु लगे चलौ नम गलजि लागि ॥ टी  
 का ॥ यह नाइ कुअथवा नाइका वेदुष्टाचुरा गुतै विरह



की अगिनि सों मन व्याकुल है सुसखी सों कहै है ॥ कवि  
ता ॥ दोसै न धूम बरै बिलुई धनु उन्नत द्वै प्रगटे न सि  
धा है ॥ नै सुकलै न निलगत ही मनु आ निलगे सु  
अंगनि दा है ॥ लोचन नीर टरै न वुजै उपजीव ज  
मै को उ आ गि म हो है ॥ देखै हं डी ठि परै न क धू गे व  
जां नै को आ गे धौं द्वै हे कहा है ॥ १३१ ॥ दोहा ॥ उर न  
टरे नीर न परै है रे न काल विपाकु ॥ दिन कुछ कि उध  
कै न फिरि घरो विषम छ विद्या कु ॥ टीका ॥ यह नै न  
गनि है सुनाइ कु अथवा नाइ का सखी सों कहै है कि कवि  
को छ कु घरो विषम है सु विषमता वरा न करै है ॥ कवि  
ता ॥ सुधि कौ न धरे नीर नै सु कौ न परै महा भय तै न  
डरे सुषनि करै न वा कु है ॥ कहै कवि क ह क्यौं ह्ये क  
वर छ के सु तो उ छ के न नै कौ न स मे को परि पा कु है ॥  
शौ ल गे व रौ नै सि दिन तर परै पल क नि ग ति ह रै क  
ह कौ न धा कु है ॥ और मत वारै त तो मेरे सु त वारै यह स  
व ही तै वि कर विषम छ वि द्या कु है ॥ १३२ ॥ दोहा ॥ उ  
डी गु डे ल धिलाल की अंगनां अंगना मां ह ॥ वौरी  
नौं दोरी फिर ति हु व ति छ वी ली द्वां ह ॥ टीका ॥ यह  
नाइ का पर किया पाटा है सुनाइ क की अंगनी द्वां ह

हुये तेनाइ कवे मिले हो को सुबुमान तिहे सवी सवी सौं  
कहति है ॥ कवित्त ॥ नंद ललान वना गरि पै निज  
रूप दिवाइ ठ गौरी सो लाई ॥ वाहिर जात वने गहत  
न विलोकि वे कौं अति हीं अकुलाई ॥ प्यारे की चं  
गइते में उठी लवि मोह भरी निजु आगन आई ॥ हे  
ति गुडी की जिते जितु द्वां हति ते तित की वे कौं डोल  
ति धाई ॥ १३३ ॥ दोहा ॥ चलत घेर घर घर तऊ घरी न  
पर ठहराई ॥ समझि उही घर कौं चले भूलि उही घर  
जाई ॥ टीका ॥ यह नाइ कापोटा पर क्रिया है जहां  
चितु लाग्यो है तहां जाति है सवी सवी सौं कहति है ॥  
कवित्त ॥ बाल विधीर सकैं च सकैं व सकैं न सकैं मन कैं  
समझावै ॥ होतु घने घर घरे तऊ घरये क घरी रहियो  
नही भावै ॥ रैनदिना कल कान फिरै न कहं कल कान्ह  
लये विनुयावै ॥ जानि चलै तो उही घर आवति नूलि प  
रै तो उही घर आवै ॥ १३४ ॥ दोहा ॥ ह्यो ते द्वां कौं ते इहो  
ने कौं धरति नधीरा ॥ नि सिद्धि नुडाटी सो फिरति वादी गा  
दी पीर ॥ टीका ॥ यह नाइ का कवित्त में लगनिलगी है  
सुया कौं मनु कहं कल पावतु नाही या क्रीद सा सवी स  
वी सौं कहति है ॥ कवित्त ॥ सो नाम न मोहनी की परम  
र साल चित्तु भी वज्र बाल कैं नदि न विसरै कहं ॥ वर

सतजलतरसतद्गदेविवेकौकहौअसील  
दुराअतैदुरैकहं॥घरतैवगरआवैवगरतै  
धावैफिरेज्यौविकलपलुकलनपरैकहं॥व  
जमघपीरनेसकौधरेनधीरडाटीसीफिरेतिव  
दिननरैकहं॥१३५॥दोहा॥पलनचलैजकिस  
होयाकिसीरहोउसास॥अवहौतनुरितयोकर  
नुपठयोकिंहिपास॥टोका॥यहचित्तलगनिहै  
धीनाइकसौंकरतेहे॥कवित्त॥सासनउसास  
हेवासकीसम्हारहेनअसौंकेकौकोनकेधौहितौ  
हितैरही॥कितहेरीतेरोमनुरीतोसौलगतुतनु  
अवहौतनुसुधिवुधिकहिक्यौवितैरही॥चिक्कैसीलि  
धीडरोजकितअचेतभईपलकनिगतिभूलीचकि  
चितैरही॥काहूहेरिहरोमतिविसरीसैवसुरतिहौ  
तोतेरीयहगतिरेधियकितैरही॥१३६॥दोहा॥जै  
ज्यौंआवतिनिकटनिसित्तौंपौंषरीउताल॥जमकि  
जमकितहलैकरेलगीरहचटैवाल॥टोका॥यहनाइ  
कापोडाहैसुसधीसधीसौंकरतिहे॥कवित्त॥जौंनैभयै  
हैनैभयैहियमैपियपुंमकीजोतिसीजागी॥वासरज्यौं  
रावतिनीठिविधीचसकेरसैमंअनुरागी॥आवतिज्यौं

ज्यों नजीक निसंति यत्त्यों त्यों उक्ता हउ मंगल निपाणी ॥ सा  
 त्वर काज करै यह करवनी रतिके लिकें लाह कलागी ॥ २७ ॥  
 दोहा ॥ भुक्टी मटक निपीत पट चटक लटकती चाल ॥  
 चलचष चितवनि चोरि चितुलीयो विहारी लाल ॥ टी  
 का ॥ यह नाइका प्रोठो हे नाइक की सो भादे धिमोहित भई सु  
 अपनेत नकी वृत्ति सधी सौं कहति हे ॥ कवि ॥ कहि  
 वेकी ईतौ कहें रीयेक वात का लिहनि ठनि वानिक सो  
 कानुरत द्वैरायो ॥ सां वरोस लैं नौतनु सुंदर वदन सो  
 भासदन वि लो कत मदन मदु नै गयो ॥ चलनिकी लट  
 कनि पीरे पटकी चटकनि भौं हनिकी मटकनिसौ चेट  
 कूसौ के गयो ॥ चपल चषनि चहचही चितवनि चाहित्र  
 लीरी विहारी लालु चोरि चितुले गयो ॥ १३८ ॥ दोहा  
 छुटेन पईयतु वसि छिनकुने हनगर यह चाल ॥ मास्यो  
 फिरि फिरि मारियतु धुंती फिरि सुसाल ॥ टीका ॥ यह ल  
 गनिको वर्न नहें जाके लगति हे ताके अधिक दुषु हे जाकी  
 लगति हे ताके ककु मनहं मैना ही सुनाइ का अ वस्थान  
 इकु सधी सौं कहतु है ॥ कवि ॥ द्विनुवसैं छुटिये नवि  
 नुवसैं चटपटी नेहन गरी मैयर अटपटी रीति है ॥ लीज  
 तुं छिडाइ मनुरत नजतनु नाहि अतनु मही तहुं चधि

२७

५९

कजनीति है ॥ तारे ही कौं नारी यत्तु सुती ॥ मयो  
किरे जीते ही की हारि करु हारे ही की जीति है ॥ सरव  
जैत उपर वस परि यत्तु जहां कहु लोक पर लोक कौव  
ति है ॥ १३५ ॥ दोहा ॥ कैयों वसिये कैयों निवहिये नीतिने  
पुरनाहि ॥ लगलगी लोइन करै नाहक मन वधि जाहि  
टीका ॥ यह लगनि है ने वनिके लगे मनु वधि जातु है य  
अधभुत कनीति है सुनाइ का अचवानाइ कु सवी सों कहे ॥  
विंता ॥ पावक पुचंड तो तें भागें हुं नहु टियतु वरी यत्तु जै  
ज्यों उपचार की जियतु है ॥ प्रवलेक जो कजो कनु मगन  
लन पर्यै चितु वितु ही जैत उहित भी जीयतु है ॥ ऐसे पं  
मपुर के सै वसिये निवहिये कैयों देवें अनरी तें तन छिनु  
ही जियतु है ॥ लगनिकर तुधाइ ने नमे नमत वारे नाहक  
विचारो मनु वाधिली जियतु है ॥ १३६ ॥ दोहा ॥ निवौ उर  
ननु ही करी हर विनु ही तुम लाल ॥ उरतें वासु हु टौ न  
ही वासु हु टें माल ॥ टीका ॥ यह पूर्वानुरागु नाइ कार  
पीतिस वौ नाइ कसों कहति है कि तुम्हारी मया सौं त्रै सौं हि  
उमाने तिहे तो तुम सों ही कल कहे ॥ १३७ ॥ दोहा ॥  
सौं कै वां कसौ तू जिनि है पत्याइ ॥ लगलगी करि  
ननु उर मै त्वाइ लाइ ॥ टीका ॥ यह लगनि है नाइ का

पवानाइ कुअपेनेमनसों कहै है सवीसौ कहिबो संभवतुना  
ही॥ कंक्षित॥ तोसौमं कही हीके उवेरसमजाइमनने  
ननुकेमतलागेभारीघताघाईवो॥ तवतोनसिधमानीइ  
निहीकीमतिठानीअवकहाहोतुपरवसपदिताईवो॥ लजाल  
गीइनिकीलीउरकौलगाइदीनीलगनिअगिनितोतैकहा  
भगिजाइवो॥ कीजतुजतनुसौरोत्पौत्सोंहोतुदुवुनीरोनिसि  
दिनुअतनुसतावेतनुताइवो॥ १५१॥ दोहा॥ सारीडारी  
नीलकीओरअचूकचुकेन॥ मोमनुमगुकरवरगहतअहे  
अहेरीनेना॥ टीका॥ यहनाइकाकेनेत्रदेविनाइकोम  
नुहाधरहतुनाहोसवीसौकहैहैकरवलके॥ कंक्षित॥  
चाइचेवनकेवनमेंविहारकरैकाहूकेनरोकरैहैवित्र  
मअकथके॥ भुकुटीकुटिलुचालअंजनुअसितवासतर  
कराहवांनगैहैअयुधसुहथके॥ सारीनीरीअटकेके  
आवतुअचांनकहीहोरतअचूकयोंहेटोरहतनथके॥  
मोमनुकुरंगकोपकरिलेतहघाहघीराधेतेदेनेनेयअ  
हेरीमनमथके॥ १५२॥ दोहा॥ जमकिचछतिउतरति  
अरोनेकलथाकतिदेहा॥ भईरहतिनटकेवराअटकीनाग  
रेनेहा॥ टीका॥ नाइकाप्रोठानाइकीसोभादेविअस  
अंजनेसिधकेउतरतिचछतिहैसुयाकीविवस्थान

धीसधीसों कहति है ॥ कवि ज्ञान ॥ कांठरको वदनवि  
लो किं कैंविका नीवालतादिनाते रश्मि वेके जतन कर  
ति है ॥ सुरभी चराइ वृज आइ वेकी वेरजां निरसवस होति  
सवकाज विसरति है ॥ सांकगुरजनकी निसां कैंकेन  
ठाठी रहे हिन इत हिन कतया विधि टरति है ॥ नट के व  
रा ज्यौं नट नागर के जेह पागी उंचे चराज मकि चठ  
ति पतरति है ॥ १४३ ॥ दोहा ॥ अरु पूर्वा नुराग को जे  
तव होत दिषा दिषी भई अमी इक अंका ॥ रंगे तिरों छेडी  
दिअ वद्वे वीही को डंका ॥ टीका ॥ यह पूर्वा नुरागु जे  
चितवनिसंजो थो भे सुषदाई ते वियोग मे सुधि आयें साल  
ति है सुनाइका अथवा नाइकु सधीसों कहै है विरहकी क  
ल अथवा नुमै सुमिरनु कलैये ॥ कवि ज्ञान ॥ रंगरगी  
ली भली विधि सों बहु भांति निके सुषदे तेहे जे हो ॥ तेई  
वे कुंज भये प्रतिकूल विलोकि हियै दुषसूलसलही ॥  
हके आदि रसीले चितौं निहं तो इक अंका अमी समते  
ही ॥ वीस विसे विषसाइ के द्वे उरसालति वांकी विलो  
कानि वे हो ॥ १४४ ॥ दोहा ॥ जेको पुं हन जुदी करी ह  
रधि जुदी तुम लाल ॥ उरतें वासु कुटो नही वासु कुट  
हं माल ॥ टीका ॥ यह पूर्वा नुरागु नाइका की प्रीतिस

धीनाइकसोंकहतिहेकितुमहारीमयासैंजेसोहितमान  
 तिहेतौतुमसोंकहाकहैं॥कविता॥जहिनिवाहिअ  
 लीनिकेदेषतरीजिहियेंहितुमानिकेंभारी॥अपनेहि  
 यतेंजुउतारिईतुमफूलकीमालरंसाखविहारी॥त  
 दिनेतेंबहवारिजवारिकोंप्राणनुहेंतेलगीअतिपा  
 री॥वासुगईकुंभिलाइगईपैकरीनेतउउदेतहि  
 नुन्यारी॥१५५॥दोहा॥धिनधिनमेंघटकतिसुहियपर  
 भीरमेंजाता॥कहिजुचलीविनुहैंचितेओठनिहोंमेवाता  
 टीका॥यहनाइकापरकियाहेकाहभीरमेंनाइकनेदधीहे  
 सुठानेजुपरकियाकीमिसुइनिदधीपैपैवातनसुनीसुस  
 धीसोंकहतुहे॥कविता॥अजुमिलीवृजवालअचान  
 कसोमतिवाकेसनेहगहीहे॥जातिहतीअतिभीरमेंसुंदरि  
 मोतनेहेरिहियेंउमहीहे॥लाजतेपैनविलोकिसकीउनकी  
 नीतउरसरीतिसहीहे॥ओठनुहीमेंगईजुकदूकहिमेंन  
 सुनीपद्धिताओग्रहीहे॥१५६॥दोहा॥वनतनकोंनिकस  
 तुलसतुहंसतुहंसतुइतअइ॥दुगधंजनगहिलैगयोचित  
 वनिचैपुलगाइ॥टीका॥यहनाइकापोठोहेसुइविसैंश्री  
 कसुदेधैहैंतैंसहीअपनेनेनुकीलगनिसधीसोंकहतिहे॥  
 कविता॥अजुकठेनावनकौइतैवनिवांनिकसोजसु



हाकौ कन्हई ॥ मोरकिरीटलसै सुरली लकूटी ॥  
दीह विहई ॥ मोटिग आइ भस्योर सभाइ हरै सुसि  
स्यौ सुवदाई ॥ चौंपकी चाहनि चैंपुलगाइ कैलेगा  
नमो लनिमाई ॥ १४७ ॥ दोहा ॥ जवजववे सुधि  
तवसवही सुधिजाइ ॥ आंधिनु आंधिलगीरें आंधे  
गतिनाहि ॥ टीका ॥ यहपूर्वानुरागुनाइ काअ  
इकुसवीसौ अपनी वातकैहै ॥ कवित्त ॥ यह प्री  
रीतिअनोषी कहकरंजानीनजातिकहागतिहै ॥  
चाहकीचौंपचटीयैरैअरुपेंमविधाउरपागतिहै  
वतआंधिनिसौवेई आंधे लगीरें आंधिनकेसैंद  
गतिहै ॥ जवहीजववेसुधिकीजति तवहीसवहीसु  
भागतिहै ॥ १४८ ॥ दोहा ॥ जहांजहां ठांठालघोस्य  
मुसुभगासिरमोरु ॥ विनुहंउनादिनुगहिरहतुद्र  
गनिअजौं वरहैरु ॥ टीका ॥ यहपूर्वानुरागुअस  
दवैहैंतेईठोरश्रीअसकीभाबनाकरिकैनेअनुकोअ  
ग्रहनुकरतिहैसुनाइकासवीसैंकैहै ॥ कवित्त ॥  
केलिसुधासागरमेंकेलिरंगरलीपरिपुरनविवि  
धकरतीजुयोंमनोरथनु ॥ तनमनवांउंटेतौउमगि  
नुरागुभागुलागतुहोमद्यवासचौकोअनुहैंतेअ

षष्ठीरी ॥ हो लघिवेकों उद्वाह मरी नि करी ब्रह्म डो ठि पस्यो  
 नठगीरी ॥ ने ननु कौञ्ज रुकां ननु कौमन कौतवै तंतल  
 वे ली लगीरी ॥ १९० ॥ परस्परावल्लो कजा ॥ दोहा ॥  
 फूलें फुद कतले फरी पस्व कटा ह्य कर वार ॥ कर तव चो  
 वत विय नयन पाइ कघा इह जार ॥ टीका ॥ यह दो उ ननु  
 केनेत्र च्यापुसमै करा ~~ह्य~~ नुकी चोट करत है और  
 नुकी दुष्टिव च्यावत है सुसधी सधी सों कहति है ॥ कवि  
 ज ॥ अंजनु अंग कहे कहनी सिषये न व्रजो वननाइ  
 कहें ॥ फंदत फूले नि सां क गे हं करवाल कटा ह्य सहार  
 कहें ॥ जोर कौं टाल करी पले कें लले कें अति जौं मसौला  
 इ कहें ॥ वियलोचन चोट वचावत है तियने न कि मै न  
 के पाइ कहें ॥ १९१ ॥ दोहा ॥ कहत नट तरी जत विजत मि  
 लत धिलत लजियात ॥ भरे भौं नै मै करत है ने ननु ही सव  
 वात ॥ टीका ॥ यह दो उ भरे घर मै ने ननु ही मै सव वात क  
 रत है सुसधी सधी सों कहति है ॥ कवि ज ॥ भस्यो हे भव  
 नत उ पावतु न भेदु को उ उ महत दो उ यों सनेह सनी धा  
 तै है ॥ हिलत मिलत पुनि धिलत जिलतर सहूल सतल सत  
 सकत मुसिकातै है ॥ हां करत ना करत तरी जत विजत हित भौं ज

तलजातनजिकातैहदिकातैह॥पंमपजोपूरनपुवीव  
प्रांनप्यारीपीउनेननुहीनिपुनकरतसववातैह॥त  
दोहा॥डीठिवरतवांधीअटनुचटिधावतनडरात॥  
उाचिनुहुंनिकेनटलोंआवतजात॥टीका॥यहदु  
धनुकेचिनुतगैहंसुपरसपरअपनेअपनेअलापरत  
निसंकोदेसतैहउतकोमनुइतआवतुहेइतकोमनुउत  
जातुहेसुयंसमीसमीसोकहतिहे॥कवित्त॥पीतिपु  
जबठेआपुआपुनेअरांनिचोटनिरवेमैआजुजेसंय  
तवितरतैहऔरकोउजानतुननितकीअनेकगतिह  
वलभरेअेसीठरनिठरतैह॥वांधेडीठिवरतनडरत  
नगांयेटकीनटकीसीकलादेधोपुगटकरतैह॥दुहुं  
केचितचलिआवतदुहुंकीऔरधावतहुलसिअतिधी  
जधरतैह॥१६३॥दोहा॥जुरेदुहुंनिकेदुगजमकिरुके  
नजैवेचीर॥हनुकीफेजहरोलजैयांपरतिगोलपर  
भीर॥टीका॥यहदुहुंनिकेनेत्रधुंधटकीओटपलिके  
मिलिगयेहंसुसमीसमीसोकहतिहे॥कवित्त॥वेठीअ  
लीगनमैननुनागरिआयेतहांचलिप्यारोविहारी॥ला  
नकीडीठिवचारवेकोमुषधुंधटओटकस्त्रोननिहारी

नैनसौंनैनउमंगिमिलैजुरेहपटजोटकितोपचिहारी॥६॥  
रोकिसकेनहरोलकीफेजजैंगोलपैजानिपरेनरुभारी॥१६॥  
दोहा॥दूसौघरेसमीपकौलेतमानिमनमोह॥होतुदुहं  
निकेदुगनिहोंवतरसहंसीविनोदु॥टीका॥यहदोउने  
उनुहोंमैंवातेकरतहेमिलेकौसुधुमानतेहंसुसधीसधीसौं  
कहतिहे॥कवित॥पैमप्रभाउदुहंनुकेकैसंहंमोपैवैन  
वघानतैहं॥चारकलाचितचातरीकीरसभाइभरीउरजा  
नतेहं॥जदृपिदूरिघरेइतउवैसमीपहीकौसुधुमान  
तैहं॥नैननुहोंवतरांडहसंजतिरीजरलीमतिठानतेहं॥१६॥  
दोहा॥उनहांकीहसिकेइतेइनसौंपीमुसकाइ॥नैनमिले  
मनमिलिगयेदोअमिलवतगाइ॥टीका॥ग्रहदोउगाइ  
मेलवतमनमिलिगयेहेसुसधीसधीसौंकहतिहेनाइका  
भरकिया॥कवित॥उलिहसिहांकीयेकहांकीहेनईसी  
गाइमोपैनधिरतिकाहिकेतेदुषदयेहं॥इनुमुसिकाइक  
भकुरीनचाइयेतौगाइहेहमारीहिलेओरसौंवनयेहं॥  
हेकविकस्मिलेवैननुसौंवैनअरुनेननुसौंनैनरोजि  
सवसभयेहं॥भूलीसुधिमानकीनगौंनकीसम्हाररहीग  
मिलवतदोअमनमिलिगयेहं॥१६॥दोहा॥जदृपिचत्रा  
नुचीकलीचलतिचहंरिसिं

कैहसोदसीलेनेन॥ टीका॥ पहनाइकापरक्रिय  
होऊबुझेनेवदेधतहैतवहंसतहैसुसधीसधीसै  
कविता॥ नेहकीघातलगीजवैततवैरसरीति  
अंकी॥ देधतहोअतिमोदभरैउरकौनकरेकुलक  
हंकी॥ जदपिनीडेनेनदुहंसेनचवाइसर्न  
समरैचलेचाहधौंघांकी॥ तदपिहोडेनेनदुहंके  
कीहसोदरविलोकनिवांकी॥ १७७॥ दोहा॥ फूठेजा  
नसंगेहेमनमुरनिकसेवैन॥ याहीतेमानोक्रियेव  
नुकेविधिनेन॥ टीका॥ यहवैहोतुआपुसमैनेवनु  
मैवातकरतहैसुसधीसधीसौकरतिहैकावकीऊक्ति  
इ॥ कविता॥ इतवजराजकौकरकरसरसरासिउतव  
नीब्रधभानकीकुवारिवरबांनिकै॥ ढाढेहितवाटेअ  
पआपनेअरानिपरकरतकराजमनमघकीकलना  
कै॥ वदनतैनिकसेतेफूठेहोतमेरेजानेवैननुकोसं  
हंकरैयोनयहजानिकै॥ परमप्रवीनदेअयाहीतेपरस  
रकीचनहींमैवतरातअतिसुखुमानिकै॥ १७८॥ दो  
॥ चितवतजितवतहितहियेकियेतिरीहेनेन॥ भोजे  
तदोउकपतक्यौहंजपिनिवरैन॥ टीका॥ यहदेअ

रस्वरआसक्तैहंसुजपुकरतदेवतेहंसवीसवीसौकैह  
नाइकापरकिया॥कवित्त॥जमुनाकेतीरनरका  
रीनुकीभारीभीरतदपिनिरवेविनुहरघैरहैवैनहै॥  
कैहकविज्जस्मचितचौपसौयगतअनुरागसौपण  
तउमगतमनमैनेहै॥यौहीदिनुवितवतहियेहजितव  
तचितचाइरससौतिरीहेकियेनेनेहै॥भीजेपटकपत  
नकाहैतैचपतदोउंअधिकतपतकेयोंहुंजपतिवरैनेहै॥११०॥  
दोहा॥घामुघरीकनिवारीयेकलितललितअलिपु  
जा॥जमुनातीरतमालतरुमिलतमालतीकुंज॥१११॥  
का॥यहनाइकापरकियावाकविदग्धस्वयंदूतुना  
इककोवचननाइकासौ॥कवित्त॥अचारुतेमा  
लकलिंदीकेतीरओसीरसुगंधसमीररहेहुमना॥मा  
लंतैमकीनिकुंजनिमैमिलिगुंजतमत्रमधुव्रतकेग  
ना॥इसुनिकेभरहुंमिलतारहीवेलिलगीलपटाइ  
तमालनि॥कीजेविरामुघरीकइतेयहआतपनेक  
निवारीयेलालन॥११२॥दोहा॥हेदिगुनीपहुंघौचौ  
गिलतअतिदीनतादिघाइ॥वलिवानेकोवैतुसुनिको  
वलितुंमैपत्याइ॥टीका॥यहनाइकेचितकोवतिलन  
चौहीदेविनाइकाप्रीतिवटाइवैकौकहतिहैअरुसापराध

केहसीदसीलेनेन॥ टीका॥ यहनाइकापरक्रियाहैसुदसु  
 होउबुकेनेवदेपतैहैतवहसतहैसुसधीसधीसौकहतिहै  
 कावित्त॥ नेहकीघातलगीजवैततवैतरसरीतिरेहेनहै  
 ठीकी॥ देघतहोअतिमोदभरैउरकौनकरैकूलकानिक  
 हांकी॥ जदपिनीडैनेनदुदुसेनचवाइसनीउप  
 समरैचलेचाहधौघांकी॥ तरुपिहोडैनेनदुदेकरसी  
 कीहसौहविलोकनिवांकी॥ १५७॥ दोहा॥ जूठेजानि  
 नसंगेहेमनमुहनिकसेवैन॥ याहीतेमानोक्रियेवात  
 नुकेविधिनेन॥ टीका॥ यहवैहोतुआपुसमैनेवनु  
 मैवातकरतैहैसुसधीसधीसौकहतिहैकावकीऊक्ति  
 इ॥ कवित्त॥ इतवुजरजकौकवुसरसरासिउतव  
 नीब्रषभानकीकुवारिवरवांनिकै॥ ठांटेहितवाटेअ  
 पआपनेअग्रनिपरकरतकटाअमनमघकीकलानि  
 कै॥ वदनेतैनिकसेतैजूठेहोतमेरेजानेवैननुकोसंग  
 हुकस्योनयहजानिकै॥ परमपुवीनरोउयाहीतेपर  
 परलौचनहींमैवतरातअतिसुखमानिकै॥ १५८॥ दो  
 हा॥ चितवतजितवतहितहियेकियेतिरोहेनेन॥ श्री  
 तनरोउकपतक्यौहूजपिनिबरैन॥ टीका॥ यहरोउ

५

स्वरजासक्तैहंसुजपुकरतदेवतेहंसवीसवीसौकैह  
नाइकापरकिया॥कवित॥जमुनाकेतीरनरना  
नीनुकीभारीभीरतदपिनिरवेविनुहरघेरहैवैनेहै॥  
कैहैकविक्रमचितचौपसौषगतअनुरागसौपज  
मउमगतमल्लमेंनेहै॥यौहीदिनुवितवतहियेहेतजितव  
तचितचाइरससौतिरीछेकियेनेनेहै॥भीजेपटकपत  
नकाहैतैचपतदोउअधिकतपतक्यौहैजपतिवैनेहै॥१९६॥  
दोहा॥घामुघरीकनिवारीयेकलितललितअलिपुं  
जा॥जमुनातीरतमालतरुमिलतमालतीकुंज॥द  
का॥यहनाइकापरकियावाकविदग्धस्वयंदूतुना  
इककोवचननाइकासौ॥कवित॥अचारुतेमा  
लकलिंदीकेतीरऔसीरसुगंधसमीररहेसुमना॥म  
लतीमल्लोनिकुंजनिमैमिलिगुंजतमतमधुवतकेग  
ना॥रुलनिकेभरहुंमिलतारहीवेलिलगीलपटाइ  
तमालनि॥कीजेविरामुघरीकइतेयहआतपनेक  
निवारीयेलालन॥१९७॥दोहा॥द्वेदिगुनीपहुंभौचौ  
गिलतअतिदीनतादिषाइ॥वलिवाननैकौवैतुसुनिको  
वलितुंमैपत्पाइ॥टीका॥यहनाइकेकेचितकीवतिलल  
चांहीदेविनाइकाप्रीतिवठाइवैकौकहतिहैअरुसापराध



२ के

स्वामरुचिसुधि सुगंध सुकुमार ॥ चलतु नमनु प्रधु  
 लमि विपु रे सुधरे वार ॥ टीका ॥ यह नाइ का के सनु व  
 नापे नाइ कुआ स कहे सुनाइ का सौ कहतु है अथ वा सध  
 कहतु है ॥ कवित्त ॥ निंदत है त मपुं जष भाजिन की  
 विसें प्र हे रि सिली मुय हारे ॥ स्यां म सुगंध सुभाइ सचि  
 क्लन सोहत सुंदर लां वेल हारे ॥ मै नम नौ अपे न करै  
 मधु तूल के चौर वनाइ सवारे ॥ देखत हीं मनु या किर हो  
 न न ना गरि के स सुदे सति हारे ॥ १७५ ॥ दोहा ॥ वेई क  
 बौर निवे है बौरै कौ न विचार ॥ जिन हीं उर ज्यो मे  
 तिन हीं सुरजे वार ॥ टीका ॥ यह नाइ क को आ स  
 इका के हा थनु पे है सुवार बौर त दे वि नाइ कु स धी सौ  
 हतु है ॥ कवित्त ॥ पानिल सै सर सी सह सौ तिन अपर  
 इम भौर भये है ॥ के लि फरी सी घरी सुधरी अगुरी न  
 चंद प्र भा निदु ये है ॥ वेई है हा थु वे है चलि वौ कहिया मे वि  
 धार क हा धो ड ये है ॥ मे रौ हिये उर ज्यो जिन से तिन  
 र नि हीं सुरजे ज च ये है ॥ १७६ ॥ दोहा ॥ छटे छटा व  
 त तें सटकारे सुकुमार ॥ मनु वां धतें वें नौ वधे नील  
 ले वार ॥ टीका ॥ यह नाइ का के वार नु पे नाइ कौ

रोज्यो है सुनाइ कासों कहतु है अथ वा सघीसों को है कवि  
ह की उक्ति होइ ॥ कविता ॥ सोहत है सुकुमार महा उप  
माकों सिवार न लागत नेरो ॥ मेच कलंगे वे सुगंध लसे ह  
न फिरें न हीं फेरे ॥ छुटे छुटा वत है जगतें इन  
तिकटों नै से हेरो ॥ नीर जने नी कहा कहिये  
वैनी बंधे कचे तेरो ॥ १७ ॥ टा दो हा ॥ कुटिल  
टि परत सुषवटि गे इ तो उदो तु ॥ वं क व क  
दां मरु पे या हो तु ॥ टी का ॥ यह सुष पर छ  
अधिक भई है सुसघी सघीसों कहति है सघी  
को है नाइ कु नाइ कासों को है कवि ह की उक्ति  
वेता ॥ जग म गिर ही सुष चंद की अमंद दु  
हं हां ती होति आठै धां म धां म तै ॥ ता पर सुद  
कल सि गारु चारु न्या इ व स की नौ धन स्यां  
म तै ॥ इ ल्य प्रां न प्यारे की सों तो पे य ह दू ट त  
अल क सो भाल ही अभिरा म तै ॥ ये ते मान  
उम गि उदो तु वं क दि यै ते व कारी ज्यो रू पे या  
तै ॥ १७ ॥ ल ला ट अंगार ॥ दो हां ॥ घोरि प  
न च भ कु टा ध नु ष व धि कु स म र त जि कां नि ॥ ह न तु त  
रु नि म ग ति ल क सर सुर के भाल भरि ता नि ॥ टी का ॥

यहनाइकाकुलटावलाटअंगारुहसुसवीनाइकासौक  
तिहेनाइकनाइकासौकहै॥कविता॥कुंचितभौहकम  
नलेसेतिहिंकोजिहिकेसरिधोरिवनाई॥ताकोलैती  
कस्योतिलकेसुरकेगहितापरभाललगाई॥धिलतु  
जोवनकेमनमेंइहिसाजसिकारमनेजुअगई॥हेरि  
हनेजुप्रवीनकरंगनिहांनदयाउरकैकठिनाई॥१०॥  
दोहा॥नौकोलसतुललाटपरटीकोजटितजराइ॥द्वि  
हिवटावतुरविमनोससिमंडलेमैआइ॥टीका॥यह  
वलाटपरटीकोहेताकोउपमासवीनाइकसौकहतिहेन  
इकुसवीसौकहैसवीनाइकासौकहैकविकीउक्तिहोइ॥क  
विता॥जोवनजेतिजगगम्मगहैतिसिगारुप्रभासरसा  
वतुहै॥रीजरहैलखिलालकेलोचनमोहुहियेभरिआन  
तुहै॥सोहतुटीकोजराइजस्योतियभालमहाद्विद्वारु  
है॥मानहुंचंदकेमंडलमैदिननाइकुसोभावटावतुहै॥  
जुलमुलीवर्नज॥दोहा॥जिनैपटमैजुलुमुलीजल  
कतिअपअपार॥सुरतसकीमनोसिंधुमैलसतिसपल  
वडार॥टीका॥यहजुलुमुलिनिकोवर्ननुहैसुउपमास  
वीनाइकसौकहैनाइकनाइकासौकहैसवीसौकहैकवि  
कीउक्तिहोइ॥कविता॥जाकेकरनाभरनुबवकेदिव  
करसेनैनइदीवरनिकीद्विसरसातिहै॥अधरसुधा

परसे बदन मै किले कति ललित कोपोलनिकी दृति अधु  
काति है ॥ अंतर ललित जे नै वस मै जु लु सु ली कहै कवि  
कस जल कति अं भाति है ॥ मेरे जान सागर मे डार कल  
पदु मकी पखे वनिसहि तपु गट दर साति है ॥ १२३ ॥ वै  
दी वन न ॥ दोहा ॥ तिय मुख लखि हारं जरी वै दी वट  
तवि नोद ॥ सुत सनेह मा नै लियो बुध पूरन विधु गोद ॥  
टीका ॥ यह नाइ कवि भाल हीरा की वै दी है सु सवी सोभा  
उपमाना इक सौ कहति है कवि हू की उक्ति होइ नाइ क सौ ना  
रु उ कहै ॥ कवि त्त ॥ कनक वर नतन जगर मगर होत  
आपको उजास भौं न आसु पासु को नौ है ॥ सकल सै कलि  
रूप विरची विरंचि वाल धौं न कटि कठिन उदो ज जग  
गी नौ है ॥ ललित ललाट पर हीरा की लसति वै दी कहै क  
वे क द्य दे घं मनु ने हठी नौ है ॥ मेरे जान मोदु भरि अधि  
क सनेह करि पूरन मयं क भरि अंक बु धली नौ है ॥ १२३ ॥  
दोहा ॥ कहत सवै वै दी दिये अंद सगु नौ होतु ॥ तिय लि  
लार वै दी दिये अगिन तवट त उदोतु ॥ टीका ॥ यह वै दी  
दिये ते मुख की सोभा अधिक वटति है सु नार क सवी सौं  
कहै कवि हू की उक्ति होइ ॥ कवि त्त ॥ जो वन सौं मिलि ज  
गम गति अ पार ॥ आप महा मुनि हू को मनु देयर सभो

तुहै॥ कहै कवि कवसद्विपुंजनि सौं द्विजिरद्यो सरस  
सिगासवरसतसुधा सो तुहै॥ सवुको उचै सैं ही कहतुम  
हि मंडल मे वैदी के दियेते अंकुदसगुनो हो तुहै॥ वैहेनव  
नागरिके ललितललाटपर वैदी लाल लागे वटौ अ  
गिलत उदो तुहै॥ १५५॥ दोहा॥ माललाल वैदी ललन  
आधतरे हविराजि॥ इंदुकला कुंजनि वसोम नैरा हभय  
भाजि॥ टीका॥ यहलसिषनसमें नाइकाके ललाटपर वै  
री अकृतनको सोभा हे सुसधी नाइक सौं कहति हे कवि हकी  
उक्ति होइ॥ कवित्त॥ उदयसमें केरा काचंदु सौं वदनुत  
सी नईतरुनईकी उमंगजो रे रंगमै॥ कंचन किनारी वारी  
कांकेरजी सारीता मेदुरौ दरसतिके सोमंग उतमंगमै॥  
मालपर रोचनको विंदुह विदे तुतापे अद्वितलसैं ज्योग  
गसरसुतिसंगमै॥ जासुमानितनको सुधाकरकी कला  
मालो वसीहे निसंवा अत्रनी सुक्ताके अंगमै॥ १५५॥ दोहा  
माललाल वैदी ह्येहुटे वारह विदेत॥ गहौराह अति  
हकरिमनुससिसूरसमेत॥ टीका॥ यहनाइकाके ललाटपर लाल वैदी हेतुस तापे वारह  
सुसोभासधीनाइक सौं कहति हे अथवा सधीसधीसौं अ  
रकविहकी उक्ति होइ॥ कवित्त॥ नवनागरिके सु

घचंदकींचारुप्रभासरसीसहतेसरसी॥पुनिवेंदीवि  
 राजतिभालपेलाविलोकतकाहिकेरेनवसी॥असता  
 परस्पांमसुदेससिरोरुहदृष्टिद्वयेअतिअपससी॥म  
 नैंअनिगहेअहिआहटरोहनेयेकतहीदोअरुससी  
 दोहा॥पचरंगरंगवेंदीलसतिउठतिअउमंगीमुषजे  
 ति॥पहरैचीरचिनौठियाचटकचौगुनीहोति॥टीगा  
 ग्रहनाइकानाइकनेजेसीद्विसौदेवीहैतेसौयभांति  
 सवीसौकहतुहे॥कवित्त॥ललितलिलारपररेसैप  
 चरंगवेंदीघरीअगिउठतिअमंदमुषजेतिहे॥अंल  
 नसेअंजनसहितअनियारेनेनअपरअरुनगारंगरे  
 कारीपोतिहे॥गौहैलघिवेकीद्विसौहैवेउठांहेकुच  
 लचकतकाटिमुनिमनरसभोतिहे॥गहरेसरूपतनप  
 हिरैचिनौठीचीरचौगुनीनिकाईकीचटकचासदेति  
 हे॥१७॥देहसोरठा॥मंगलविंदुसुरंग॥मुषसतिके  
 सरिआठगुरु॥रुकनारीलहिसंग॥रसनयक्रियलोच  
 नजगत॥टीका॥ग्रहसिधनधमेंललाटकोअंग  
 रहेसुसवीसवीसौकहतुहेकविदुकीउक्तिहोइ॥न  
 वित्त॥मंगलविंदुसुरंगविराजतुनेनिनिनाजमहा  
 विहायो॥अननचंदुकलापरिपरनेकेसरिआडनने

भांन  
 १२५  
 म

गुरु आये ॥ कसकै हंडकनारी मै आइ मनो परि पूरन जो ग  
वताये ॥ नैन भरे रस की वर घा करि चैन समूह हिये उम  
गाये ॥ १५८ ॥ डिठौं जा वरन जा ॥ दोहा ॥ लौं नै सुह डी ठि  
न लगे यौ कहि दी नौ ई ठि ॥ दूनी द्वे लाग न लगी दिये दि  
नौ ना डी ठि ॥ टीका ॥ यह डिठौं ना को वरन नुह सुनाइ  
नाइ का सौं करे सघी सौं करे सघी नाइ का सौं करे ॥ कवि  
न ॥ तहि न घेरति की हुतिल जति राजति ओपसि गार  
किये तें ॥ भौह नुकी वरनो न परे ह वि मोहन न्या इही न  
न लिये तें ॥ सुंदर आन ल डी ठि न लागे कह्यो अ लियो  
हितु मा निरिये तें ॥ तो मुषपे अ वला गन लागी री दूनी  
ई डी ठि डिठौं ना दिये तें ॥ १५९ ॥ दोहा ॥ पियतिय सौं ह सि  
कै कह्यो लघ्यो डिठौं ना दीन ॥ चंद्र मुषी मुष चंदे तें म  
लौ चंद्र समकीन ॥ टीका ॥ यह डिठौं ना वरन न ना  
कनाइ का सौं करे अथवा अंगार कर्ता सघी सौं करे ॥  
कवि न ॥ प्यारी को चारु सिंगारु निहारि दिये पतिके  
अति मोह भस्यो है ॥ चारि चषो डब ही मुसिकाइ सई  
विधि रू पु लके लिध स्यो है ॥ जामुष की जल के नुप  
भा सकल क मय क धिरा निर स्यो है ॥ सो मुष तें न रि

वैनादे आजु भलें यह चंद्र समान कस्यो है ॥ १९ ॥ सु  
ख वर्जनं ॥ दोहा ॥ हाहा वदन उघारि दुग सुफल  
करें सव कोइ ॥ रोजु सरोजनि कें परे हंसी ससी की  
दोइ ॥ टीका ॥ यह मुख वर्जन है सुसधी नाइ का सों  
कहे है नवोटा के प्रसंग मै वने मानुहुडा वै सधी जे  
हं कहे तो वने ॥ कवित्त ॥ लोचन लेखे को फलु सुफ  
ल हं मारो करि प्यारी प्रांन प्रति कों सने हर सली न क  
रि ॥ तें हों पाई परमनि काई अविधि अवये तो वषभा  
न की कुवारि अरवी न करि ॥ टारि पुरु धंघट को हाहा  
उघारि मुषुनि जुद्ध विपानि प्रमै पौ के नैन मी न करि ॥  
जद्ध विद्वी न करि ससि हि मली न करि सोतिनु कौ ही  
न करि प्यारे कों अधी न करि ॥ १९ ॥ दोहा ॥ सूर उदि  
त हं मुदित मन मुख सुं समा की ओर ॥ चितै रहत चहुं  
र तै निरि चत चषनु चकोर ॥ टीका ॥ यह मुख व  
र्जन सधी नाइ का सों कहे कविकी हु उक्ति दोइ ॥ १९ ॥  
१९. एनको गनुद वषनांन की कुवारि तेरे मुख को प्र  
काश जग मगतु अमंद है ॥ यार्तें तें लोकिहु विर  
धिल रहे भू भां वरी भरतु फिरे प्रादे नदन है ॥

की



सहंनिसां कौर है विधि न विना न कहु देवे उ मगत  
अति जानर को वंदु दे ॥ सकल विलो सदा डिये व  
आसला गेर है भौर जानै कमल चकोर जानै चंदु  
है ॥ १६ ॥ सो वा ॥ हृषो हृषो वीलो मुख लै स जीने व  
चल चौर ॥ मनो कलानिधि जल मले का लिंदी के  
तीर ॥ १७ ॥ वा ॥ यह नाइ का के मुख को वर्ननु सवी  
नाइ कसों कही ते हे नाइ का हसों कहे तो संभवे ॥ वा  
विता ॥ भावती विहारी कों गेई हो लैन गिर धर ता  
हिरे धें मेरो मनु पखौ हृषो विभीर में ॥ कल पांन पार  
तरु नाई को लु नाई होति जगर मगर वाके सों नै से स  
शेर में ॥ धजन भवर विवकीर की प्रभानि दर व  
दनु दुराई वैठी जीने नीरे चौर में ॥ मेरे जान पूर  
न कलानि सों जिल मिला तु सर द सु धानिधि के  
लिंदी के नीर में ॥ १८ ॥ वा ॥ जी वन न ॥ दादा ॥ कि  
यहाइ ला चित चाइ लगि वजि पाइ लत व पाइ ॥ पुनि  
सुनि सुनि मुख मधुर धुनि क्यौ न ला लुल लचाइ  
दी वा ॥ यह नाइ का की आस कि जानि सवी नाइ  
का सों कपीति वटाइ वै कौ कहति हे वा जी वर्ननु  
है ॥ वा ॥ गज गति तेरी हैरी लह त वही ते भ

श्रीगणेशाय नमः अथनेहतरंगश्रीमहाराजबु  
 धसिधजीकृतलिवदे दोहा अरुनकोटिद्व  
 वितनविसदलसतमुकटमनिरेष १ सिवसु  
 तकदिसुषदरसतै दरसेसिधिअसेष ५ ह्य  
 प्य मदनमोदकरवदनसदनवेतालजालवृ  
 त नक्तनीतिनंजनअनेकजिनिअसुरवंसन्त  
 त चंद्रहांसकरचंद्रचंडमुंडादिसहिरमय अ  
 न्तजालजुतनाललाललोचनविसालजय  
 जयजयअचिंत्यगुनगनअगमअगमसुषचे  
 तंन्येमय जयदुरितहरितदुर्गजनानिराजति  
 नवरसरूपमय २ दोहा रूपसुधारससारस  
 वरनहंसामिलिसंश नीरजनवरसरूपकरिने  
 हतरंगतरंग ३ रसाविनाबज्जननावअर  
 अरुसंचारीनाव नाथावरनिबन्नाइहौजो  
 दरसनदरसान ४ जामेष्वाहीनावरतिसो  
 वरवौंभृंगार इकसांजोगविपोगइकताके  
 होइप्रकार ५



आचुनरी नौ दिङ्गसूमी सुगंधस  
दमकृतनगोहै ॥ नंदनजात्रविठचै  
दिपरीसीपरीप्रतिलाजनि होरै ॥ प्र  
प्यारैनेवीचहीघाडीइरीरसबुटा  
हीनरिइरै ॥ ११ ॥ गुणातजौवना ॥  
भावप्रउन्नरौहोनेप्रांइपरहेरतजाडी  
सीपहराइमिसहीप्रांनिसुदिनहेरतजा  
॥ १२ ॥ यहनाडीप्रासुग्याप्रातजौवनास  
सषीसौइहातिहै ॥ इवित्त ॥ प्यारैनेद्वजा  
वहवाएगुएवैलीनबेजौवनेप्राजो  
दिनद्वैइतेनरातिहै ॥ इंपतिचरत्रचित्तु  
चितवनलागीप्रांमप्राइहानीइहुडान  
नचरैहै ॥ इंचप्रउशेजनिप्रीप्राप्रस  
हीनहीनेसुइलजौहीसीचितौनिह  
तिहै ॥ सबश्रीवचाडी

पुपने प्रगच्छे जानिजे जोवन नूपा ॥ ११ ॥  
१॥ तनमननै ननितं वश्रौ वडो शीजा प्र  
श्रीन ॥ १२ ॥ नाशिष्ठानव जोवन नु वित  
मुग्धा सवी जोवचनु सवीसौ ॥ जोवन नु  
पमहापरवीन विचछिन ता शी श्री रीति  
ठही हो ॥ राजुल योनवला तन श्रौ प्र  
सत्रु श्री संपतिलुटिल्वही हो ॥ दुरि श्री  
सिसुता प्रसहा शी प्रचातुरता वितच  
नही हो ॥ नैन ६ रो ज नितं व नि श्रौ प्र  
मेगिनि श्रै वठवा शी दही हो ॥ १५ ॥  
रतै ठरतै वर पर दही मर प्र मनु मं न ॥  
डी हो डा वठि चले चितु चतुरा शी  
दीका ॥ यह ना शी प्र श्रौ जोवन





पेसुनी पाइलकी ऊनका सुहाईरी ॥ तवहीते  
 इरलागी अति चटपटीतु वमिलिवेकौलल  
 कन्हाईरी ॥ वीनके सुरनिहंते मधुरसरस  
 कालिहंतेरी उनिवांनी सुनिपाईरी ॥ काहे  
 के उरमदनमरूरउठे याहीतं हो कहनजर  
 नौ आईरी ॥ १६ ॥ दोहा ॥ छिनकुह्वीलेला  
 हनहिंजौलौं वतरात ॥ उषमहृषपियूष  
 गलगिभूंवनजाइ ॥ टीका ॥ यहनाइकाकी  
 गीकी मधुराईसधीनाइकसौं कहतिहे ॥ कवि  
 जाकी सुनेधुनिवीनुकरागहिला जियकीव  
 गतिहे ॥ जो सुनिके कवि कसकहें मुनिकी  
 तसा अनुरागतिहे ॥ जो लौं ह्वीलेललातम  
 बहवा लनवातनुपागतिहे ॥ तौ लौं महषा  
 षकी उषकी भूंवनके सेंहंलागतिहे ॥ १७ ॥  
 केजादी वनन ॥ दोहा ॥ जरीकोरगोरेवद  
 वठीषरीह्विरेषु ॥ लसतिमनोविजुरी कियेंसार  
 ससिपरवेषु ॥ टीका ॥ यहनाइकाके मुखपरकिला  
 गीकी सोभासधीनाइकसौं कहतिहे ॥ कवित ॥ अ  
 उमेनिहारी वषभांनकी दुलारी दुतिधारे



का

कलसिगारतनसाजिके जगमगजोतिनवजे  
 नकीदेअतहीं दुगनिकोंगयोदु वृंददसवभाजिके  
 नसुषसारीतापेकंचनक्रिनारीगोरेअनलके  
 हूं और फवीछ विहाइके सररकीपुल्पोकेसुधा  
 धिकेअसुपासुमानोरहोदांमिनीकौमंडुलवि  
 जिके १५६॥ थोहवनेनसोह ॥ नासामोरिन  
 इदुगकरीककाकीसोह ॥ कोटेसीकसकतिहिये  
 डीकरीलीमोंह ॥ टीका ॥ यहजाइकाकीमोंह  
 इबेकीचेष्टादेघीसुजाइकसघीसोंकहतुहे ॥ क  
 न ॥ मोतनहेरिपरोसिनिसें वतरांनलगीव  
 तारसहाकी ॥ येकरतीरतिकीदुतिहोतिन  
 निकईलवैसमताकी ॥ नोकचटाइउचाइ  
 ठनचाइकरीदुगसोंहककाकी ॥ बाहविक  
 टीलीसीमोंहकरेजेमेंसूलसीसालतिवा  
 नि ॥ थनेनवनेन ॥ दोहो ॥ वारोवलितोदु  
 रअलिषंजनमृगमीन ॥ आधोटीठिचिते  
 कियेलालआधीन ॥ टीका ॥ यहजाइकार  
 नुकीअधवलीचितवनिदेघिनारकुअ  
 योसुसघीनाइकासोंकहतुहे ॥ कवि

ऊपकोरतनारे अनियारे सोहें सहज टारो मन  
मधमत वारे है ॥ लाज भर भरे भारे चपल निहारे  
रे सांचे के से टारे प्यारे रूप के उज्यारे है ॥ आधी चि  
त्रनि में आधी न कियौ तैरी हरि टौ नै सेव सी क  
रके लौ नै ये निहारे है ॥ कमल कुरंग मी न धंज  
न चवर वषभांन की कुवरिते रै नै न निपे वारे  
है ॥ १६॥ दोहा ॥ चमचमात च चलन यन विच धंध  
टपट जीन ॥ मानहुं सुरसरिता विमल जल उदक लत जु  
गमीन ॥ टीका ॥ यह नाइका के ने वनु की सोभा सवी  
नाइक सौं कहे नाइ कुहुनाइका सौं कहे सवी सौं कहे ॥ का  
॥ रूप की रसाल आ जे देवी वृजवालय के केती सोभा स  
वी वाके सौं नै से सरीर में ॥ एस्थोन टर तु वहा उमोदिये  
क्यौं हूं वैठी सुवटां पिगुर लो जनु की भीर में ॥ कैं हं कवि  
अति चपल विसाल ताके लोचन जु छगल जल क  
जी नै चीर में ॥ क्यौं नमनु होइ क्वि निरविचाधी न वि  
पीन उदक लत मानौ सुरसरि नीरे में ॥ १७॥ दोहा ॥ क  
रसौ चुर कि कैं वरे उठौ हें मै न ॥ लाज न तो ये तर फर  
न वंद सी नै न ॥ टीका ॥ यह नाइका के ने वलाज  
हते दो अलके वम वंद मोकर तै दे सस सी न उद

सौं कहति है नाइकाइ केरे सवी सवी हसौं केरे ॥ कवित्त ॥  
नेन नवनागरि केतर लतुरंग अंगह विकीतरंग रंग  
धरक धर धर ॥ मदन प्रवीनति नै फेरि वी सधावतु है  
घटकी ओर औसौ कौंतिगु करै करै ॥ कीने चाउचाउगी  
सौ चुर किचपल होत घरे हीउ डौं है तेही उमग भरै भरै ॥  
जाजवागवसयेतर फरातताई भरे करत बुदीसीपु  
धरत हैर हैर ॥ २० ॥ दोहा ॥ सायकसमघायकनयक  
रगे वविधिरंगगत ॥ जवो विलविदुरिजात जल्लक  
लजातलजात ॥ टीका ॥ यहनाइकाकेने वनुकी सोभ  
सवीनाइकसौं केरे नाइकनाइकसौं केरे सवीसौं नाइ  
केरे ॥ कवित्त ॥ साइकसघाइकेहती वनतरलरुगसौं  
स्याम अरुनविधिरंगगत है ॥ केहकवित्त सजाके  
रमै भिदताहि सुधिनरहततं ॥ दुंगत घुंमियनना  
है ॥ येनेपर भोये है विषमविष अंजनसौं योहीतं विस  
वविधाउरसरसातिरे ॥ सफरो विलोकि जल्लविल  
विदुरतिमग भरकत विपुल्लये जात जल्लजात है ॥ २०  
दोहा ॥ वरजीते सरमै नके असेरे अमै न ॥ हरिनीक  
नेना जुते हरिनीके येनेन ॥ टीका ॥ यहनाइकाके  
वनुकी सोभासवीनाइकसौं कहति है ॥ कवित्त ॥  
घरेकीते वंजनकमेरेकीने कंजपुंजउपमाकौंनेरेव

रं च कल गे नै हें ॥ सौं हि त वि स ल ये र स ल स ल स ल स ल  
ति लु कों दे वें म नु ह र त क र त चि त चें नु हें ॥ च प ल ब र  
ह व र जी त त म द न स रं सु य के नि क रं ज्य र दे वें चें सें म  
नै हें ॥ कां म दु ष दं र नी के वु ष भं न नं दि ली के ह रि नी के न  
न निते ह रि ली के नै नै हें ॥ २०२ ॥ दो हा ॥ सर सि गार मं ज  
न की यें कं ज नु मं ज नु दं न ॥ अं ज न रं ज न हं वि नां वं ज न  
गं ज न नै न ॥ टी का ॥ य ह व ना इ का के ने व नु की सो भा  
स वी ना इ क सों कहे ना इ क ना इ का सों कहे स वी सों कहे  
क वित्ता ॥ कं ज कुरं ग गु मा ल नु गं ज न पी म न रं ज न  
हें च्च नि यारे ॥ वं ज न मी न नु के म द भं ज न अं ज ह वि  
नु ये कं ज रारे ॥ ल ज स मं ज सु सी ल ह सी र स रं ग न  
रे वि धि में न सु धारे ॥ क र्क कहे उ प मा क ही यें ति य या  
ज ग में दू ग ते रे उ जारे ॥ २०३ ॥ दो हा ॥ जो ग जु गं ति सि  
ष ये स वै म नों म हा मु नि में न ॥ चां ह त पि य अ दे त त  
से व त कां न नु नै न ॥ टी का ॥ य ह ना इ का के ने व नु की  
सो भा अ रु त रु ना ई को वित्ता सु पि य की चां ह स वी  
ना इ क सों कहे ति हे स वी स वी सों कहे ॥ क वित्ता ॥ ल  
नो उ प रे स म हा मु नि मी न के त नु को जो ग क ल्पा कृ स  
ल वि म ल विल्ल स तु हे ॥ त न म न मो ह न सों ये क भ यौ च

प्यारेकीहुहाईजिसेदेवतहोविरहकलसदुषसक  
नसतहै॥सरलहैसुभाइउरमांजधरेस्यामहविप  
रीतेरेनेनमनहरतमहतहै॥२५॥पुतरीवन  
नादोहा॥सबअंगकरिराघीसुघरनाइकनेरसि  
घाई॥रसजुतलेतिअनंतगतिपुतरीपातुरराइ॥टी  
का॥यहनाइकाकीपुतरीनुकीसोभाअरुसनेरके  
अधिकईसषीनाइकासोंकहतिहै॥कविता॥चा  
प्रभापलकैजलकैमदुपीतपटीपहरेसुघरीहै॥ना  
नेहसियाइसेवेरसभेदासधेइप्रवीनकरीहै॥अ  
हैअतिचाइनिसौगतिलेतिमनौवहुभाइभरीहैले  
तिरिजाइमनेअतिचातुरपातुरराइकिधौपुतरीहै॥  
कटावृवनना॥दोहा॥लागतकुरिलकटाहसर  
क्योंनहोइवेहाल॥कउतजुहियहिदुसालकरितउ  
रहतनटसाल॥टीका॥यहनाइकाकेनेअनाइक  
केहरेमेचुभेहैसुसषीनाइकासोंकहतिहैनाइकुस  
षीसोंकहसषीनाइकासोंकहै॥कविता॥भेदेसूधे  
रेतौतनकोवठावैपीरजांनियेहैवातेजियसक  
डरातहै॥लागेवृजनागरिकेकुरिलकटाहसर  
रक्योंनहोहिंविकलविहालसवगातहै॥वि  
मनिधानअतिपारथकेवानहतेमेरेजानइ

के अने उत पाते हैं। दे धिये न घा इ उर कं ट त दु  
सा ल करिये ते पर दे घौ न ट सा ल र हि जाते हैं।  
ना सा वे ध व र्ज न ॥ दोहा ॥ वे ध त अ निया दे न  
य न वे ध त करि नि न वे धु ॥ व र व ट वे ध तु मो हि  
यो तो ना सा को वे धु ॥ टी का ॥ यह ना सा के वे ध की  
सो भा ना इ कू स वी सो क ह तु हे ॥ क वि ता ॥ अ निया  
रे नै नै वे ध ता वी रा नै म न क ह अ चि र जु पें नै स ह ज सु  
भा इ कै ॥ तो हि नि र घ त व प्र मा न की कु व रि अ र भु त की  
त रं ग र ही मे र उ र ह्वा इ कै ॥ व र व ट मे रो हि यो वे ध तु हे प्पा  
री ते री ना सि का को वे धु म नु र हे ज्यो धि रा इ कै ॥ सो हे कै  
धौं ने ह की नि का इ कै ॥ नि के तु क्रि धौं सु व ही म धु र ने सु  
धे र की नो अ इ कै ॥ २०१ ॥ ना क भू ख न व र्ज न ॥ दो  
वे स रि मो ती दु ति ऊ ल क प री ओ ठ प र अ इ ॥ चू नो हो इ  
न च तु र ति य क्यो प र पौ ह्यो जा इ ॥ टी का ॥ यह ना इ का  
के ओं ठ ज्ये सै उ ज्ज ल हे जु मो ती की ऊ ल क ल ना री के म धु स्व त  
ऊ ल क ति हे सु य ह भू नो जा नि पो छ ति हे स धी या की न्नां ति इ  
रि कर ति हे अ थ च्चा मे ती की ऊ ल क दे धि स वी नि र धा र करि धि  
वे ध को पौ छ ति हे जो ना इ का स धी सो क हे तौ न्प ग र्वि ता  
हो इ स धी को व च न ना इ का मे ॥ क वि ता

वन्द्यो तियते रोजगमगजो तिसमूह करै ॥ देवतिचार  
सीवार हो चारै ॥ हिये हरिको हरि क्यौ नहरै ॥ वेसकि  
मुकता की प्रभा अति उज्जल अंलि परी अ धरे ॥ होत  
चूनी लण्णो मगलो चनि क्यौ पर सौ अवपौं छिपे ॥ २००  
नख नना दोह ॥ ३॥ इहं देहो मो तो गयतं न धरति  
निसांका ॥ जहि पहिरै जगद्गणू सति लसति हंसति सी  
नाका ॥ टीका ॥ यरनाइ काकी नय क्री सोभा सवी कही  
हे अ न्योक्ति कविता ॥ १॥ कविता सुर निसमेत  
नाक या होत कहत मुकते निजत मुकत पुरी सी दर सति  
हे ॥ कहै कवि कसम नमो हनको मोहि वै कौ मोहनी की  
सिद्धि मानो सोभा सर सति हे ॥ तो पहिरै ते जग नय नग  
सति सोभा सर सति मानो नासिका हसति हे ॥ अरे न  
उर मै निसंक्रांतुं गरवु करि देई मुकता के गय सहित ल  
ति हे ॥ २०१ ॥ सो कवु जे जा ॥ ३॥ ॥ जटित नील मनि  
गम गति सीं क सुहाई नांका ॥ मने अली चंपक बली  
सिर सुलेतु निसांका ॥ टीका ॥ यरनाइ काकी नाक मै  
कहे ताकी उपमा कविकी उक्ति ॥ ॥ ॥ पूरन मय  
के कि अंक्रमे लसतु की रुने क निरसत ही रु रितु चि  
चेतु हे ॥ प्रपु लितु पं क ज पे सो हे कर हा ट कि धों तिल  
सुमन सुष सौर भसमेतु हे ॥ नील मनि जटित हवी

तेरी नाक पर सौं कयों लसति मानो सो भाको निकेत  
हैं। मेरे जोन मुकलित चंपक की कलिको पै वै ठेके  
लिसा ब्रह्म निसंकर सुले तु है ॥ २९॥ त्यों ग व न नों  
दोहा ॥ जदपिलें गल लितो त अतं न प हरि इ क अं  
सदा संक व टि ये रे रे च टी सी ना के ॥ टी का य ह ना  
इ का की ना क में लों ग दे धि करि ना क च टी सी दे धि कें  
स खी ना इ का सौं कह ति है ॥ क वित्त ॥ कि धौ हें व द न ह  
वि दी प को सु मे रु जा की ज ग र म ग र जो ति पू र न प्र का रि  
का कि धों क वि क स्य चा र चं प क की क लिको है सह ज  
सु गं ध नि क स ति जा तें स्त्रा सि का ॥ ज द पि ल वं ग अ ति  
ल लितो ल स ति त अ तं म ति प हि रि ड र प ति उ र दा सि क  
मा न के भ र म लि यें भौ ह न विलो कि रे रे मू ग ने नी  
नि र धि च टी रो ते रो ना सि का ॥ २९॥ त स्यो ना व  
न नं ॥ दो हा ॥ ल स त से त सारी ट प्यो त र ल त स्यो ना  
का न ॥ प स्यो म नो सु र स रि स लि ल र वि प्र ति विं व वि  
हं ना ॥ टी का ॥ य ह त स्यो ना वर् न न हें स खी को व च न स  
खी रें ॥ ज इ क इ कै व च क वि हू की उ क्ति हो इ ॥ क वित्त ॥ ह  
वि सों नि हारी व ष भां न की दु लारी आजु सक ल सिं गार  
सा ज व न्यो हें सु ठां न के ॥ क हें क वि क स्य चा र प्र भा की  
निकाई



सुखसत्रतिजिनीसेतसारीटप्योतरलतस्योना  
नकतुवाकेकांनके॥मेरेजांनदेवनदीजलमल  
तुपेधियेपूगटपतिविंभोरभांनके॥२१२॥कांन  
भूवृजवर्जना॥देहा॥सालतिहेजरसालसो  
केयोइनिकसतिनांहि॥मनमथेनेजांनोकासीवृ  
भीयुभीजियमांहि॥टीका॥यहनाइकाकीयुभी  
सोभाभाइकुसधीसोकहेतुहे॥कवित॥राधिका  
प्यारीकेआंननेपेह्वितीनिंदुलोककीआंनिगुभी  
हे॥मैनिरधीजवतेतवतैमतिमेरीलुभाइतहांहीचु  
भीहे॥रूपकेवोहिथकांनमेंवाकैविराजतिवो  
अनूपलुभीहे॥सालतिहेसुमनोजकेनेजेकीने  
मनोउरमाहदुंभीहे॥२१३॥तरिवनवर्जना  
तरिवनकनककपोलदुतिविचवीचहीविक  
लाललालचमकतिचुनीचोकाचिन्हसम  
टीका॥यहतरिवनकोसोभासधीनाइकसे  
नाइकासोकहेअरुनाइकुसधीसोकहेतो  
विताहोइ॥कवित॥आजुकीवनकवरनतव  
तेरीहृदिकीहृदानुकीघटासीउमगतिहे॥व  
सरसेसिगरआपजोवनकीजोवनकीकांति

जो तिसी जगति है ॥ कलकत से ॥ ननु कौललित  
कपोलनिकी दुति में समझ गयो ॥ अद्भुत गति है ॥  
स्वप्न नपारे की सों चारु चमकतिये तो लालुला  
लुचुनी चौका चिन्ह सी लगति है ॥ २१४ ॥ मुरासा  
वर्नने ॥ दोहा ॥ तसे मुरासा तियु श्ववन यों मुक  
तनिदुति पाइ ॥ मानो पर सकपोल के रहे स्वेदकन  
दइ ॥ टीका ॥ यह मोती को मुरासाना इका के श्व  
नमै है ताकी सो भादे धिसवी नाइक सों करति है ॥  
यवाना इका के कपोल पस्वेद दे धिसवी नाइक सों मु  
रासा को वर्ननु करि कहै तो लहिता जानिये ॥ अवि  
न ॥ आजु नवनागरी को आगरी विलोकी द्विदि  
वे कौनै नलन चाइल लकत है ॥ कहै कवि जसु वर  
वांनिक विलोकि ठगेरी जपगत वतै लगत पलकत  
है ॥ तरुनी के श्ववन अमो लमुकता फल के करन  
भरन असी आभा हल मुकत है ॥ मेरे जान पर सि  
कपोल इनहं के उर उलह्यो पस्वेद तेई वुंद जलक  
तै है ॥ २१५ ॥ मुसकांनि वर्नने ॥ दोहा ॥ नवसि  
वरूप भरे धरे तो मागत मुसकांनि ॥ तजत नलो

अथवानाइकुमुसकांनिदेशोचारतेहेसुअप  
नेनुकीआसक्तिवहतेहेकवित्तदेवतहं  
मेवउमठसेपरेंनविचारतगोंहंरावरेस  
अनुपसौपरिरेहेहंजउनघतेसिषलौहं। प्रागाह  
इतनैपरतोमपुरामुसकांनिअघातनत्पौ  
भयेअतिलालचोयेललचांनिकीवादि  
तक्योंहं॥२१॥ दुसुवर्ननं॥ दोहा॥ नेव  
वांनितजिलघौपरतुमुषुनीठि॥ चोकाचम  
धिमेंपरीचौधिसीदीठि॥ दोहा॥ यहअक  
सीजोनिगुरुसवीनाइकासौसीकाकेपु  
काकीचमककीवडाईकरैअथवानाइकुदेन  
केहेतोसंभवे॥ कवित्त॥ सीसफूलुदमक  
लकुजलमलातुजोतिकोसमूहजगमगतुअम  
भालकीचिलकचारुजलककपोलनुकीउम  
रतुअतिहुतिनकोबंदुहे॥ हाहोदेंकंवालिनेक  
कांनिकांनिवानितजिचकितेकरहतुचतुरन  
नहुहे॥ चोकाकीचमकहीचषनुचषचौधी  
ति॥ चाहोनपरतुनीकेंचौरुमुषचंदुहे॥ २१  
टीवनेनं॥ दोहा॥ डोरठोडोगाइजहिनेनक  
मारि॥ चिलकचौधमेंरूपठगुहांसीफांसी

टीका ॥ यह ठोड़ी गाडको बर्ननु नाइ कुलाइ का सों कहै  
सवी सों कहै सवी नाइ का सों कहै ॥ कवित्त ॥ केसवु  
केवनके उपकूलत ही भुक्टी गिरिओटविचारे ॥ चा  
रुलितारसिंगारकी चौधिमे देतु पुचंड दगा नहिहा  
रे ॥ फांसी गैरे मुसिकांनिकी पारिकें ठोड़ीकी गाडकुआ  
हिडारे ॥ प्यारी महाठगुतेरो सरूप दयातजिनन  
हिनुमारे ॥ २९ ॥ लीला वली नंदोहा ॥ ललि  
मली लाल लनवटी चितुकह विदूना ॥ मधुहा प्र्यो  
रुपस्यो मनो गुलावपुसना ॥ टीका ॥ यह नाइ काकी वे  
नीलाकी सोना सवी नाइके सों कहतिहे ॥ कवित्त ॥ कुं  
गारिकियो मनो देहु महा सुकुमार सुगंधको भोना ॥ ३० ॥  
भस्यो चंद्रसो अननुपीतके मनको ललचौना ॥ ठोड़ी  
डेमें स्नांमलविंदु निहारत कृष्णधके मनगोना ॥ के  
नगुलावके फूलमें मत्तपस्यो मनो भौरहोना ॥ ३१ ॥  
वर्ननं ॥ दोहा ॥ घरीलसति गेरी गैरे धसति पांन  
की पीका ॥ मनो गुली वंदलालकी लालेंदुतिलीका ॥ टी  
का ॥ यह कंठ वर्ननहे सुकुमारिसवी नाइके सों कहै अथ  
वानाइका सों कहै ॥ कवित्त ॥ प्यारे मै प्यारी तिहारी ल  
वीनवते सिखलें सुनिकाई भरीहे ॥ केसरिकी सुकुम  
रिमनो हविपुंजसों ओपिविरं चिकरीहे ॥ गेरीके गेरे  
गैरे मनुमोहति सोहति पीककी लीकधरीहे ॥ चासगुली व  
दलालकी लालमनोदुतिकी प्रतिलीक परीहे ॥ २९ ॥

वर्ननं॥ दोहा॥ कुचविरिचटिअतिथकितेकेच  
लीडीठिमुषचाड॥ फिरिदूरीपरियेरहीपरीचिवुक्  
लीगाड॥ दोहा॥ यहअंगदेवतदेवतदृष्टिठोडीकीगा  
उमेंजाइपरीसुटरतिनाहींसोनाइकुअपनीअवस्थ  
नाइकासोंकहेअथवासयीसोंकहे॥ कविता॥ डी  
नदीअवलीतरिनीठिरुमावलिकांननतेंनिकरीरे  
पीनउरोजपहारचठीअतिथाकितऊनऊठाठह  
हे॥ चाहिचलीमुषमंडलकीहविवीचहीलेविधिअ  
सोंकरीहे॥ ठोडीकीगाडमेंजाइपरीसुपरीयेपरीनतह  
तेरहीहे॥ २२॥ दोहा॥ चलननपावतुनिगममगुजग  
उपजोअतिवासु॥ कुचउतंगगिरवरुह्योमेंनोमन  
मवासु॥ दोहा॥ यहकुचवर्ननुनाइकुनाइकासोंकहेस  
कीलेंकहेसयीकहेतौहवें॥ कविता॥ लूरतुमालु  
मुनिदनेकेंमनसांविसेतिकेतैनिवह्योहे॥ वेदकेपं  
चलेअहिकेसैंसबेजगमेअतिवासुभयोहे॥ कथकेरि  
लीसरितासमलीवनपासगदासुलह्योहे॥ उअउरो  
पहारकेबेदोरमनोजबहीपमवासुगह्योहे॥ २२॥ दो  
कीवर्ननं॥ दोहा॥ दुरतनकुचविचंकेचुकीचुप  
सारीसेत॥ कविअंकनिकेअरथलेंपुगटदिधाइदे  
दोहा॥ यहकेचुकीकेवीचकुअसोभाउपमानेहतिनि  
प्रभादेविनाइकुनाइकासोंकहेसयीनाइकासोंकहेव  
कसोंकहे॥ कविता॥ कंचवुरनमनहरनअडोलग

वैसजालजोरेसीसस्त्रांमतांधरतेहैं॥उन्तकरेरेखरेच  
कलेलुनाईभरेमदंनवसीकरसेमनकौहरतेहैं॥कृच  
नेचीरसेतकंचुकीतिलौंहीमांजप्यारीयेदुरायेतेदु  
उधरतेहैं॥कहैंकविक्रमजैसेसुकविक्रेचांकनुमेंअ  
धउमगिडीठिप्रगटपरतुहैं॥२२३॥उरवसीवृज्ज  
दोहा॥उरमांनिककीउरवसीउटतुघटतुइगदागु॥उ  
नकतुवाहिरभरिमनोतियहियकौअनुरागु॥दी  
यहउरवसीकीसोभासवीनाइकसौंकहतिहेयाके  
अनुरागकीपूरनताप्रगटकरतिहेसवीनाइकासौं  
कहैतोतियपरेसंबोधनुहोइनाइकालहिताजांनि  
ये॥कवित्त॥आजुकीनिकाईवरनूजनवन्तिमे  
पेरूपकीतरंनिअनंदुवरसायोहै॥अंगअंगआभूव  
नजोतिजगमगहेतिअसौतोवनावरतिरंभाहन्का  
योहै॥मांनिककीलसीउरवसीतियउरपरदेगानि  
कौदुवदेदुदेषतनसायोहै॥मेरेजांनपूरनकेअंतर  
कौअनुरागुहियोभरिवाहिरहलकिहविहायोहै॥२२५  
हाथवर्जल॥दोहा॥वडेकरावतआपुसौंगरेवे  
जोपीनाथा॥तोवदिहैंजोराधिहोहाथनुलविम  
नुहाथा॥दीका॥यहनाइकाकेहाथकीसोभासवी  
नाइकसौंकहतिहै॥कवित्त॥चारुहथेकी



लोटवर्जनीं॥ दोहा वरुत निरुसि कुचकोरु  
उतगोलभुजमूल॥ मनुवुटिजो लोटनचउत  
चेफूल॥ टीका॥ यहनाइका जाहविसौ नाइकने  
हे सुसवीसौ कहतुहे॥ कविता॥ वनचा जुलवी  
भानसुताजगिजो तिरही चहं कलनिमो॥ चिहंटीदि  
में उकसांयें भुजावरचांर निउन्नतफूलनिनी॥ वा  
रीकटिते कुचकोरनुकीरविचारुपभाभुजमूल  
गो॥ लुटिजो मनुलौंर विलोकतहीं हविमोहिनके  
हेभूलनिनी॥ २२५॥ दोहा॥ करउठाइधुंधटकरतउस  
तपरगुजरीं॥ सुषमोंटं लुटीललनलधिललनाकीले  
२॥ टीका॥ यहनाइकाकीलोटकीसोभानाइकनेदें सुसवी  
सवीसौ कहतिहे॥ कविता॥ जातिहीवालगलीमें अली  
सगावतमोहनदेयो अगोंटे॥ ज्योत्रिये धुंधटहाधुउठा  
में लौंउसरींपरत्रीगुजरीं॥ सोहविमोपेकहीनपरक  
कोरिनुकोरिलुटीं सुषमोंटे॥ लाललहौअतिमोदुहिं  
नवनागरिकी निरुसीजवलोटे॥ २२६॥ दोहा॥ लगीअन  
कमीसीजुकरिकरीषरीकटिघीन॥ कियेंमनोवेहीकसरि  
चनितं वअतिपीन॥ टीका॥ यहनाइकाकेअंगजेवन  
आयेतेघटिवटिहे गयेहे सुसवीनाइकसौ कहतिहे कवि  
गीउक्तिहोइ॥ कविता॥ रूपसांचेंठारेरचिपचिबेंसु  
रेविधिअंगअंगसकलसुदेसरसभीनेइं



जेवनाई कह्यो रे विधि धीन करे पीन असु पो न करे धीन  
हे लिहो टिकां कुं सुधि मे करे राघो ताहि ल चक्र तज  
ने के जतन से को नें के करे हा की क सता की साधि के  
सरि मा लो उर ज नित व अति पीन करे ही नें ॥ २३ ॥  
लेह ल हात तन त स न ई ल चिल ज लो ल फि जा इ ल  
गे लां क लो इ न भरी लो इ न ले ति लगा इ ॥ २४ ॥  
ह ना इ का की जु सो भा रे धी हे सु ना इ कु स धी सौ कह तु हे ॥  
वित्त ॥ ल क ल के त न मे ल ह ल हा ति त रु न ई ता की न ई  
अस न ई र ही हे ह वि हा इ के ॥ कु च नु के भा र च पि ल ग लो ल  
प्र ति ज व च ल ति ग यं द ग ति र ह ति सु भा इ के ॥ कह न वि क  
न व सि ध लो लु ना इ भरी मां नो महा मो द नी नें र ह धी  
आ इ के ॥ सू ह म ल स तु अ ति चारि को सौ आ कु अ से व  
गे लो का रा रो ले ति लो इ न ल गा इ के ॥ २५ ॥ र ह ॥ व  
अ नु मा न प्र मा न धु ति क्रि ये नी ठि ठ ह रा इ ॥ स ल म ग ति पर  
को अ ल ध ल धी ना ह जा इ ॥ २६ ॥ री का ॥ य ह क टि व र्ण न स र्व  
सौ के हे ना इ का सौ के हे क वि उ को उ क्रि हो इ ॥ न वि ॥  
धं ड न्यारे न्यारे अ ल ग ल गा इ धे वा ही अ धि नि र धार हो  
ना नें ॥ को न च तु रा ई सौ वि रं धि नि र म ई य ह सां सो न  
स ज नी नु हं के प्रो नें ॥ नि र धी न पर ति क सो द री की  
क टि जां न त सु जां न नी ठि वु धि अ नु मां नें ॥ दे व त  
अ जि य जां न त न सो उ पर वं म्हा की अ ल व वे द व च  
नें ॥ २७ ॥ जं व न नें ॥ २८ ॥ जं घ जु ग ल ल  
रे करे म नो वि धि में न के लि त रु नि दु वे न ये वे

लासुं वरेंन ॥ टीका ॥ यह जंघनु की सोभाना इक स घी सें  
कहे नाइ का सौं कहे सवी नाइ क सौं कहे ॥ कविता ॥ कारे व  
रेरे कुरूप करी कर क्यौं सम होत प्रभाइ नकी जे ॥ सोहत  
सुंदर पीन सचि कून मोहनै मम मोहन पीको ॥ कोलिक  
लो ल कला के निधान महा दुषदाई कहे कदली को ॥ तो जु  
गजंघ विरं चिमनो ज वनाइ करे निरे लोइ नही जे ॥ २३३ ॥  
दोहा ॥ पांड महा वरें न कौं नाइ निवेडी आई ॥ फिरि फिरि  
जांनि महा वरी येडी मीउत जाइ ॥ टीका ॥ यह पांडनु की  
सहज अरु नाई को अधिकार सवी सवी सौं कहति हे नाइ  
कह सौं कहे तो संभवे ॥ कविता ॥ पांड महा वरें न कौं नाइ  
निचाइ नि सौं उमही अति आई ॥ येडी गही ठ कुराइ नि की कर  
जांमं भरी ति हं लोक लु नाई ॥ जांनि महा वरु मीउ ति ज्यौं ही ज्यौं  
पीवति त्यों सर सा तिल लु नाई ॥ कोमल ताई प्रभा प्रभु ताई वि  
लो कि सवे चपरी चपराई ॥ २३४ ॥ दोहा ॥ कौं हर सी येडी चुकी  
ला ली देखि सुभाइ ॥ पांड महा वरें देइ को अपु भई वेपाइ ॥ टीका ॥  
यह नाइ का कौं येडी लु की सोभा सवी नाइ क सौं कहति हे सवी उ  
सौं कहे ॥ कविता ॥ कौं हरु क हो हे वंधु जी व कौं विलो क्यौं चहे ल  
जनितै कमल मुदत फूलि कैं ॥ मानिक पत्रां री विवा कैं सु  
रतर होतै सौं इति सहज उठति उलि उलि कैं ॥ चइ नु  
इ लु महा वरु ल गाइ वै कौं आई ठ कुराइ नि नि कर अनइ नि  
कौं ॥ कहे कवि ज स चारु चार न विलो कत ही नाइ नि वि च  
गई सब सुधि भूलि कैं ॥ २३५ ॥ दोहा ॥ अरु न वरु न त रु  
न ज गुरी अति सु कुमार ॥ च अति सरंग सी म नौ च

यजिनेभारा॥ टीका॥ यह चरनांगुलीनुकी सो भाना इकु सवि  
सौं कहतुहे नाइकाइ सौं कहै॥ कविता॥ मंदगति हेर कलहंस  
जलहत कलसमदगेयंदनुकी गरवुगरतुहे॥ कसपानप्य  
रे चाकचरननिहारे वाके जलजसमूतजिला जहिधरतुहे॥  
अतिसुकुमारतरुनीकीपगुअगुरीनुअसौअरुनाइके  
उजासुधधरतुहे॥ मेरेजांनपस्योविदियानिकोअपारभरु  
ताहीतेउमगिरंगुनिचुस्योपरतुहे॥ २३५॥ दोहा॥ पगपगम  
गअगमनपरतचरनअरुनहुतिउलि॥ ठोरठोरलवियत  
उहेदुपहरियासेफुलि॥ टीका॥ यहनाइकाकेचरनमेअरु  
नाइकीअधिकाइहेसुसवीसौं कहतिहेनाइकुनाइकासौं क  
हेसवीनाइकासौं कहसवीसौं कहै॥ कविता॥ पलिकातेउ  
तरिपवीनपानप्यारीधांमधरनीभेसरजचेतिमंदगतिहे  
कसपानप्यारेअसैकौतिकनिहारेतवचरनअरुनहु  
तिअतिउमगतिहे॥ जहांजहांअडोहविपरतिअगोडो  
आनितिबकीजलकजगजोतिसीजगतिहे॥ तहोंतहीफु  
लेदुपहरियासेदेवियतकौनकीनमतिदेवैपुंसोंपगति  
हे॥ २३७॥ दोहा॥ सोहतुअगुवापाइकेअनवटजस्योजराइ  
नीप्योतरचनहुतिसुठरिपस्योतरनिमनौपाइ॥ टीका॥  
महनाइकाकेअंगारकोआरंभैसुयेकहीअनौदुपहस्ये  
ताकीउपमासवीनाइकसौकहतिहेअथवासवीसौं क  
हवोसंभवतुहे॥ कविता॥ प्यारीसिंगारसवारनवेठीअचा  
कजायेतहोंरधिहांनी॥ जौहीदतीअरुस्योहीरहीनवना  
गरिस्वामकेरुपलुभांनौ॥ नौकोजराउअनौदलसेपग

के अंगुठा उपमा सुवर्णा नी ॥ पांडप रै यो हे मनोर विचार के ते ज  
की संलित नौं जा सों मानी ॥ २३ ॥ सुकुमार ता वुर्न नो ॥  
दोहा ॥ सरस मनु सरस अति सो भासा  
तु ॥ दरसत अति सुकुमार तनु परसत मनु नपत्या तु ॥ दोहा ॥  
सहकुमारता अधिके देवि सेषके अरु को उ कंस घीना इक  
को अमणन मिलै जां नते हे सुनाइ को सधी भु मर जे प्र  
संज के रि अन्पे क्लि सों वा को भु मुनि वार नु कर ति हे ॥ कवि  
त ॥ सुव को अगा रु उ पवन को सिंगा रु चा रु सो र भ वि वि ध  
उमगतु जा को गा तु हे ॥ सरस कु सु मनु सरस अति सो भासा  
नो निर धि लु भ्या नो अलि दे वें न अघा तु हे ॥ कहे क वि क र  
अति रीज प्रेजा आ स पा सर हे म ड रं नो न ज प टि ल प र तु  
हे ॥ दरसत वा को तनु अति सुकुमार ता तें परसतु वा को म  
नु क्यो हं न प त्या तु हे ॥ २३ ॥ दोहा ॥ भूषन भार समारि हे वयो  
इहित नु सुकुमार ॥ सूधे पांडन परत धर सो भाही के भार ॥ टी  
का ॥ यह सुकुमार ता हे सुसधी नाइ का सों कह ति हे प्रयो जनु  
य हे हे कि भूषन परत विलं वुन हो इ या तें वे गि च लो ॥ क वि त ॥  
वेर च्यो विरं चिते रौ अति सुकुमार तनु अप्यो ति हं लो क प्र  
नु नाई को स के ली हे ॥ क र प्रो न प्यारे की सों ते री यह दु ति रा  
धी मे रे मन मों ह न हं न न नि मे मे ली हे ॥ सो भा ही के भार सूधे  
पगन परत मगे के उ ठी र ल च क ति ल ग ज्यो न वे ली हे ॥ हि  
तु हो तो हितु करि वृज ति हों हा हा करि के सें आ भू

भाके जलिते है २५०॥ दोहा में वरजी के वार तू इतक तलेति करौ  
 या पधुरी लगे गुलाब की परि हे जा त वरौ या ॥ दोहा ॥  
 का विश्र धान वोठाना इको हे सयल मे धिर ताना ही या ते स  
 उरु दि धार सयलु करावति हे ॥ कविता में वरजी के वर  
 वार अहे नहि मानति तं व कहा भौ करे जी ॥ लेति करौ एरु  
 ते मुरि क्यो अरवी उर को लौ इते क धरे जी ॥ कोमल आपन  
 अंग लिहारि ते वे सुक मासि सुक्यो स म्हेरे जी ॥ पां पुरी ग  
 त गुलाब की जोग डि जै हे कहं तो वरौ ट लजे जी ॥ २५० ॥  
 न ज क धर त हरि ही य धरे ना जु क क म ला वा वा भ ज ता  
 र भ य नी ते क ष न चं द न व न माला ॥ वि का य ह ना इ के  
 द्य मे जु ना इ का व स ति हे ता की प्री ति को अ धि श्रार स वी  
 धी सों कह ति हे ॥ कविता ॥ नि जु भ क्ति हि के हित  
 पति संतत चित्र विचार करे ॥ अति चंद लु अंग ल  
 बहु फूल लु की नहि माल धरे ॥ अरु जो क व हं क  
 स जे क वि क क्त त उ ज ल के सें पेरें ॥ इ हि सो च हि ये  
 द्यो स डे रे अ ति ना जु क श्री म ति भा र भे रें ॥ २५१ ॥ इ हि  
 काले परि वे के ड र नि स के न हा थ दि वा इ ॥ ज ज क  
 गु ला व के ज मा ज म ई य त पां ड ॥ दोहा ॥ य ह ना  
 च रान नि की सु कु मार ता स यी ना इ क सों कह ति हे  
 वी ह सों क हे ॥ कविता ॥ पौ लु ल गे अ ति पं व कों  
 ल च ल के सें वि या करे ॥ क स क हे क हं के सरि इ अंग ल  
 ये तें सो ति उ द्वा ह भे रें ॥ प्पारी के ना जु क पां ड नि

गा

रि

लगव तदासी डरे ॥ धोवति फूल गुलाव के लै पैत उंज के  
मति हलै परै ॥ २४३ ॥ दोहा ॥ लगे सो सुमनु है सुफलु  
आतपुरो सुनिवारि ॥ वारि वारि आपनी सी चिसु हृदता  
वारि ॥ टीका ॥ यह सधी को वचनु नाइक सौ है सिद्धा ॥ क  
वरै हे नवा वरे ॥ देत लडवा हों कपो मानु करि वे  
कें उर नो लट्टि चरि वै ॥ चंदे नौ ने हे वै लिन वल्लल  
आइं ताहि जत न जत न द्रुग करि ॥ पोषि पारिये ॥ लाग्ये हे  
सुमनु सुतौ होइ गौ सुफलु अवक है कवि न्यारि सभ्रात  
पुनिवारिये ॥ सीधमानि मेरी मति नुके चीते करे पारिपी  
र सही सौ सी चिहित वारिये ॥ २४४ ॥ दोहा ॥ दोयो अरघु  
नी चें च ल्यो संकट भानै जाइ ॥ सुचिती है औरो सवै स  
सिंहि विलोकै आइ ॥ टीका ॥ यह नाइको के मुखी सो भा  
सधी नाइक सौ कहति है ॥ कथित ॥ यजिनिसां करु अरघु  
दियो अवनी चें च लौ वलि संकट भानै ॥ और नुकी दुचि  
ताई मिटे जिन साध उपास मनोरथ ठानै ॥ चंदु उतेइत तो  
मुख चंदु किते विन वेचित सो च समानै ॥ वै अ पने व्रत पू  
रे करै जर हो चक्रि अंधिरे दे उर आनै ॥ २४५ ॥ दोहा ॥ तू  
रहि हौं ही सखिल यों चटिन अरा वलिवात्न ॥ सवहि तु वि

नहीं सखि उरें दी जनु अरु यत्र काल ॥ टीका ॥ यहना  
के मुख की सोभा की अधिक है सुसवीनाइकासों कह  
है ॥ कविता ॥ हौं ही अटांचटि हौं सखि देखन तूं सजनी  
आंगन ही तिन ॥ और कितो कवती कवती वनिता सु  
देखति चंद्र उदौ दिन ॥ तो मुख देखि उदाह भरी सब  
दिगीं अर्थु मयंक उदेविनु ॥ और नुके वत भंग करे मा  
होहि गों पात कुमाने कहौ किन ॥ २४६ ॥ टीका ॥ कहल  
डें ते दूग करे परे लाल वेहाला ॥ कहूं मुर लिका पीत प  
कहूं मुकट वनमाला ॥ टीका ॥ यहनाइकाके जुने वदेकि  
नाइकाकी जुदसा भई सुसवीनाइकासों कहति हे प्रयोज  
नुकि तेरी चाहै हे तूं चलि ॥ कविता ॥ तूं चितई जवें  
वैंतें उह भांति रहौं चित चेतुरसौं है ॥ पीतपटी लकुरी  
तहूं अरु मोर किरीटि कहूं विसस्यौ है ॥ भूलि गई वनम  
ल ॥ हूं की सुधि हाल लवैं मन मेरो दुस्यौ है ॥ लाडिली वें  
नल डें ते कहा करे देखि तो लाल विहालय स्यौ है ॥ २४७  
रोहा ॥ पिय मन रुचि है वै कठिन तन रुचि होत सिंगा  
रा ॥ लाव करौं आधि न वैंटै वैंटै वटां यै वार ॥ टीका ॥ य  
इनाइका सिंगर करत देखी सुसवीनाइकासों कहति हे

यवसोतिको अंगारे दियो कि ई यी भई सुसवीसों कहति हे  
तैं पै मगर्वितान होइ ॥ कविना ॥ वैठै कुंज सरन वि  
कै कतु हे तु वम गुते रौना मुमै ह नुर ट तु वार वार ही ॥  
मानिर गर ली चली मे रौ कसो  
मालि अ न ग व ति क हार ही ॥ पिय मन व स करि वै ई हे क  
ठिन अरु त न दु ति सर स ति सो जें उं सि गार ही ॥ कहै  
कवि न व्य की जे ला ध क ज त न त ज लो च न न व ट त  
व टां यें वै ट वार ही ॥ २४ ॥ मना इवो ॥ दोहा ॥ गहिली  
गर वुन की जिये स मै सुहा गहि पाइ ॥ जिय की जीवनि जे  
र सो माहन हं ह सुहाइ ॥ टीका ॥ यह सवी की सिद्धो हे ॥  
रु जो जे सा कनि सा भे दे मे ॥ या सौ नाइ का कौ हितु र वि  
तौ ह सं भ वै ॥ इ र घा संचारी हू होइ ॥ कविना ॥  
अलि हों सम जावति तो ॥ हिये हे त जि मानु महा सुषु दे  
म ॥ अल्लु क्यौ न ले हे व लि जो व न कौ मन मोहन ॥  
मं मिलि क्यौ न र मै ॥ लड वा वरी पाइ सुहा ग स मै जि  
ने ये तौ गु मान धरे जिये मै ॥ स व की वरु जे ठे मे जीव न  
मूरि सु हं ह सुहाइ न मां ह स मै ॥ २४ ॥ अथ मि लिते  
२५ ॥ स घन कुंज घन घन ति मर अ धि क अ धे



तऊ नदुरिहै स्यां मयह दीपसिवासी जाति ॥ टीका ॥ य  
नाइकुनाइका कुंजमेनि संकेवैठैहै ॥ सुगुरुसवीनाइक  
सैं कहतिहै ॥ याको दीपति सिंहा ॥ विवर्ननु करिसी  
हा कहतिहै ॥ अथवा नाइकु अंतरंगसवीसैं कहै कि  
याको कुंजमेतुलेचनि ॥ तहां सवीको कहि वीसं  
भैवै ॥ कवित्रा ॥ रनिअधेरी नहै स्योपेरे कर कुंजसेव  
तसपुंजनिहाई ॥ घूमिघनेघुमडे घनबंद अमंद भईतम  
कीसरसा ॥ मेचकसाजिसिगारकेज बुद्धिअईस  
संककीधैं चतुराई ॥ दीपसिवासमदीपति लाल  
अथवा लहुरे नदुराई ॥ २५० ॥ मिलिबोहादिवा ॥  
रानी फाली फूलुसी फिरति जु विमलविकास ॥ भोरती  
याहैं हितै चलततोहि पियापास ॥ टीका ॥ यहमनाइ  
वोसवीनाइका सैं कहतिहै ॥ कवित्रा ॥ निरविनि  
इतेरीहैं विकईवलिपेरी तंहुं अलेवलीकहु मेरो  
सौकरैगी ॥ तेरीतनदुतिअं गैरतिनरती कुला  
साची कहिके लैं सैं साहडुकर धरैगी ॥ फूलीफ  
ली फिरतिसिगारसजैसैं तितेरीतिनकेगु  
हितुं धौं कवहरेगी ॥ भोरकीतरे यासमदे विथैंगी  
रीसवहिनु करिजवतुं पारे अोरवरेगी ॥ २५१ ॥ रि

रिवो ॥ दोहा ॥ तनभूषन अंजनु दूगनु पगनि महा व  
 संरंगु ॥ नहि सो भा कौ सा जियतु कहि वै ई कौ अंगु ॥ टी  
 का ॥ यह नाइ का के अंग की सो भा विक सो भा सखी  
 सों कहति है ॥ कवि ॥ सहज अरु न गुल फूलि तें उ  
 वते हटाति निके निकट कहा जाव कौ रंगु है ॥ गा  
 तकी गुराई अंगें कंचन के अ भूषन फी के सेल गतर घ  
 सो भा कौ न संगु है ॥ अंजन हूं अंजे विनु नैन क जरा  
 रे देखें अंजन अने क निके कौ होतु मन भंगु है ॥ तो तन सि  
 गार कहु सो भा कौ न सा जियतु सा जियत जं लि अदि  
 वात ही कौ अंगु है ॥ २ प ॥ दोहा ॥ वैदी भालत मे ल मु  
 वसी ससिलि सिले वार ॥ दूग अंजे रा जे वरी ये ही स  
 ह ज सिंगार ॥ टी का ॥ यह नाइ का की सहज की सो  
 भा सखी नाइ क सों कहति है ॥ कवि ॥ वैदी ह्वि  
 ह्वि जति है ललित लिलार पर नी की नव जो वन की  
 जोति निरघति है ॥ सिलि सिले स्यां न सर कारे सुकु  
 मार वार निमि धि मि वार पांति सर निसरति है ॥ अ  
 न मु हूं अधर अति अरु न त मोर भरे अंजन से दूग नु मे  
 अंजन धरति है ॥ सहज सिंगार ये ही राजति अ पार दु

मैं सोतिनुको आधिनु मैं कर सी परति है ॥ २५३ ॥  
परी पातरी कांनकी कौंन वसुं अं वंनि ॥ आक कली  
नरली कौं अली अली जियुं जांनि ॥ विना ॥ यहु  
इकाके मनमै नाइ कौं आन्यास क्त जांनि भुमुनेयुं  
हे सुसधी निवारनु करति है ॥ कविता ॥ वातके  
कोउ ज्ये हैं जो आइ केंतुं मन सोई सुचेति कें जां  
हैं ॥ जांनि परी घरी कांनकी पातरी सी घी किते व  
धौं ग्रहा बानि है ॥ छे डि है क्यौं मरु माल ती वलि म  
कीर सरूप परली सुष संनि है ॥ आक कली पै अ  
सुषु पाइ अली कहि रंगरली कवमानि है ॥ २५४ ॥  
हो ॥ तोर सरा चो आंन वस कहे कुटिल मति कर  
बनि बोरी क्यौं दु वै बोरी चाधि अंगूर ॥ विना ॥  
नाइ काके मनमै नाइ कु अ न्यास क्त है यहु निश्चय  
सधी नाइ का सौं कहति है यह भुमु निवारन कर  
कविता ॥ तेरोई धांनु धरें नद नंदनु जांननु है  
तेरी कथा है ॥ तोर सरंगं मे पागिर हो नि सिवा  
ई रूपु सरा है ॥ ताहितुं जोर सौरा चो कहे कहि  
हामन आइ कहो है ॥ वो वरो दे वि विचारिये है

षट्छांडिनिवोरिहियाये ॥ २५५ ॥ अथ बन् विधात्रा  
दोहा ॥ गली अघेरी सांक्ररी भो भट भेरा अंनि ॥ प  
पिछांने पर स पर दो अ पर पिछांनि ॥ टीका ॥ य  
अघेरी गली भे भट भई जा धाति सुते सवी सवी से  
कृति हे स्वर सक्रो पहिचा निवोरो अनिको अंगे मि  
नपु हे यह व्यंगिनाइ का पर किया ॥ क्वि ॥ रे नि  
अघेरी घने घु मडे घन मूमि महात मपुंज ह्ये है ॥ जे  
को ये सांक्ररी लांवी गली भट भेरा अंनि क दो अ भ  
ये है ॥ गत सौ गत हिला गत हीं जिय जांनि हिये लप  
राइ गये है ॥ राधिका माधौजू माधौजू राधिका आपु हे  
ते पहिचांनि लये है ॥ २५६ ॥ दोहा ॥ अयो सरदरा का स  
सी कर निक्यों न चित घेतु ॥ मनो मदन छिति पालको  
छां ह गीर ह विदेतु ॥ टीका ॥ यह मानवती सौ सवी  
का वचनु नाइ का को मानु छु डाइ वौ प्रयो जनु ॥ क्वि  
॥ वलि आजु सुहां वनी रां क को रे नि विहार सौ  
अथ साजतु है ॥ बहरे धिरी इंदु उदोतु भयो अरु नाइ  
गं हे छ विद्या जतु है ॥ अव लोकत जा हरि से लति पा  
नि को मानु क ह डरि भा जतु है ॥

यौ है। मैं नु मुनि र प्रयोग पठे। र सबे लिहि यें जु भि  
अथ कि यौ है। देउ नु ले जप को जप नो यें दि यो हय  
अबाई हा थि यौ है। रश्वा देवा। त चो आ च मति  
अली विरह की र हो पे मर सु भी जि। ने न नु के म ग ज  
बुव है दि यौ प सी जि प सी जि। टी का। यह ना र का अ  
थवा ना र कु वियोग तें जं सू वा वर तें ति नि को उं  
हा करतु ह सु स वी सो कहे स वी स वी सो कहे। को प  
जा जा दि न तें न व न ग रि को म बु नं र कि सो र के ने  
ह ग ह्यो। ता दि न तै दि न र नि ट रं अ सू वा ति नि के  
अ ह म ह दु ल ह्यो। अं च त चो वि रं न ल की हि त के  
अं च ति भी जि र ह्यो। तौ तें प सी जि प सी जि हि ह्ये  
वि प ने न नु के म ग नी रू व ह्यो। रश्वा देवा।  
तो ही मै ल वी भ ग ति अ पू र व वा ल। ल हि प्र सा द  
जु भो त नु ऊ रं व की माल। टी का। यह सा चि व  
स वी को व च नु ना र का सो प र कि या ल कि त  
अ पि ता को रि ज वा रि न पं म प जी रं गि ला ल  
ग ला ल भई है। को न ट की ह वि दे शि गु पा ल  
नि तां न वि हा ल भई है। मैं नि र वी य र तो त ल  
पर त भं ड र सा ल भई है। माल प सा द को पा व

देहकदेवकीमालजईहे॥२६३॥नाइकोछौवचनु  
सखीसौ॥दोहा॥ढोरीलाइसुननकीकहिगरी  
मुसिकात॥घोरीघोरीसबुचसौभोरीभोरीवात  
लीका॥यहनाइकाप्रोढानाइककीजुचेसादेवीहेसु  
सखीसौकहतिहे॥कविज्ञा॥जादिनतंवहसावरौ  
नैसुजेनेनमिलैसुसिकाइगयौहे॥तादिनतैक  
विकल्पकहंमनुवाहीकेहाथविकाइगयौहे॥घो  
रीसीलाजगंहंहितचीकनीभोरीसीवातसुना  
इगयौहे॥काननुकोत्रववातियकीसुनिवेईकी  
ढोरीलगाइगयौहे॥२६४॥दोहा॥जौलौंनलौंनकु  
नकथाठिकतौलौठहराइ॥देखेंश्रवतदेखहींबैंया  
हंरहौंनजाइ॥लीका॥यहनाइकाटाग्रपनीदुट  
तासखीसौकहतिहेअरुनाइककोस्वरूपजैसौसुं  
दरहेसुदेखेंतेबैंयाहंरहौंनाहीजातुनाइकाकोव  
चनुसखीसौ॥कविज्ञा॥जौलौंनडीठियरेमनमो  
हनुहोंनवदोंसखीतौलौंसयाली॥ठीकजुठानि  
पतीवतकोकरिलैकलकांनिकथाकेवकांनिकी॥  
लोचनबैंयाहंनरोकरहेंजवदेखतिवामदमरति  
कांनहि॥देखेविना

गारुकरनलाग्येवैकीगुहतसात्रिकभाव  
 इकानेजांन्योसुनाइकसोंकहतिहै॥  
 सुवनाइगुपालज्श्रीवृषभानसुताटिगजाये  
 जानतिनीकेंसिगासकहोसुकरोंकहेवैनसुहाये  
 गुहावतप्यारींकहोसुघरापनयेकितंतंतुमपाये  
 रुचुचांनलगेअवहींसटकारेसेवारसुनी  
 ३०॥ राधाहरिहरि  
 कावनिचायेसंकेत॥दंपतिरतिविपरीतसुषसह  
 सुरतहंलेत॥३१॥ यहलीलाह्वरतिविपरीत  
 सुसखीसखीसोंकहतिहै॥कविना॥देधिवेकौदे  
 येकमनयेकंप्रानरूपसीलेवेसगुनचातुरीसमे  
 जैसेदोऊसांचेमनराचेपीतिरीतिरंगआजुलौ  
 धेंकहंअसैंहियहंतहैं॥राधामाधोमाधौराधाअद  
 लिवेलेवनिवनिचायेकुंजकेलिकेनिकेतहैं॥कहें  
 कलदोऊसहजसुरतिकरिरतिविपरीतिके  
 धिसुषलेतहैं॥३२॥ नैंकउतेउठिवे  
 दरहगहिगेहा॥हुटीजातिनहदीहिनकुमह  
 नदेहा॥टीका॥यहनाइककौंदेधिनइकाकेंसा  
 कंभाउभयौहेसुसखीनाइकसोंनिवेदबुकरति

आसुं देखे अधि क्यते न इ क सौ के हे ॥ कविना ज्ञाजु  
कैसें हं जं निपरी न चली ज वैं र स री ति चत्वा ॥  
तु मे उ म गौ ज व हीं कर प ल व द्दोर न स्वे दु ज ल ॥  
रु नै क उ तै उ ठि कैं उ घरी यह आ व ति पै क ल ॥ ज  
दु टी अ व हीं न ह दी महि दी छि नु सू क न दे ह ल ल ॥ ३९  
ह ॥ प हिर त हीं गै रें गै रें यों दौ री दु ति वा ल ॥ अ नै  
र सि पु लि क्ति नई वौ ल सि री की माला टी ॥  
ह ना इ क के स्प र् स सों ना इ कों कें सा त्ति क भा व भ यो सु  
धी ना इ क सों क ह ति है ॥ कविना ॥ सो र भ सहि त  
नि चु नि कें क स म चा स ज्ञा प ने कर न म ल म  
न गु ही व ना इ ॥ भैं तो आ इ दी नी उ नि ली नी ज  
॥ क ल प न प्पारे वा के गै रें गै रें ना ही छि नु ऊ प  
गै न व ल दु ति र ही जै सी छ वि द्वा इ ॥ मे रे जं न ल  
वा ल सि री की ल ल ति माल पु ल क्ति नई वा के  
न के पर सु पा इ ॥ ३७ ॥ हो ह ॥ हि तु करि तु म प ठ  
ल गें ना वि ज ना की वा इ ॥ ट ली त प ति त न की त उ  
इ ल ॥ ॥ य ह ना इ क के वि ज ना की



जिजुषी मुसिकांनी रिसांनी ॥ २५ ॥ यतिरतिं  
 वतियां कहीं सधी लधी मुसिकाइ केके सवे टलार ली  
 ली चली सुषुपाइ ॥ यह नाइ कानाइ कौ सुरतार  
 भसमो जां नि सधी मिसु करि उठि चली सधी को वच लुसधी  
 सौं ॥ चौ परिषे लषगी वनिता वजरा जविले  
 कित हीं लल चाने ॥ सैन लु मेरु डू के लिक लोल की  
 त कहि मनु मे न भुला लौं ॥ पारी जली लुकी और लष  
 हसि घोर सभा उहि ये सर सां लौं ॥ देषि से व सुषुपाइ च  
 ली अ पने गृह कौ कहु उठ मुठं लौं ॥ २६ ॥  
 दौर तपिय कर कट कु वी सहुं डां वन काज ॥ वरु नी व  
 गां टं दू ग लुर ही गुं टां गहि लाज ॥ यह सुरत स  
 य सधी सधी सौं कह ति हे ॥ रति मंदिर में न  
 नागरि कां न्ह मिले र सरंग हिये ठरि के ॥ दल दौर त  
 तहां पिय कौ करु वा सुहुं डां वन कौ अरि के ॥ कवि ज  
 कहे उहराइ तहां न स कौर हि धी रज कौ धरि के ॥ गहि ज  
 धन वरु नी वन की रहो ने न लु लाज गुं टां करि के ॥ २७ ॥  
 भौ हनु ज्ञा सति सुह नर ति आं विनि सो ल  
 ति ॥ अंचि हुं डां वति करु इ चै जंगे आवति जाति  
 यह ॥ सुरतारं भसि मं प्रो ठा नाइ कानाइ  
 जु निया चे सौ हे सु सधी सधी सौं कह ति हे नाइ क स  
 इ सौं कहे तो इ संभवे ॥ तिय सूने अवा

सुरो जमुषी दुतिपुंजनि कौं उमगावति सी ॥ तहां कंस चं  
चांनक अंनि गही च ही भों हनु सों डर पावति सी ॥ अरु  
अंधिनि मेल परा तिसी अंन नना करि नाक चटा व  
तिसी ॥ बह चें चिहुडा वति वां हइ हों मिसत्रा पुइ ची टि  
ग आवति सी ॥ २५ ॥ होहा ॥ सकुचि सुरत आरं भही विह  
री लाजल जाइ ॥ ठर किठार दु रि टि ग भई ठी ठि ठाई आ  
इ ॥ होहा ॥ यह प्रोठाना इका को सुरत सवी सवी सों कह  
ति हे ॥ कवि त्वा ॥ अति अभिरां मस्यां मास्यां मरति मंदि  
में विहरत उमगि अनंगरंग भरी कें ॥ रंषदां नरददां नचुं  
वन अधरण अलिंगन करत अनेक भाइ भरी कें ॥ सुर  
तके आरं भहों लाजल जवती सवी निपटल जाइ जियुग  
इक हं ट रि कें ॥ ठाठ सुहिये मे गहिनि धर कैं कैं आइ ठा ठी  
भई निकट ठि ठाई ठी ठु रि कें ॥ २६ ॥ होहा ॥ दीप जै रें हूं  
पति हिरहत वसतरतिकाज ॥ रही लपटि ह्वि की छटनु  
ने कौं छुटी नलाज ॥ होहा ॥ यह सुरत वर्नन नाइ क्रांते  
नकी दीपति कौं आधिक्य सवी कौं वचन सवी सों ॥ २७ ॥  
विता ॥ ते सौं ई प्रका सुरति मंदि रके दीपनु कौं ते सौं ई समू  
ह जगमगा तुरत नको ॥ ते सौं ये सुधानिधि के मुख की नि  
रधि जौ ति मोहल के मन भा

वेहारी लाल लखे के सुरत सुषु निजु कर वस बुजट कि  
स्वोतन को ॥ द्वि को छटा नुही सें रहो लपय इरा धाम ग  
हंतन को कुटी नला जतन को ॥ २७ ॥ सदी लो न  
पट की टिंग कत टां पियति सो हति सु  
ग सुवे स ॥ हदर दह ॥ द्वि विदेति य ह स रे द ह द को रे  
य ह सुरत को चिं नु दुरा वति हे नाइ का सु स  
नाइ का सों कहति हे लखिता ॥ २८ ॥ आजु भूर  
तरंग के मंदिर तूं मन मोहन के संग जागी ॥ केलि वि  
कास हुलास नि के वड भागि निते रिज यो अनुरागी ॥ टां  
कति वें पट की टिंग सों अति सो हति वारु प्रभानि सों  
पागी ॥ दिति महा द्वि को हद को य ह रे सर द ह द की स द ल  
सुरति दुराई दुरति नहि प्रगट करति रति  
हुटे पीक जौ रे उठी लाली जो व अ नू प ॥ दो व ती  
य ह सुरतिके चिं नु दे वि स वी नाइ का सों कहति हे पर किय  
जो नाइ का स वी सों कहें तो अ न्य संभोग दु वि ता होइ ॥ २९ ॥  
भूषन चा स व नाइ स जे क च फूल गुहे फि रि आ ड  
व नाई ॥ हो तो कहा प ल टें पट राधिके ली क कपो ल जी पै  
कें आई ॥ दित कें ह रति रंग की भांति सुपें म की री ति दु रे  
न दुराई ॥ पां न की पी क हुटे अध रानि पै जौ रे क हू प्र ग व  
अरु नाई ॥ ३० ॥ मो सों मिल वति चातुरी तूं न

भांतिभेका॥ कहै देतु यह प्रगट हों प्रगटै नो पूस पसेऊ॥  
टीका॥ यह नाइ का के खेद ल विसवी सुरा त भयो जां  
निकरति है लखिता जानिये॥ क विल॥ आजु पगी सु  
षपुंज में प्यारी सुकुंज में के लिकरी मज भाई॥ पीक ग  
ई कुटि औठनु पे प्रगटि मुख मंड लये अरु नाई॥ मोर की  
वात कहै निनि भांति प्रोसैं चला वति क्यौं चतुदाई॥  
तोतनु देतु कहै प्रगटै यह पूस के मास पसेऊ मै लहाई॥ २५  
दोहा॥ आजु कहुँ औरै भये वये नये ठिक ठै न॥ चित के हि  
ते के चुगलये नित के हों हिं नने न॥ टीका॥ यह नाइ  
का के नै न दे विसवी कहै तो लखिता होइ जो नां कानाइ  
कसों कहै तो संडिता होइ॥ क विल॥ अलिनु के रस में  
विष के रंगि लाल के रंग सुरंग भये हैं॥ देत कहै चित के  
हित की चुगली ठिक ठै न नये ईठ ये हैं॥ निंदतै हं अरवि  
रूप भा अ नुराग पराग मे पणि भये हैं॥ हों हि नये नित  
के सजली द्रुग आजु अपूरव औ पद ये हैं॥ २६॥ दोहा॥  
जदपि नाहिना हैं नही वदेन लगी जक जाति॥ त  
पि भौह हां सी भरी हां सी ये ठहराति॥ टीका॥ यह सुर  
गारं भनाइ का प्रोठा सवी के वचनु सवी सों॥ क विल

वेडीसिंगारसजैवजनारिषु चानकैचौयौ  
 पांनिगहोअवलोकिअने लीओ लौकिअकेलि  
 चितचांही॥ जदुपिवाकवनागरिकेमुषलागीदे  
 कनाजननाही॥ तदुपिहांसीभरीभकुटीनुमेवी  
 सेठहरातिहेहांही॥ २६॥ सुरतांत॥ दोहा॥ सकु  
 सरकिपियनिकटेतेमुलकिअकुवतबुतोरि॥ क  
 आंचरकीओटकेजमुहांनीमुहमेरि॥ टीका॥ य  
 सुरतांतनाइकापोठासवीकौवचनुसवीसौ॥ त  
 केलिकलाकुसलकुरंगनैनीपिकवैनी  
 कीहविपररतिवारियैकरोरिके॥ सैनसुषपागी  
 बुरागोपतिसंगजागीमैनकेविलासनिसेंलेतिचि  
 तुचोरिके॥ सरकीसकुचिमनमोहनकेनिकटेते  
 केकुसुलकिअगिरांनीतबुतोरिके॥ सोभावहमे  
 पैक्योहजातिनववांनीकरआंचरकीओटजमु  
 हांनीमुहमेरिके॥ २७॥ दोहा॥ चमकत  
 कहांसीससकमसकरूपरलपगंनि॥ येजिहिरतिसोरति  
 कतिओरमुक्तिहिहंनि॥ टीका॥ यहसुरतवर्जनना  
 ककौवचनअथवाकविकीउक्ति॥ उक्ति॥ किलक

निमुलकनिहेरनिहरनिचितुचमकतमकजमकनिमुसि  
कांनिहै॥दिलनिमिलनिचुरसरसभरीकसकनिसकनिसस  
कजपटनिसुषदांनिहै॥लटकनिमटकनिदुरनिमुरनिक  
लकुंजनिलफूलनिचटकलपटांनिहै॥जैसीरीतिरतिसोईमु  
कतिकहावतिहैमुकतिकहावतिहैसोतौअतिहांनिहै॥२५  
दोहा॥लखिलविश्वविद्यांअधुनिनुअंगमोरिअंगिराश॥  
आधिकउठिलेटकिलटकियालसभरीजभाइ॥टीका॥या  
हसुरतांतनाइकाप्रोटासवीकौवचनुसवीसौ॥कवि॥सैन  
सुवपागीअनुरागीहरिसंगजागीसोभासरसांनोअरसांनो  
अंगरातिहै॥विधुरीअलकजुकीआवतिपलकमनमथकी  
जलकअतिरसवरसातिहै॥ललितकपोलनिपेलसतिनी  
कीपीकलीकदेअधुजजेरिमुहमोरिजमुहातिहै॥अधुली  
आंविनिसेंआलीतनअवलोकिआधीअठिसेजहीलटक  
लेरिजातिहै॥२५॥दोहा॥नीठिनीठिअठिवेठिहूंफोप्यारोप  
रभात दोअलीदभरेषरेलागिलागिरिजात॥टीका॥य  
हसुरतांतनाइकाप्रोटासवीकौवचनुसवीसौ॥कवि॥व  
सभालललीवजराजलकार  
जसकैहैकलकामकलावहुभाइविलासहिथैउभरै॥क

ठतसेजेपेनीठितउउठिपेनसनेअतिपुंमपगे सुबनीदभने  
अरसातघरेवहुस्योगिरिजातगेरेहीलगे ॥२५॥दोहा॥रगी  
रतरगपिघाहियैलगीजगीसवराति ॥पैडपैडपरठठुकिंके  
डभरीमैडाति ॥दीला ॥यहसुरतांतसवीकोवचनुसवीसै  
जासवीनाइकासोंकहेतेलछिताहोइ ॥दीवला ॥सवरैनि  
जगीहरिकंठलगीरतिरंगरगीअलसातघरीहे ॥उजयेक  
चलेप्ररिंकैचितैवैमुरिकैअंगरातिप्ररोरभरीहे ॥विधुरि  
अलकैहलकैअप्रवारिजुकीपलकैसुषठारठरीहे ॥ल  
गिपीककीलीककपोलनिनीकीलसैअतिसारीसलोठप  
रीहे ॥२७॥दोहा ॥यौदलमलियतुनिरदईदईकुसमसोग  
ते ॥करधरिदेधोधरधराअजौनकरजौजातु ॥दीला ॥यहला  
इकासुरतमेंसुदितअतिविद्वलभईहैसुसवीनाइकसोंकह  
तेहे ॥दीवला ॥वेसअलवेलीमदुवेलीसीलवेलीवालप्रिल  
गुपालसुमेंकितनैऊपाइकै ॥रसिकरसालकितभयेनि  
रदईकैलिकरेयौकरेरीरसरीतिविसराइकै ॥असीदलम  
लीमदुकुसमकीसीपांधुरीसीपरीहेअचेतसवसुधिविस  
राइकै ॥अतियांनहाहौंनहौंदुतियाकोधरधराअजहंनमि  
तुनिकरदेवोअइकै ॥२६॥दोहा ॥लहिरतिसुसुलगि

येहिये लखील जों हैं लीठि ॥ कुलतिन मो मन वधि र ही व है च्य  
धवुली डीठि ॥ दी का ॥ सहसुरतांत नाइ कौ वचनु सखी सों ॥  
कदिन ॥ केलिकला सुषके लि प्रभात लसो पर जंके पेरि धिका  
प्यारी ॥ अंकलगीत अलाज पगीर ही नारिन वाइ महा ह्वि  
धारी ॥ सौं हैं चितै वे कौं मैं हूं हियौ तबने सुक भों ह ऊचाइ नि  
हारी ॥ सोऊ नदों अविं अंधधो लीं चितों निहिये तें रे  
नहियारी ॥ २६ ॥ होहा ॥ विनती रति विपरीतिकी करी  
परसिपिय पाइ ॥ हंसि अ नवो लें हीं कियो उन्नरुदियो वता  
इ ॥ ली का ॥ यहरीति विपरीति सखी कौ वचनु सखी सों ॥ क  
वित्त ॥ केलिकला कुसल कु रंग नयनी के अंग अंग की नि का  
ई दुतिरतिकी रती करी ॥ पहिरत अंतरति विहरे विविध वि  
विमदन मही पतिकी विभूति वट तो करी ॥ तहें रति मंदि  
रमें प्यारी के परसिपाइ रति विपरीतिकी पि नारै विनती क  
री ॥ प्यारी मुसिकाइ अ नवो लें ही वता यो दियो पीत मके जि  
अ चाहा दा हो मैं सही करी ॥ ३० ॥ रति विपरीति ॥ होहा ॥  
पस्यो जो रु विपरीति रति रुपी सुरतर नधीरै करति कुलाह  
न किं किनी गहो मो ल मंजीर ॥ दी का ॥ यह विपरीति र  
ते वर्न लुं है नाइ का प्रोठा सखी कौ वचनु सखी सों ॥ ३१ ॥



श्रीवृषभान्नसुतातनजो ~~...~~ तिजगैरतिल  
रंजीजनुजागी ॥ भौं हविलासनिहासनि कैं हरिसाजनो  
सुवसाजनलागी ॥ धीरमद्यमतिसंगरमैविपरीतिरची  
तिराजनलागी ॥ मों नुगलौ विद्धि सां नित हों रसनारसही  
सवाजनलागी ॥ ३०१ ॥ ~~...~~ मेरे वृजतवाततूकतवहराव  
वाला ॥ जगजां ली विपरीरतिल विविदुली पियभाला ॥ ~~...~~  
यहनाइ का पौठारति विपरीतिकी नी सखी सों दुरावति हे सुप्र  
वीनसखी जां नित ई सुनाइ का सों कहति हे ॥ ~~...~~ हों हित  
केवल वृजतितो कहुं तूं वहरावति वात ह मेरी ॥ पून्यों को चं  
दुऊ दोतु करैत वकै सें देवै कियैं ओर ह धेरी ॥ तैं हरिसों विपरी  
तिकरी कहि क्यौं दुरि है अवतौ ह मेहरी ॥ नी कैं हो जां निपरीस  
वकौं पियभाल लखै विदुली तिय तेरी ॥ ३०२ ॥ ~~...~~ रव न क  
को हठिर वनि सों रति विपरीति विलास ॥ चित ई करिलो  
वनसतरसगरसलजजसहास ॥ ~~...~~ यहनाइ कजेरति  
विपरीतिकी वात कही सुनाइ का नै चित वनि में जु चेष्टा की नी  
सुखी सखी सों कहति हे ॥ ~~...~~ वृषभान्नसुतातनदनु  
तलारसके लिकलानिपवीनधरे ॥ तिहि मंदिर में अति प्रेम  
गेरतिकंत विलासकै रंगठरे ॥ रतिकी विपरीतिकी रम

मां नीहसियौ जव प्यारे निहोरे करे ॥ तव प्यारी किये लखि ने नति  
 रोड़े गुमान हंसी अरु लाज भरो ॥ ३०३ ॥ दोहा ॥ सहो रगी लेरति  
 जगे जगी पगी सुख चैना ॥ अल सौं हैं सौं हैं किये कहें हंसों हैं नै  
 ना ॥ दोहा ॥ यह नाइ का ने ने वलु कौ सो भा दे वि सधी सधी सौ क  
 ह ति है लछिता ॥ कवि ॥ मोही सौ छवी ली रसरी ति क्यो -  
 छि पावति है ज्ञान ने पेठ म गि अरु न ज्ञो प्रजा गी है ॥ अंग अंग  
 सिधिल जे नंग सुख संग सने रंग सनी अरु अरु नुरा गी उर  
 लगी है ॥ अल संत हंसों हैं अल सों है ये चपल चय सों हैं किये  
 कहत पगट प्रेम पा गी है ॥ कही न परति अति अरु भुत छवि  
 यह सही तूरगी लेरति जगे आजु जा गी है ॥ ३०४ ॥ जुगल  
 दर सल दर्शन ॥ दोहा ॥ नित प्रति ये कत हीं ररुते वै सवर  
 न मन ये का च ही यत जुगल किसो रल विलोचन जुगल च  
 लेका ॥ ली का यह जुगल किसो र किसो री कौ सो भा अरु देउ  
 लुके हित कौ आधिक्य सधी सधी सों कहति है ॥ कवि ॥  
 नित श्री वृषभांन सुतान दला लु विराजें हं छवि पुंज हये ॥  
 कवि अरु कहे मन सी लव है कम चातुरता इ करंगरये ॥  
 सुष दे सि सहा तिसै वै सजनी विधि सों विनै वै अभि ला वत  
 ये ॥ यह रूप विलोकि वे कौं तने में प्रति रो मनिलोचन क्यो  
 न भये ॥ ३०५ ॥ दोहा ॥ मिलि पर कं हीं

हमें सौं रहे दुहं के गात ॥ हरि राभाइ क संग हीं च गलीं में जात ॥  
हीं का ॥ यह दोउ नु को मिलि वोगली में जात ये कत हो जा  
ने पर ते हे सदी सदी सौं कहति हे निमि चार को मिल नु ॥  
की वत्त ॥ दोउ र सभीं जे रूपरी जेत रु नाई भरे दुहं के सने  
हने हक मगत गाते हे ॥ दंपति करत चतुराई के चरित्र च  
रु और कौं जांने ये प्रवी ननु की वाते हे ॥ जहां पर हं ही तहां  
प्यारिये विलो क्रियति जै न को प्रका सुत हं कां नु हों लवा  
ते हे ॥ अर कौं क विज स्य वे लि कुं ज में नि सं क भये दोउ ये  
सा घ हीं गलीं में चले जाते हे ॥ ३०५ ॥ दोहा ॥ तजि तीर घर रि  
राधिका तन दुति करि अ नुरा गु ॥ जिं हिं वृज के लि कुं ज म  
ग पग पग होतु प्रया गु ॥ टीका ॥ यह जुग लु व न नु हे ॥  
द्वि वि ॥ तीर घनि सटक तु का हे कौं तूं भटक तु क्यो न अट  
कतु व न सो भा की हिल ग में ॥ राधा व न माली की सरस  
गे र स्यां म दुति सकल नि काई कौ ल स तु सार जग में ॥  
ता सौं करि प्रीति यह नि ग म प्र सिद्धि विधि सं कर से तिन  
हं तै जोग ध्यां न अ ग में ॥ उ ग उ ग प्र ति होत प्र ग ट प्र या ग  
म ग जि न के पर त के लि कुं ज कुं ज म ग में ॥ ३०५ ॥ दोहा ॥ अ  
को हितु उ न हों व नै को अ करौ अ ने क ॥ फिर तु का न गे  
ल कु भयो दु हं दे ह ज्यो ये क ॥ टीका ॥ यह दोउ नु के हित  
की अ धि काई स दी स दी सौं कहति हे ॥ द्वि वि ॥ आजु लें  
अ से न दे से क हं उ न हीं पै व नै उ न के हित के प न ॥ और अ

नकउपाइ किये हं पैहोंहिंन अैसे सनेह सनें मना ॥ कोउ नज  
नतु दोउ है येक ही श्री ब्रष ज्ञान सुता मनमों हन ॥ वाइ स  
जोलक ज्यौ सजनी फिरि वौ करे येक ही जी उदु हंतन ॥ ३०  
पुंमगर विता ॥ होइ ॥ विससौति नुदेषत दई अपने हिय  
तैलाल ॥ फिरति सवनु मै डह डई उ हीं मरग जी माल ॥ टीका  
यहनाइ ककी माला पाइ अति प्रसंन भई है सुसवी नाइ कसौ  
कहति है पुंमगर विता होइ ॥ कवित्र ॥ सोति के लखत मन  
भावन मया के दीनी उरतै उतारि परगट की नीरति है ॥  
तव ही तै रद सति विहसति हुलसति विलसति लसति  
गुमान भरी अति है ॥ मनमै सुदित फूलगत नमै समाति  
नाहि चलत चितौ नि अनुराग उलहति है ॥ मरग जी  
माला वही उर धरे वाला वहु डह ड हो अलि नुके जुड मै फि  
रति है ॥ ३० ॥ होइ ॥ अपने कर गुहि जापु हीं हृदि पहिरा  
ई लाल ॥ लोलसिरी औरै चंटी वोलसिरी की माला टी  
का ॥ यहनाइ केने अपने हाथ वलाइ के वोलसिरी की माला  
पहिराइ ताइ पाइ याकी सोभा अधिक भई सवी नाइ कसौ  
कहै सवी सों कहै ॥ कवित्र ॥ आपने हाथ निवी नि के रू  
ख वनाइ गुही मनलाइ कनई ॥ माल सुवोलसिरी की र  
साल सुगंध भरी अति है कवि कइ ॥ अलि नुके गनमे  
लसि कै हंसि कै हठि ॥ प्योर हिये पहिराई ॥ आप अरु  
जहीत मनी वर नीन परै अनुराग नि

तो जपरवसोतिनुसेजे भूखनवसनसरीर ॥ सर्वे मरगजे  
सुहकरीं उहें मरगजे चीर ॥ टीका ॥ यह नाइकापे मगर  
विला मरगजे चीरें तें सरतको गर्वु भयो तातें शं गारुन  
की नो सुसखी सखी सों कहति है ॥ काविका ॥ सोतिनुहुलसि  
गुनगोरिको परवुसाधि भूखनवसनवहुभांतिनु सुधारे  
हैं ॥ तिलकृतमोर वैदी वेसरित स्थो नासजिञ्जनसैं  
अंजे चारुलोचनअन्पारे हैं ॥ अक्षपानप्यारे के रिजा  
इवे कौं हो डीं हो डं चपलकराक हाइ भाइ निसैं ठारे हैं ॥ कि  
हिये करातिरति मरगजे चीरही सों सवही के नीके मुह  
श्रीके करि ठारे हैं ॥ ३११ ॥ दोहा ॥ ओरे गति ओरे वचन  
भयो वदनरंगु ओरु ॥ द्योसकैतै पियचित चठी रहे च  
ठैं है तौरु ॥ टीका ॥ यह नाइका नाइके के पे मगर्वताके  
काहू कौं मनअंनति नाहीं सुसखी सखी सों कहे नाइका  
हू सों कहे तो बनें ॥ काविका ॥ ओरही चालिविलोकनि  
ओरें देखि कें अंननुहं रंगु ओरहि ॥ बोलति अंनही म  
तिगुमानसब्यो निधनी निधिपाइ कें बोरहि ॥ वृजेहं  
नातें ॥ हिउतसदेति नडो ठिकहूं ठहराति नठोरहि ॥  
वैकरिनाते चठी पियके चितप्यारी चठां येई राषति  
मोरहि ॥ ३१२ ॥ दोहा ॥ कियो जुचिवुककठाइ कें कं पि  
नकरभरतारा ॥ टेठी ये टेठी फिरति टेटे ॥ तिलकलि

लार ॥ ३३ ॥ यह नारकापुंमगर वितासधीको वचनु स  
धीसौ सनेहते नारकासौ सात्त्विक भाऊ भयो ॥ कवित्त ॥  
ठोडो ऊठा इक सोचित चार सौं नंदलला अति ही अनु  
रागें ॥ भाल लगावत हीं अंगुरी कर कं पु भयो अति देत  
सौं पागें ॥ अंनै न अन्नै मने त वने न गने क क आपने  
पुंमने अगें ॥ टे टि ये टे टि फिरे मग लोचनि टे टै ई टी  
को लिलार पै लो गें ॥ ३३ ॥ गुन गर्विता ॥ दोहा ॥ सुघ  
र सौ ति पिय वस सुजत दुलहि नि दु गुन हु लासा ॥ ल  
धी सवी त न डी ठि करि सगर वस लज हासा ॥ दोहा ॥ स  
यह नारका गुन गर्विता अपने गुन के गुं मानते सौ  
तिके आगम को दुबुजा हीं मानति प्रसन्न भई सधी की  
ओर चित वति है सधी को वचनु सधी सौं ॥ कवित्त ॥  
रूप की रासि सधी लु समाज में सौ हैं सिंगार सवै व  
ज नारी ॥ काहू कही सुघरापनु के तु व सौ ति ने लीने  
रि जाइ विहारी ॥ यों सुनि कै अति हीं हु ल सी गुन चा  
तुरी की परमां वधि प्यारी ॥ लाज गु मान भरी मु सि  
काइ कै रं च क डी ठि अली त न टारी ॥ ३५ ॥ रूप गुन  
गर्विता ॥ दोहा ॥ दुसह सौ ति सांके सु हिय गन ति  
जनाह विवाह ॥ धरै रूप गुन को गरवु फिर ति अहेह

यह नाइका अपने रूप के अरु गुण के  
रवते और कौंचित मे आं नति नाहीं सुसधी सधी सौं  
ति है ॥ कविता ॥ नाइके व्याह में प्यारी अछे ह ऊछा हने  
री पर भूषन ठां नति ॥ जां नति हे निह चै अपने जिय कौं  
नित क करि है नहिं नति ॥ रूप के जोवन के गुण के अ  
भेसां नते आं नहिं नाम न आं नति ॥ जद्यपि सौं तिया सा  
सुत उ कर में ब्रह्म ना गरितो दुषु मां नति ॥ ३५ ॥ हेरा ॥  
नटि न सी स सा वित भई लुटी सुषनु की मोटा ॥ चुपु करी ये  
चारी करे सारी परी सलें ॥ टी ॥ यह सुरत की सारी म  
रग जी दे धि सधी नाइका सौं कटि हे लछिता होइ ॥ ३६ ॥  
रस की उमंग भरी रंग भरी सोह ति हे अंग की सिध  
लहुति अमज लछाई है ॥ अंमति जु कति अंगिरा ति ज  
मुहाति मुसिकाति अर साति सर साति तै पां नि कडि है ॥  
मो हें लुटीं सुषकी प्रगत भई तेरे सी स क्यो तूं मु कर पिम  
न मध की दुहाई है ॥ अ व हीं तो चुपु करि राधे ये तो करि  
चारी जे तूं आ जु सारी में सलें ॥ टी ॥ यह सुरत की सारी म  
मो हिक रत कत वा वरी कि ये दुरा उदरे न ॥ कैं दे त  
रंग राति के रंग निचुर त से नें ॥ टी ॥ यह नाइक  
के ने वदे धि सधी कैं तो लछिता होइ जो नाइके के

धमांननाइककोसधीसोंनाइकांकेहेतौखंडिताहोइ॥  
सुरतेकेचिन्हचतुरांसोंलुकाइतनभूषनवनाइ  
सजेवसनतुरतेहैं॥कसप्रानप्यारेकेसनेहसरसोनेता  
तिंगतअरसांनेरसऊमगिठुरतेहैं॥काहेकोंसयानीमो  
हिवांनरीकरतिअवक्रियेंतेदुराऊकहिक्सेकैदुरतेहैं॥  
पगटपुकोदेंरगरातिकेकहतयेंतौलोचनजुगलमा  
नौरंगनिचुरतेहैं॥३७॥  
गभरेनेनसुसिकाता॥रातिरमीरतिदेतकहिओ  
रैप्रभाप्रभात॥टीका॥ग्रहलेचुनुकोभाऊदेधिसधीना  
इकसोंकेहेतौखंडिताहोइ॥सारसंतसरसल  
सतभरेआरसेमहारंगमगनहेरेंदियोहरिलेतेहैं॥लाल  
डोरेराजतेहैंऔरैओपसाजतेहैंरूलेमुसिकातेहैंनि  
काईकेलिकेतेहैं॥मैनकीऊमंगभरेजोवनकेरंगभरल  
जकीतरंगभरेगपुरवसमेतेहैं॥सैनसुषपागेलेनि  
सिजागेदूगतेरेवातरातिरमीरतिकेप्रभातकहेदेत  
हैं॥३८॥  
कोरिजतनकीजेतऊनागरिनेहदुरे  
न॥कहेदेतचितचोकनेनईरुषाईनेन॥टीका॥ग्रहने  
वेधिसधीनाइकासोंकहतिहेलधिताहोइ॥  
तैमनमौहनसोंमिलयोमनुमेतवहीसजनीलवि  
पाई॥वृजतितोहिदियोहितुमानिकेंमोसोंचुना  
तितुंचतुराई॥कोरिऊपारकरैकिनिनागरिनेकी



२॥ ॥ यह परस्पर मानुस घी को वचन सघी सौ ॥  
वित्त मानतु कौनु हमारी कही जं हं दोउ नुमाज भरी गारुवा  
ई दोउ घरे अति ते ज भरे तहां क्यो न वे टै हित की सरसाई  
को घटि हे चिरु जीवा करो यह ये कसी जोरी विरं चि वनाई  
हे वितने वय भांन सुताइ ते ये ह लधारी के वीर कन्हई  
दोउ अधिकारि भरे ये के गों गहिराइ ॥ कौन मन जावे  
मने माने मतु ठहराइ ॥ ॥ यह परस्पर मानु हे दोउ  
अधिकारि भरे सुनाइ कामानवती ॥ नाइ करु रूप मानी अ  
थना नाइ के कौ मानु देखि के गों ॥ सघी को वचन सघी  
सौ अरु जो दोउ अन्यास कहैं हितो यों ही कहि वें संभे  
॥ आजु चलै रसही रस में रस वात दुहं निसुयो  
कहि आवे ॥ ले अपनौ अपनै रस में अरु जायो हियौ अरु व  
को सुर जावे ॥ दोउ घरे अधिकारि भरे गें ये कही गों को  
अभेदु न पावे ॥ कौन मन जावे मने कहि को मन माने  
दुहं नु कौ मानु हीं भावे ॥ ३५ ॥ ॥ का नु टि जार यो ह  
॥ मानु करति वरजति नैं हों उलटि दिवा वति सों ह  
करी रिसों हों जं हिं जींस ह जह सों हीं भों हारी काय  
ह मानु टिटा वति हे सुमानु दु डाइ वौई प्रयो जनु हे स  
घी को वचनु नाइ का सौ ॥ ॥ ॥ रू वोक स्तो रू व  
ने न चटाइ के वैन कहे अन ॥ मानु क स्तो सुभली  
करी हों न मने करों और ॥ सौ ॥ सौ व  
जं न वों अ तरे तिसु दे वे ॥ न ॥ हें

हे गी के सरि सैं ही सुहा गिल हां सी भरी जु सुभाइ की ज्ञां  
हैं ॥ अशां ले हां ॥ र स के से रु घ स सि मु धी हं सि हं सि वी  
ल ति वै न ॥ गू ट मा नु क हि क्यों दु रे भ ये वू ट रं गे ने न ॥  
टी का ॥ यह नो का को धी री को मां नु सु स धी ना इ क की  
ना इ का सैं कह ति हे ॥ क वि ज्ञा ॥ क पर को र स को सां  
क र्यो रु सु भा उ कि यो इ त के सर ता तैं ॥ सू धं चिंत हं सि  
वो ल ति भा मि नि वै न क टे नु घ मो ठे सु धा तैं ॥ ने रु ज्ञां ये  
नू ज ता ये से वै का हे स्त्रा स द वा इ को ते इ के ता तैं ॥ मा नु रि  
ये को दु रे क हि ज्यै नू त जी ट के रं ग न ये वू रा तैं ॥ २३ ॥  
हं ॥ चि त द नि रु वे इ ग नू जौ हं सो व नू नू मि ज्ञां नि म  
नु ज ना यो न प नि नी लं नि ति यो पि व ज्ञां नि यो क ॥ २४ ॥  
ना इ का ना नू नो रि ये ना क के स द नु न पु वा ट के रं क हि  
पु वी न न इ क ने ज्ञां नि न वी क ॥ २५ ॥ नू नू नू नू नू नू नू नू  
र का ह सैं क रं ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥  
त व ति हो प न र ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥  
धुर व च न ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥  
वी नि पा र चो न र ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥  
न री ति जं न न ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥  
रु वा इ र त व ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥  
ह ति के नि ड ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥  
सु ध अ न ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

नन... यह मान परिहास है नाइका प्रोटास...  
को वचन सुखी सौं... कविता... पीतमको पीतिकी पुते  
तिलखिवेकौं प्रांनप्यारी कहूँको नो परिहासु जूठौं  
नुगंनि... कहें कविकस अरु अ परसुवाई भ... रिव...  
नुविदोरिवेठी धरि कैं कपोल पांनि... आपनी अलीनु  
हंसों जोरति नरु मुमुषु वै न अ न घाई वेको ज्यो हो  
त्यों हो गहो पांनि... भुकुटी सतरको नीक पट सोतिनि  
अपै सौं है न करति दु ग सट जह सौं है जां नि ३४  
मनुज मना वन कौं करे दे तरु ठाई रुठाई कौं  
तिगला गे प्यो पिया विजिहं रिज वति जाई  
यह नाइ कौं मानु दे विवो प्रयोजनु हे सुमानु कृत  
जांनु है तव ही फेरि रुठाई दे तुहे सुसखी सखी सौं कह  
तिहे... रोसभरी अ वियांनि हंकी अ वलोकनि  
माजभस्योर सुभारी... याही तै मानुं कौं सुखु दे विवेकी  
नंद नंद हि यै रुचि धारी... होति मनौ ही प्रिया जव ही तव  
सै करि दे तु रसाई विहारी... कौंति कला गे टाई ही  
वाही निसि तै नामिते नो मान कलह कौं मूलु भले  
आधारे पांहुने है गुठहर कौं फूल... यहाँ... यह नाइ  
आपर किया उपपतिकी विरह डुराई वेकौं पति सो मानु  
नो सुसखी सखी सौं कहति है... कविता... जाहीरज

नीकें घर वसे आनि घर वसे जानै कौनुं कहुं मंत्रु कैसै  
दिनायो है ॥ वहीर जनीतें अज्यै भित्तौ नचने सौमानु  
वीं पचिहारी काहुं मर मुन पायो है ॥ कौहं कवि कस्यै  
नो रूठनो सुन्यो नदे यो जे सौ उहिलहि हारी करमें  
डेठायो है ॥ पाहुने पधारे आके फूलु गुडहर कौ क्लकल  
हकौ मूलु वा वगर वगरायो है ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ मोहसैं  
वात नु लगे लगी जी भजिहि नाइ ॥ सोई लै उर लाइ ये ला  
लला गियतु पाइ ॥ टीका ॥ यह मध्यम मानु नाइ कासौ वा  
ते करत जानाइ कासौ आसक्त होइ नाइ कने ताही को ना  
मुली नो सुनाइ का नाइ कसौ कहति है ॥ कावित्त ॥ कैते  
राधोगोइ होइ प्रगट हिये कौ भाऊ जासौ रंगमणि म  
चुरसो अनुरागिकें ॥ ऊघरीर सिकर सप्रीतिकी प्रीति  
वनवाकी भलै सुधिकी ली मोसौ वात लिहं जाला  
गिकें ॥ कस्य प्राण प्यारे पूरी प्रीतिको धर मुयै है पाये  
अवमर मुभर मुगयो भागिकें ॥ पाइनु परते हरिवा  
ही उर लैये जाहोर मनी कौ ना मुरसोर सनामै पा  
गिकें ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ अहे कहै न कर कसौ तोसौ नंद  
त्रिसोर ॥ वठवो लीकत होति वलिवडे द्रगनि के जोर ॥  
३३ ॥ यह मनाइवो सवी कौ वचन नाइ कासौ ॥ ३३ ॥  
सांची कहि मोसौ अहे काहे ॥ ३३ ॥

होमनमोहनकन्हईरी ॥ कौतूँ वडोवोलेजेसोवोली  
गुमानभस्योवेतो रिसरासितैकहांतैगहिपाईरी ॥ कस  
प्रांनपारोअतिहितुके मनावतुहेकरिमनुहारिवहुभ  
रतेमेवनाईरी ॥ मानिकहोमैरोवलिउलदुनकरिजोप  
तैहोपाईवडोवडोआंधिद्विद्वईरी ॥ अउ ॥ वि  
धिविधिकोनिकरेदरेनहोपरेहंपान्ति ॥ चितैकितैतैलेपले  
इतौइतेतनमानु ॥ यदमनाइवोसधीकोवचबुन  
इकासौ ॥ पाइपरेमनमोहनहुंवहुभांतिहिये  
सभाइभरेते ॥ प्रीतिकीचौपचटाइअलीनिकहीसमुजा  
विनेकरिकेतौ ॥ लोचनतेरेतउनलचेअनवाइनचे  
तिरोसरचेते ॥ नेकथैतेमगनेनिकितेतैधस्योभरि  
मानुइतैतनयेते ॥ अउ ॥ दसिहंसाइउरलाइउ  
कहिनरुधौहैवैन ॥ जकितथकितेद्वेयकिरेहतकीतै  
हैनेन ॥ यहमानुपरिहासनाइकेकेविधुमान  
सवीनाइकासौकहतिहैजोनाइकाकोअपराधदुरोवेके  
जैहैतोहसंभवे ॥ मानुकियोहोइतोमनावे  
पारोपांडुगहिजेसेपरिहासकोजतनकराकीजिये  
करसालुतेरेलोचनतिलोकेचाहिचकतकेरसौजे  
हजनधीजिये ॥ दादातोहिसौहैअवसूधीकरिभैहै

३

धी

रुहिनरुवैहैलालुहातीलाइलीजिये॥रुसियेहंसार्थे  
रोसुवसरसाईयेरीरसुवरसाइदुसुसोतिनुकौदीजि  
ये॥३५॥दोहा॥येरीयहतेरीरईक्योंहंप्रकृतिनजार॥  
नेहभरेहियराधियेंतूरुधिये लघाइ॥टीका॥यहमना  
इवोसवीकौवचननाइकासों॥कविता॥कौनपरी  
प्रकृतिदुटायैहंनकूटक्योंहं ज्योंज्योंकोजेअनीत्यों  
त्योंहंनोपेधियति॥कसंप्रानप्यारेकीदुहाईतेरीदे  
धैगतिमेरीमति सोचसोंसनीविसेधियतिहै॥जद  
पिसनेहभरेउरमेंवसाईप्यारेप्रोतिसरसाईअरुना  
ईलेधियतिहै॥तउतियेभौहनुमैवैन्ननुमैनैननु  
मेतेरेअंगअंगमेरुसाईदेधियतिहै॥३६॥दोहा॥  
क्योंहंसहवातनत्वगेथाकेभेदउपाइ॥रुदुगगदुगद  
वैसुचलिलीजेसुरंगनगाइ॥टीका॥यहगुरमानुहंस  
वीनाइकसोंकरुतिहैकेवाकौमानुतुम्हारेचलेंदूटैये  
सवीकौवचलुनाइकसों॥कविता॥आजुसजैहठ  
कौगदुप्यारीनेदेवतधीरजकौनकोधीजे॥कौनहंभू  
तिलेजेसहवातनभेदउपाइयकेमतिहीजे॥लोचदू  
तनक्योंमिलैह॥१५॥ ३५५

नुरिंचलियै वलिजां ऊं सुरंग लगाइ लगाइ चु जो ली-  
 जै 339 अजर सहं रस पाई यतुर सिकर सी ली प  
 स जैसे सांठे की गठि लगां ठै नरो मिठा स  
 न बती की सो भास धी लाइ कसों कहति है प्रवो जनु ग्रै है  
 नाइ कुच लेतौ मां नु हूटे मां निजी ति हारी में  
 न सोहन निहारी कह मो पै न कसो पर तु सो भा के विला  
 सुहे नासिका सको रि मुह मो रि भ्रुकुटी ज न धि वै ठे ले  
 चनें मां ऊ अरु नाई को प्रका सुहे रसिकर साल वार स  
 ली की विलो को द्व वि अजर सह मै जैसे रस को निवार  
 हे कहै क वि अरु स जैसे सांठे की सर सरो ति गां ठि है गति  
 नत अ पै य तु मिठा सुहे 337 हम हारी कै वै  
 हा पाइ नु पा स्यो पोर ले हि कहा अ ज हूं किये ते हूं  
 रो लो रु यह अति गुर मां नु हें सवी को व  
 नाइ का सों चंद्र चूर सी चा रु द्वा अ  
 3 लती म स्त्री फुली सुषदां निदे हा हो कहारि रही स  
 नी बहु भंति निहोरि मसै वै की भाइ नि जीवन  
 सगरे ब्रज को हरि पीत म सो अप स्यो ठ रि पाई  
 ले हि कहा अ ज हूं वलिते ह सों लो रु तरे रो वि  
 कुरा इ नि 335 सों हूं हे स्यो नतै को

सोह ॥ येहो क्यो वैठो कियो अँठी गेंठी भौं ह ॥ टीका ॥ य  
नाइका मानवती सधी को वचनु नाइकासो ॥ कविता ॥  
केती मनुहारि करिहास्वो नदला लु वजवनिता निराल  
हेति जाकेनेक चाहेतें ॥ होतौ तूं सधांनी परिग्रहाचित  
धांनी येतेरति के समाज विनुका जअवगाहेतें ॥ सोहं हे  
रेवेकों हमके तो द्वाइं सोहं तउ तेरो मनु ललक्यो नरस  
केऊ प्राहेतें ॥ कियो कहाचा हति हे सोई क्यो नकेहेअव  
अँठी गेंठी भौं हं करि वैठीअवकाहेतें ॥ ३४० ॥ दोरु ॥ नि  
रदई नेहु नयो निरधि भयो जगत भयभीतु ॥ यह नकहं  
अवलें सुनी मारि मारियतु मीतु ॥ टीका ॥ यह मान  
विरह सधी को वचनु नाइकासो नाइक के पदकी सधी  
हे जोपर किया नाइकाह कहिये तो कहिये ॥ कविता ॥  
सोअधीन भयो मन भौं हनु तो विनुनेक नअंग समहा  
रहि ॥ तारिइतौ तरसावति वावरी क्यो न करे मिलि कुं  
जविहारहि ॥ तेरो नयो निरदै हितु हे रिउस्वो जगुहें ह  
भरी भयभारहि ॥ आजुलें अँसी सुनी नकहंगति आपु  
मरे अरुमी त्कें मारहि ॥ ३४१ ॥ मानवो अलाइहि  
दुनरहीली करिसेके यह पावसरितु पाइ ॥ आनगादि  
जैसा घुटतिलें मानगाठि कुटि जाइ ॥ ३४२ ॥



मोचनप्रसंगविधिससधीकोवचनसधीसो॥कवि  
हांमिनीचपलगतिसोउस्यामघनहैंसोमिलिविहर  
रतिअतिसोभासरसातिहे॥दुमनुसोंलहलहीलति  
तलतावटिरहीसवहीकेमेंउरपीति॥अधिक  
तिहे॥कसीधैरहीलीकोउरूठलोनठानिसकेमक्ष  
मरुनिमेंकातीअकुलातिहे॥देधोरितुपावसकेने  
कीनिकाईमाईअंनगांठिघुटेमानगांठिकुटिजातिहे॥  
हाहा॥सतरभोंहस्वेषवचनकरतिकठिनमनुनींठि  
हकरोंद्वैजातिहरिहरिसोंहोंठीठि॥दीना॥ग्रहना  
प्रोढाउत्तमासवीसिखावतिहेकितूंमांनुकरियाकेनाइ  
देवमानुरहतुनाहोंनाइकाकोवचनुसधीसों॥कवि  
तिरोकडोककरिसनेठांनतिहेरुषुरुषोकेतांन  
गोंहें॥नीठिकठोरकरोंमनुहंमुयहंतेवसांनतिव  
शेंहें॥कहरसुमेरोअलीलचंलालचीजोअप  
सहंतकिजोंहें॥केसीकरोंमनमौहनकोंमुषदेव  
चनहोतहेंसोंहें॥३५३॥॥तोहीकोकुटिमा  
वतहेंवजराज॥रहीघरिल्लौमांनुधरिमानुकी  
ज॥ग्रहमानुमोचनुसधीकोवचनुसधीसों॥  
केरुसनेकीअतिसोभाकहावहोंपांनिकपोलध  
लिनुकीविनतीनसुनेंनटरीरिसराधिककेहि

हुटिगई सुतो देषा हीं महुं मूरतिकां न्नुनाई भरे को ॥ मां  
नु हीं सी कर मां नर हीं वह लाज घरी कलें मां नु करे को ॥ ३५ ॥  
॥ चलो चले हुटि जाइ गोरु रावरे सको च ॥ घरे च  
अये होत अव आय लोचन लोच ॥ ली का सह मां नु हुडा  
इवे को सघी को प्रयो जनु नाइ कौं ले जाइ वे कौं हे सघी को  
वच नु नाइ कौं ॥ कलि त ॥ जं नें को कालि हति हं री पि  
गरी क हा जिय जं नि मह रिस ठां नी ॥ के तो मै ना तं म नाइ क  
री म नु हा रि पै ये क न मां नी ॥ क्यो हूं के जो न रे रू ग भौं ह क  
हुं जु न ई जु हु ती अ ति तां नी ॥ लाल चलो अ व लो कितुं मे  
हुटि जाइ गोरु मां नु अ वे ह म जो नी ॥ ३५ ॥ लो हूं तु हो क ह ति हं अ  
पु हूं स म ज ति सै वे स या नु ॥ ल वि मों ह न म नु जो रे हे तो म  
नु रा धौं मा नु ॥ वि जं य ह नाइ का प्रो टा स घी क ह ति हे कितुं मा  
नु करि सु नाइ का स घी सौं क ह ति हे ॥ क वि त ॥ मा नु की यं  
र म नी ज न के व स पी त म हो तु म तो य ह ते रो ॥ हूं हूं य हूं अ प नें  
चित अं न ति जं न ति हें करि सां नु घ ने रो ॥ तो करौं मा नु  
री मों ह न कौं ल वि जो स वि हा घ रे हे म न मे रो ॥ नू सि वौ जी  
मै वि चार ति हें पै क हा करौं लो स न हो नु त रे रो ॥ ३६ ॥ वि हा  
मो हिल जा व त निल ज ये हु ल सि मि लें स व गा त ॥ मां न ऊ दे की  
अ स लें मां न न जं न्यो जा ता ॥ ली का ॥ य ह नाइ का प्रो टा मा

विक्रयसवेधेकृतिवसुकरिनेकनघटतुल्योत्पाद्  
ठहोतजातुहे ३५१ ॥ ३५१ ॥ करतुजातुजेतीकरि  
बठिरससरितासोतु आलवालकरपुंमतकी  
तोतितोदठहोतु ३५२ ॥ ३५२ ॥ यहसनेहकेचंगमैदठत  
नाइकाकोअथवानाइकाकोवचनुसवीसोंसवीना  
इकानाइकहसोंकहे ३५३ ॥ ३५३ ॥ आलवालकरमे  
नोजबयोनेहबीजुताते भयोआलीपुंमजंरुअ  
हे सुरतिसलिलसोंचोयाहोतेऊमगिअरपूल  
पूलपुगदेतोविरहजोतपोतुहे कौहकविक्रयजो  
जोंऊमगिप्रवलपूरकरतकरनिरससरिताको  
तुहे नेकनडिगतुवाकोत्योंही ३५४ ॥ ३५४ ॥  
रतुजेंरतुघरोईडिठहोतेहे ३५५ ॥ ३५५ ॥ तउप्रकासु  
रसुघरकरसगुनोदीपकदेह ३५६ ॥ ३५६ ॥ यह  
भरियोजितासनेह ३५७ ॥ ३५७ ॥ यह  
सवीनाइकासोंकहेनाइकहसोंकहे ३५८ ॥ ३५८ ॥  
पिचारुगहेंचिकनाईसुठारठस्यो ३५९ ॥ ३५९ ॥  
होउ ३६० ॥ ३६० ॥ कसकहेंवहुमंडितकेंगुनजोतिज  
निसोउ ३६१ ॥ ३६१ ॥ प्रहवातप्रसिद्धसर्वेजगयेक  
तिनिवाहतदोउ ३६२ ॥ ३६२ ॥ नेहुभरविबुदीपक  
३६३ ॥ ३६३ ॥ ३५३ ॥

ततुरंगकी करि करि अमित उठां न। गोइ नि बोहं जीति  
बेलुपें मचौ गाना ॥ लोक ॥ यह सवी नाइ का कौं सने हर्व  
इठता वता वति हे अरु प्रयो जनु नाइ कसैं मिला पुकर  
यो चाहति हे सवी को वचनु नाइ कसैं ॥ कवि ॥ सर  
सतुरंगु अति सुमल विमल चितु ताहि चाहता जने लौं च  
रि चलाइवै ॥ लोक लाज वागसाधि अतुराग करि  
इठ अमित उठां वनी लु करि करि धाइवै ॥ कहं कवि ॥  
अभिलाष घरी हाथ गहि जोइ निरवी हेत वजीति प  
द पाइवै ॥ धेलि वौ कठिन यह पें मच वगाने बेलु चितु  
रविलारें में ननु पहिरि जाइवै ॥ ३५४ ॥ प्रीति का उ  
पाल वी ॥ दोहा ॥ जाति मरी विदु रो घरी जल सफ़री  
की रीति ॥ नित नित होति घरी घरी अरी जरी यह प्रीति ॥  
॥ यह नाइ का पर क्रियो हे प्रोठाना इक जे वियोग  
वरी व्याकुले हे अरु प्रीति वटति हे सु सवी सैं कहति  
॥ कवि ॥ नैन अघात न हों निरखें निरखें चित चें  
परै न घरी हे ॥ व्याकुले हे सुर जाइ परी तले फ्रें जे नौ  
नु नीर मनौ सफ़री है ॥ में न मरु र वाधा चित ही नि  
॥ नित होति घरी घरी है ॥ जाति मरी दिन के विदु  
ह प्रीति जरी अरी कौं नै करी है ॥ ३५५ ॥ दोहा ॥ तो  
नेर मोही लगे मोही ये हे सुभाऊ ॥ अल अमें आवे  
॥ अमें आवति आऊ ॥ दोहा ॥ यह लाव

साजविहारीहियोकितयोंकिततेंइतआइविहारी ३५५  
दहनकुचलतिठहुकति  
दहनकुभुजपीतमगलडारि चठीअटादेसतिघटावि  
दुद्धरासीनारि ॥ ३५५ ॥ यहसंजोगश्रंगारनाइका  
स्वाधीनपतिकासवीकौवचनुसकीसों ॥ ३५५ ॥ नामे  
भुजा मनमोहनकंठचलैठठुकैऊमगेंसुघुभारी ता  
विपेकविक्रमसकैहंघनदांभिनिकोरिकैरेबलिहरी  
दहनसेतनवांनिकसोंवनीं सारी सुरंगलसेलहकारी  
कारी घटाद्विसोंअवलोकतिसांवनसांजअटांचटि  
प्यारी ३५५ ॥ दुनिहाईसवटोलमेंरहीजुसोति  
कहाइ सुतैंचैचिप्योआपुत्तौं करीअदोषिलअइ ॥ ३५५ ॥  
यहनाइकास्वाधीनपतिकासवीकौवचनुनाइका  
सों ॥ ३५५ ॥ रातिदिनाद्विकियाहैकेधामपग्योरसमें  
होतिसुघराई पासपरोससदेकैतीं यहवीसविसैतिप्रह  
दुनिहाई तूंजवतैगुनरूपकीरासिसुसोलसुहागिल  
गोंनहिआई प्रांनपतीअपनेवसकैतेंभलीकीनीसों  
तिकीहोतिवहाई ३५५ ॥ तोपरवारोंऊरवसी  
दुनिराधिनैसुजांन तूंमोहनकैऊरवसीद्वैऊरवसी  
समान ॥ यहनाइकास्वाधीनपतिकासवी-  
कौवचनुनाइकासों ॥ ३५५ ॥ रूपकीऊजारीवृष

भानकी दुल्हारी राधे तेरी ये निकई दे धिसो तिसवहारी  
 हैं। तेरे गुन गाइवे कौं तेरे ईरि जाइवे कौं तेरी पीति ही कौं  
 पनु गहो गिर धारी है। तेरी नाम रूपां नु तेरी ईहि द्ये  
 मै धरे तेरे रस वेस कठि गाइइ विसारी है। तुही करव  
 सी दूकें करव सी मोहन के तेरी छवि पर कोटि करव  
 सी नारी है। ३५५। दोहा।। तूं मोहन मन गडिर ही गाछी  
 गड निगुनालि। अठतिस दान नट साल ले लो सोति नुके  
 कर सालि। टीका।। यह ज्यइ का स्वाधीन पति का सखी  
 को वचन ई नो का सौं। कवि।। धी नवरी कटि पांन  
 सौ पे कुटु कठोर ऊठे कुच को किले वेंनी। कं वुसो कं ठु  
 ला धर सौ मुषु को रकटा छु नुकी अति पेंनी। तूं मं मोहन  
 ने जे मन ग्या लिर ही गडि जे लि कला सुषे देंनी। सौ नि  
 नुके अरमाज सदान नट साल जौं साल ति हे मृग नै  
 नी। ३५६। दोहा।। जु कि जु कि जप कौं हं पल नि फिरि  
 फिरि जु रि जमुहाइ। बीं दि पिया गमनी दमिसि दिं सब  
 जली ऊठाइ। टीका।। यह नाइ का पर किया वास कसि  
 जा सखी को वचन सखी सौ किया विदग्धा संभवे। ज  
 दि।। जानिस मो पिय का गम को चतुराई करी चित चा  
 हजे चाइ कैं। खें करि आधिक मूदि कैं ज्यो। ध  
 री पल कैं चपलाइ कैं। जो रि भु. १०५.

रानी श्री अरसाइ जनाइ जै वैठी हुती टिग आइ अर-  
ली सुदई सब अठ महीं सौ ऊठाइ कै ॥ ३७० ॥ नम  
लाली चाली निसांचट काली धुनि कीन रति पाली  
आली अनत आयेवन मालीन यह नइ का  
उत कंठिता पर क्रिया नाइ काको वचन सधी सौ ॥  
आजु मनमौहन को मगु निरघत मेरे पल कंन  
लागे पीति अरतं नहाली हे भई न भला ली देधि श्री  
परी नषता ली सुनियत धुनि चिट काली चाली निसां  
चाली हे का हरवनी को लधि मरु गज चालिता सौं जां  
नियति रीजि वन माली रति पाली हे कहा कैंहां आली  
इत मदन विपति घाली घाली से ज भई जैसी बाली वि  
कराली हे ॥ ३७१ ॥ निसि अधि यारी पीनी लपर  
पहिरि चली पियगेह कहौ दुराई कैं दुरै दीप सिघासी  
देह यह नइ का कव्या अभिसारि का सधी की  
सिद्धा अंग दीपे को अधि क्य ॥ कारी निसां की  
अंधारी महो अरु ते सीये स्नां मघटा रुकी आई ॥ प्यारी तू  
कुंज विहारी पेजाति सजीत नै मे चक सारी सुहाई ॥ घूंघट  
मैं अवन चंद दुराई कहैं कवि कस करी चतुराई ॥ देह की दीप  
ति दीप सिघासी कहौ यह कैं सैं दुरै गी दुराई ॥ ३७२ ॥  
अरी श्री सट पट परी विहुं धु अधे मग हेरि ॥ संग  
लगे मधुपनि लई भागनु गली अंधेरि ॥ ३७३ ॥ यह





की वृत्ति परागभरे भरनारी ३७  
हियत दुषदै नकौ कहि कहि वचन चुलीक सवे  
रह्यो लघै नाल महावर लीक ॥ यदनाइ  
उअधीरा मंडिता नाइ काको वचनु नाइ क्रसो  
आजु मया करि मेरें पधारे लसी छविरे निविह  
हारे ॥ क्यो कहिये दुषदै नकौ वै नवनाइ वनाइ  
हहि हारे ॥ घुंमत लोचन मोद भरे उधरे उरमे न  
हहि चिन्ह तिहारे ॥ और कौ उरह्यो लखिलालयला  
महावर लीक निहारे ॥ पटसौ पौं  
नि परी करौ करी भयान वेस ॥ नागि कै लाजी दुगनु  
गवेलि रसरे ॥ यदनाइ काको प्रोडा अधीरा  
मंडिता नाइ काको वचन नाइ क्रसो ॥ आजु  
मया करि मेरें पधारे चुली वड भागि निकी सुघरी है  
पीत मये पट कोर सौं पौं हि परी करौ मोम तिहेरि हरी  
है ॥ लागति है ममने ननु कौ अहि भांमि नि सी भय  
भूरि भरी है ॥ केलि समै अहि वेलि करंग की रे वनि  
मेसनि पै ऊ घरी है ३८९  
ननु अधर धरै महा उर भाल ॥ पतनु पीक अं  
आजु मिले सुभलीक

रभलेवनैहोलात्न॥ टीका॥ यहनाइकापोटाअधी  
राखंडितानाइकाकोवचननाइकसौं॥ कविता॥ पो  
कपगीपलकेंदुलकेंदुविनेननुमेंजुसनाईधरीहै॥  
अंजनुचारुपस्त्रेअधरांनिलिलारमहाऊरहाप  
परीहै॥ लालविनागुनमालहिऐंमुसिकानिअ  
नेकंपभानिभरीहै॥ नीकेवनेइहिवांनिकयांजुम  
याकेंमिलेसुभलीयेकरीहै॥ उच्छ॥ दोहा॥ जिहिनां  
मिनिभूषनरच्योचरनमहाऊरभाला॥ ऊहिंमनेअं  
धियांरंगीअबबुजेरगलाला॥ टीका॥ यहनाइका  
पोटाअधीराखंडितानाइकाकोवचननाइकसौं॥ क  
विता॥ बाहीकेनेनकोकाजरचोठेपैनीकोवन्सेजि  
निपौंदिक्केषोअ॥ बाहीकेपाइकोजावकरंगुलिलारम  
हाइविदेतेहैसोअ॥ ऐसेवनाइसिगारुकसेजिहि  
हैहलालविहानकोअ॥ जानतलालरंगीऊनिहो  
अंधियांअधरानिकेरंगमेंहोअ॥ उच्छ॥ दोहा॥ बाहीकी  
चितंचरपरीधरतअरपरेपांश॥ लपरावुजावतविरह  
कीकपरनरेऊरआइ॥ टीका॥ यहनाइकापोटाधीरा  
अधीरानाइकाकोवचननाइकसौं॥ कवि

तत्र सेकौहौतौ विलगुनमांलतिहौं सवरसवसकिये  
चोहेवहुनाइवै। तात्रेभागिजागेजात्रेसेजानिसिजागे  
मेरैभोरभयैत्रायेहितुहियेकौजनाइवै। जांलियतुवा  
हीकीलगीहैचितचरपटीअटपरेचरनपरतडगब  
नाइवै। लपटवुजावतहौविरहहुतासनकीकपटभ  
रेहौप्रांनप्यारेइतआइवै। ३८५ दियेगहकिजांस  
औरेगहंरहेअधकहवैनादेविधिसौहैपियनयनकि  
येरिसौहैनैना। यिवा। यहनइकाषंडितानाइकुसु  
रतकेचिन्हदुराइवै। योकेआयोयहवातकरनलागी  
वतरातमैनाइककेनेवलजौनैभयेसवीक्रोवच  
नुसवीसौं। ली। आवतप्रांनयतोहिविलोकि  
सुधासमनेहकीटीठिसौहैरे। धाइकैजोगैद्वैआइ-  
लियेहियेभैऊमगेसुषपुंजघनेरा। आधेसेवेनकह  
शेरहेमुखगांसअरेकौपकरे। रे। लालकेनैनवि  
सातविलोकिरिसाइकैराधेतहौदूगफरे। ३८५  
तेहतरैरौतौरुकरिकतकरियतदूगलोल  
लीकनहौंयहपीककीश्रुतिमुनिजलकक  
पोल। टीका। यहनइकासायराधजांलिनइ

कानेचंचलकरतिहेसुनाइककीसधीनाइका  
केचित्तकोधसुनिवारनकरतिहेसधीकोवचनु  
नाइकासोंजोनाइकासधीसोंकहेतोभूतसुरतगु  
प्रापरकियाहेइ॥कवित्त॥आजुलवियतिकछु  
औरैभांतितेरीगतिआननपेऊमगिललाईल  
लकतिहे॥भ्रुकुटीकृटिलयतिनेहसोंतेनेनीभं  
ईनेननुमेंरसकीतरंगछलकतिहे॥कहेकवि  
कस्यहधोवैरियहंतोकरीपीकलीकजानि  
तूजुवोलवलकतिहे॥ललितकपोलपरनीकें  
केंविलोकिनुश्रुतिभूषनकीमनिकीजलकज  
लकतिहे॥उधार्दोहा॥पावकुसौनेननुलगतु  
जावकुलागेप्रोभल॥मुकरहोऊगेनेकंपेमुकर  
विलोकोलात॥टीका॥ग्रहनाइकाप्रोठाअधीर  
धंडितानाइकाकोवंचनुनाइकसों॥कवित्त॥नी  
कैरसनीकेवसद्धैकैरसकेलिकीनीवाहीसंगंधअंग  
महकिरहीरसालो॥

येचिन्त्रं जन्त्रं अधरदियै विनु गुनदियै मान् ॥  
पावकुसौलगतुं ममनेननु कौंकस्यपानपा  
रेल्लो जावकु तिं लकुनाला केसी आजुरा  
जति सार सतै सर सये आर समगल आधि आ  
रसी लेदे यौ लाल ॥ ३७ ॥ दिवा ॥ आये आपु न  
ली करी मेटन मान मरोर ॥ इंद्रिक सोयह  
देवियतु क्कला छि गुनी यां ह्योर ॥ टीका ॥ यद्वं  
डिता नाइका की सवी नाइक सों कहति हे ॥ जपि  
आपु कपा करि आये भली करी आजु सुवां नि  
कुमो मल मोहे ॥ देवतरा वरी मोहनी मूरति मल  
मरोर धरें उर कोहे ॥ काहू क्वीली को ह्यो टो हल  
यह ह्योर छि गुनी के छा जतु जोहे ॥ देविरिसा  
इ जी इंद्रिक रोक क्क जानत हो अनया इ ल जोहे  
॥ लाल ललाहि पाये दुरें चोरी सों ह करें न ॥ सी  
सचटे पलि हां प्रगट कैं हं पुकारें नैन ॥ टीका ॥  
हनाइका प्रोटा अधीरा वंडिता नाइका को वच  
नु नाइक सों ॥ कवित्त ॥ आये उली दे जभात



सों ॥ ~~जगत्~~ आये हों मै रें मया करि मों हन राज  
 ति मूरति रंग भरी है ॥ पंक जने नी के पांनि की आ  
 जु हियें न घरे घमली ऊ घरी है ॥ जिनें जगामें विरा  
 जतियों ॥ ६ ॥ विद्वा जति मो मनि हरि हरौ है ॥ नीर  
 में नी लमनी को सिजात ॥ लइ दु कला म नौ ता  
 पे धरी है ॥ ३९ ॥ ~~देवा~~ न घरे सा सों है नई अल सों  
 है सव गात ॥ सों है होत न लें नये तुम सों है का वा  
 ता ॥ टी जा ॥ य हना इ का प्रोटा अधी रा घंडिता ना  
 इ का को वच नु ना इ क सों ॥ ~~वादिना~~ हरि जंनि  
 परी हम हं पै मया पग धारे इ तैर ति केलि क्रिये ॥  
 तुम तो सब के सु सदा इ क हो सब ही को वने सु व  
 पुंज दिये ॥ सु करो जि निये प्र गटे ल धिये जु ल  
 गी ट ट को न घरे घ दिये ॥ इ ग सों है न होत स को  
 च नितें अ व का हे को सों ह इ तीं करिये ॥ ३९ ॥  
 ॥ तरुन को कन व वर न वर भये अरु न लिसि जा  
 गि ॥ वा ही के अ नुरा ग इ गर हे म लौ अ नुरा गि ॥ ~~इ का~~  
 य हना इ का प्रोटा अधी रा घंडिता ना इ का वच न ना इ  
 को

॥ कावित ॥ क्वयपानपारे प्रातप्रातिके पधारे मेरे दे  
मैन मूरति विरह गयो भागिके ॥ मरंग जे वगे रसपणे  
पटी पागे आर ससु मन अंगरे अकला गिके ॥ रात्र  
लसत अतिलोचन लक्षित भये को कनद्वरन अ  
रुबनिसिजा गिके ॥ मेरे जाने पानपति वाही पान  
पारी के परम अनुराग मेरे हे हे अनुरागिके ॥ ३३ ॥  
दोहा ॥ सोहतु संगु समांन सो घे हे बहे सबु लो गु ॥ पां  
न पीक अठनु वने काजरुने ननु जो गु ॥ टीका ॥ यह  
नाइका प्रोटा घडिता नाइका कौ वचनु नाइकसे ॥ कोट  
ला ग्रंथनि में यह वात प्रमाने यौ चलि आवो मतौ सवही  
को ॥ जैसे कौ तै सोई जो गुजुरे जव होतु महा सुषदाइ क  
ही को ॥ जो विपरीति विलो किये संगु कुंठे गुत हों रगुला  
गतु फीको ॥ पानकी पीक वने पिय अठनु अंधिनि हल  
गे काजरुनीको ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ पानपियाहिय मै वस  
नवरे सांस सिधात्ता ॥ भलो दिखो यो चांनिय हरि  
हर रूप रसात्ता ॥ टीका ॥ यह प्रोटा धीरा अधीरा घंदि  
तौ हे नाइका कौ वचनु नाइकसे ॥ क



प्रेमसौंप्रानप्रियाहिनसाइहियैहियरौहुलसायो॥  
भालनईवनघरेवविराजतिमोईमयकुलसैक  
विद्यायो। लोचनरागुरुजोगुनराजतुघूमतेनेन  
तमोगुनपायो। प्रीतमपातहीअनिभलोहरिको  
हरकौधारिहपुरियायो ३५५

दोहा। हांनचलेवलिराबरेचतुराईकोचाल। सन  
घहियेयिनघिननटतअनववटावतलाल। विन  
ग्रहनाइकापोटाअधीराघंडितानाइकाकोवचननाइ  
कसों॥ जिनन॥ हांनचलेकदुरावरीलालचलावत  
जेचतुराईकोचाल। कातीनषढतपीककपोलध  
रैअतिरंगुमहाऊरभाल। घातइतेपरसोंहगुपाल  
हियेंअपजावतक्योरिसज्वाल। भागवडेअहिभां  
मिनिभालहियेअपीजिंहिभेटतमाल। ३५६  
वैसीवैजांनीपरतिऊगाऊजरेमाहा। प्रगने

नीलपटतिजुहियेवैनीऊपरीवांहा।टीका॥यहनाइका  
प्रोटाअधीराघडितानाइकाकोवचननाइकसौनाइककि  
विद्यमानसभीसौकैहा॥कवि॥काहेकौकरतचतुर  
ईकेचरित्रलालसांचभरीसूरतिप्रगतदेधियतिहे॥सौ  
हेकरैजिनिकरोनैनैककिनिसौहेकरेसौहनीसी  
सोभाअंगअंगलेधियतिहे॥कसप्रानप्यारेकुचकुं  
मकीछापरहीहातीपैअघरियहअवरेधियतिहे॥मृग  
नैनीलपटतऊपरीघयेपैवैनीऊजरेजंगामेअरग  
एदेधियतिहे॥३७॥दोहा॥नकरुनडरुसवुजगुक  
हतुकतवेकाजलजाता॥सौहेकीजेनैनजोसांचोसौहे  
घाता।टीका॥यहनाइकाप्रोटाधीराअधीरानाइकाकोव  
चननाइकसौ॥कवि॥मोहितोलागतनीकेमहारा  
तुमअयेप्रभातप्रभासरसौहे॥जेकरियेतोहियेंडरियेवि  
नुकीयेकितेडरियेडरसौ॥क्योंविनुकाजसकोचभरो  
ऊरकाहेकौकीजतुनैनलजेहे॥जेतुमसांचियेसौ  
हकरोहरितोइतक्योंनकरोमुखसौहे॥३८॥दोहा॥  
रहोचकितचहंघांचितेचितुमेरोमतिभूलासूरऊदेअ  
येदुगनरहीसांऊसीप्रलिया।टीका॥ ६

धीराबंधितानाइकाकोवचनसवीसौहोनाइकसोहो  
 देशतरावरीमोहनीमूरतिमोहिसेवैसुधिभूलि  
 रहीहै। आजुमहाद्विद्वजतिभोरनिकाईसवैअनकूलि  
 रहीहै। चाहिरसोचहंघांचकिसोचितुआंचिरजेप्रतिदु  
 त्तिरहीहै। आयेहोसूरउदोतुभयेवियनेननुसांजसी  
 कूलिरहीहै। ३६॥ ३७॥ कतवेकाजचलाइयतुच  
 तुराईकीचाल। कहेंदेतियहरावरेसवगुनविनुगुन  
 माल। यहनाइकाप्रोटाअधीराबंधितानाइ  
 काकोवचनुनाइकसौ। सोतिकेधामविरामुके  
 आपुप्रभातइतेपगुधारतहोजव। मैंनदकीद्वविअंनदि  
 काइअनंदहियैऊपजावतहोतव। क्योविनुकाजचला  
 वतहोचतुराईकीचालललाहमसौअव। मालविना  
 गुनकीऊरेपेऊपटीगुनरावरेदेतिकेहंसव। ४०॥ ४१॥  
 डुरैननिघरघस्यैदियैयेरावरीकुचाल। विसुसीला  
 गतिहैवुरीहंसोषिसीकीलाल। यहनाइका  
 प्रोटाअधीराबंधितानाइकाकोवचनुनाइकसौ।  
 जानतिहोहियकेहितसौऊनिहींकैवसेंसुष  
 सौनिसिनासी। भोरकिहंभ्रमभूलिकैलालपधारेइ  
 तेकहुकीसोऊपासी। टीठ्योदियैकहोकेसेंदुरैग्रह

ओर होते सुकुचाल प्रकासी ॥ ला गति वी स वि से वि सु सी  
उषिसापनके मुह आत्रति हो सी ॥ ६० ॥ दोहा ॥ गडे व  
डे ह वि द्वा कि द्वा कि द्विं गु नी हो र द्वा टे न ॥ रहे सुरंग रं गि  
रंग ऊ हीं न ह दी मह दी नै न ॥ टी का ॥ यह मह दी को  
वर्न नु हें अरु जो नाइ का को वचन नाइ क सों हो इ तो वं  
डि ता हो इ जो नाइ क को वचन सु सधी सों ॥ ॥ ५१ ॥

वि ता ॥ वा की ह्वी ली द्वि गु न्नी के हो र द्वा ये रु चि पुंज  
नि उई न ये है ॥ ता पर चा रु ल से न ह दी मह दी द ल वि  
दु म जो ति ल ये है ॥ ता को महा द्वा वि के म द्वा कि द्वा टे न  
अ ज्यों ग डि अ सें ग ये है ॥ ये वि य लो च न वा ही के रंग  
में रा चि के मां नो सुरंग भये है ॥ ६० ॥ दोहा ॥ कत सु कु  
चत नि धर क फि द्वा रै र ति यों घोरि तु म न ॥ क हा क रो  
जो जां हि ए लो ग ल जो है नै न ॥ टी का ॥ यह नाइ का प्रो  
उधी रा सं डि ता नाइ का को वचन नाइ क सों ॥ टी का  
॥ क सें प्रा न प्पारे अ जु प्री ति के पं धारे हो तो त न मं नु वारों क  
रों हु ल सि व धा ई यो नै क नि र स त लो ग जा हि जो ल जो है नै न ता  
को तु म क हा क रो नै नं प्री व न ल वा ई यो के ॥ ॥ यो जा न् यो रि  
म न वं धो ॥ म डो रि तु मा न वे ॥ ॥ ५१ ॥

3  
त

कौसबुचकीजेसचेतितेसुधदीजेजुलितेइनिंकरसु  
तहापाईये ॥ ४०३ ॥ विद्या ॥ अन्तवसेनिसिकीरिसुनुअर  
होविसेधि ॥ तउलाजआईफुकिविधरेलजोहेंदेवि ॥ विद्या ॥ रा  
नाइकापोठाधीरोहेसवीकौवचनुसवीसौ ॥ विद्या ॥ रा  
अनेतेवितईमनेमोहनकेलिकलासुधसोहें तातंहियेंअति  
सहाइरहीअतियाइचटाइवैमोहें ॥ मोरहीआवतदेदिजउ  
दिवेकौभईफुकिवैनसवीहें ॥ आइतउअतिलाजहियैलि  
वैसवलालुधरेईलजोहें ॥ ४०४ ॥ विद्या ॥ विल्वीलघैषर  
वरीचरीअनववैराग ॥ प्रगनैनीशैतनिन्नजैलधिवेन  
केदाग ॥ यहनाइकाअन्पसन्नोगदुधितास  
वीकौवचनुसवीसौ ॥ कानित ॥ साजिसिगारहुलाशसौ  
आहीविजोकिरहीचकिदरिहीजं कहि ॥ सोतिकीची  
कलीचोटीकौदागुलग्पाटटकौपतिकेपरजं कहि ॥  
ढाडीजकीसीकपोलधरेकरुरोसचरीचकुरीकरि  
वंकहि ॥ सोचसनीविल्वैमगलोचनिलेतिउसास  
नआवातिअं कहि ॥ ४०५ ॥ विद्या ॥ रहीपकरिपाठीसु  
रिशानैचोहचितनैन ॥ लधिसपनैतियअनर  
तजगतहुलगतहियैत ॥ विद्या ॥ यहनाइकानै

वपुमेनाइकृच्छ्रसक्तदेस्योतवजागतहंनहींहोडतित्र  
पसंभोगदुखितासवीकोवचनुसवीसौ॥कविज्ञादिप  
तत्रेलिजलोलपगेऊरलागेईसोभनेउपलिकांहीं॥  
असेमैप्यारीलद्योसपेनेहरिअंनवधूसौंक्रियोगलवांहीं॥  
पाटीसौंलागिरहाप्रगनेनिभरीरिसेनेननुभौहनिमां  
दीं॥चौंपय्येहेचितपागीप्रणीमहातियजागीतउहिय  
लागतिनंहीं॥६६॥दाहा॥गस्योअत्रोलैवोलिप्योआपे  
पठैवसीठि॥डीठिचुराईदुहुंनुकीलखिसकुचौंहींडीठि॥  
दीका॥यहनाइकाअन्यसंभोगदुखितासवीकोवचनुस  
वीसौं॥कविज्ञा॥आपनीप्यारीअनीकौंपठैपियप्यारे  
कौंआपुहौंवोलिपठायो॥अंगैद्वैआइलीयोहितसौंहिय  
राहुलसोनिग्रैजवआयो॥येतेमैकदुहुंनुकीडीठि  
नजौंहींलखीऊरतेहतचायो॥बोलेकोभारीअत्रोलो  
भस्सो॥जियकासौंकहेंअपनोउहकायो॥६७॥दाहा॥इ  
लापरौसिनिहाथतैहलुकरिलियोपिहंनि॥पियहिदि  
वायोलखिविलखिरिससूचकमुसिकांनि॥दीका॥यह  
नाइकाअन्यसंभोगदुखितासवीकोवचनसवीसौं॥क  
विज्ञा॥पेधिंपरोसिनिजेकरप्या॥११२॥

कलौ है। मागि लि यो क दू उ ठ मु सों बहु कै मनु हरि हल  
भलौ है। पीतम सों मुसिकाइ कही कवि क स कहै सवु  
रलौ है। ने करतै लखिये मनमौहन अजु भलौ ह मपाश्री  
लौ है। ४०८ ॥ जये विरह वढती विधा वरी विकल  
जिय बाल ॥ विलखी देखि परोसि न्योहर विहं सोति हिक  
ल ॥ ४०९ ॥ यहनाइ का अल्प संभोग दुखिताइ कृतान  
इकु या सों हितु नाहीं करतु तोतें विकलने हेदू सरे परो  
सिनि प्रसन्नो हे देखी ताही समैत वसरी विलखी अ  
रुनाइ कु या को परोसि नि सौर हतु हे सु वा को विलखी  
देखि परोसि नि प्रसन्न भई ॥ ४१० ॥ वा ल म को हितु  
अंन वधु सों रहे न कहूं घर ये क घरी है ॥ ता दु वत वी म हा =  
जिय वा कु ल कां म वरी क ल कां न करी है ॥ वा ठी वि धा  
अनि डा ठी सी डो ल ति गा ठी वि यो ग की गा ट प री है ॥  
सों विलखी म ग नै नि ष री प री स नि कौ ल खि मे र म  
री है ४०९ ॥ सुरंग महावरु सोति पग निरधिर  
ही अन वाइ ॥ पिय अगु रि बु न्ना ली न्ने वें अ ठी व री ल  
गी लाइ ॥ यहनाइ का अल्प संभोग दुखितास  
को व च लु स वी सों ॥ ४११ ॥ पे धि सुरंग महावरु

सोतिके प्रां कुनुवा लरही अ नुवांनी ॥ यादिविलोकिविका  
इजो मोहनुवांत येह अपनें करवांनी ॥ येतेमै पीतमकी अंगु  
रीनु ललाई विलोकि घरी विलवांनी ॥ पात्रकृज्वाल ल  
गी करमै मुरुजाति महारिसमै अकुलांनी ॥ ४५० ॥ ॥ ॥  
विघुस्यो जावकसोति पगजिर सिह सी गहिगांसा ॥ सहजह  
सौहील विलिये आधीह सी उसासा ॥ टाला ॥ यरनाइका  
अंभसंभोगदुष्मिता सखीको वचनु सखीसों ॥ कवि ॥ व  
लहसी कहुगां सगैह लविके लोमहा वरुसोतिके प्रां नि  
जांनियेह अपनें जियेमें यहातां नति नाहि सिंगारके भाइनि ॥  
येतेमै मोदभरी मुसकाति लजों ही विलोकनि देखी सुभाइ  
नि ॥ आधीयेहं सी उसासभरी अकुलाति घरी विसरीचि  
तचाइनि ॥ ४५१ ॥ दोहा ॥ हविहितु करि पीतमूलिये कियो  
जुसोतिसिगासा ॥ अपनें करमोति नुगु दोभयोहराहरहासा  
रीका ॥ यरनाइका अंभसंभोगदुष्मिता याकोहासलैकै  
नाइकनेसोतिकों पराये सुनाइका सखीसों जेहे सखीस  
खीसों जेहे ॥ कवि ॥ मांगिलिये हितुकेह डिपारैनेहास  
सुचारुप्रभानिसों पाउं ॥ ताहिलेला लचीला नुगुयो कहुं  
सोतिके प्रां मतही अनुरागो ॥ वाहीकोरी



क्रियौ लधि पात्रि हि ये च न घाह दू को गौ आपन हाथ व  
 नाइ गुहो मुकता कोहरा हरहास सौ पा गौ ॥ १५२ ॥  
 पास्यो सोर सुहाग को इ नि विनु ही पिने नेह अनिदौ ही अघि  
 यां ककै कै अल सौ ही देह यह नाइ का सो ति कौ जाल  
 सब लित देधि अरु र सम सी अघि दे धि सवी सौ को अधु नि  
 करि कह ति हे अन्न सं भोग दु खिता हो र ह र्ष करि कहै तो मना  
 बन होइ सो करि अघि उ नी दीं करी अधु अतर सौ मु  
 षवे लु उ चास्यो वार हीं वार ज भाइ कै यों ही षरो तन अर से  
 टर ठास्यो ऊठी जता व ति हे सुष सैन जगी यह जा मि नि जा  
 म वि चास्यो दे धितो प्री त म ने विनु प्री ति सुहा ग को सोर क्रि  
 तौ इ हि पास्यो ॥ १५३ ॥ स वि सो ह ति गो पाले कै कर गुंज  
 निकी माल वा हिर ल स ति म नो पि यें दा वा न ल की ज्वाल  
 यह नाइ का अधी रा धी रा खंडि ता नाइ का को व च नु स वी सौ  
 भा गि व डे नि र ष्यो व र वां नि कु अ नु की हीं व लि जं  
 अ घरी की अन्न प्र भा ल धि ला ग ति हे क हू मो हि तौ मै न की म  
 र ति श्री की दे धि री मों ह न के ऊ र भां व ती माल वि रा ज ति गुं  
 ज की नी की पाई हु ती प्र ग टी सु तौ वा हिर ज्वाल प्र नो व ड  
 ज्वाल ल ही की ॥ १५४ ॥ वि चे मां न अ परा ध हूं च लि जे व

का

डेअचैन ॥ जुरतडीठितजिरिसधिसीहसेदुहुंनकेनैन ॥ टीका ॥  
 प्रहमानमोचननाइकाकेचेवतौमांनसेविचेनाइकाकेनेत्रअ  
 पराधसोधिचेहैपैअचैनतंविनादेधैरहोनजाइयातैरिसअ  
 रुधिसीआपुहीतेछोडिकेदोअनुकेनेत्रहंसेसधीकोवचनु  
 सधीसो ॥ ५१ ॥ विला ॥ मानुकेनाप्रिनिकैचिरहीइगरातिकहंइ  
 रिअंतवसेई ॥ याहितेमेंरनुनारिनवाइरेअरसोचसकोच  
 गसेई ॥ कसकहैविनुदेधैदुहुंनुकेमैनअचैनहियैसरसेई ॥  
 डीठिजुरैरसरोसधिसीविविनैनमिलैसुषुपाइहंसेई ॥ ५५ ॥ टीका ॥  
 हा ॥ प्रवत्सपतिका ॥ दोहा ॥ अजोनअयेसहजरंगविरहदूव  
 रेगात ॥ अवहोकहाचलाइयतिललनचलनकीवात ॥ टीका ॥  
 यहनाइकाप्रवत्सपतिकासधीकोवचनुनाइकसोनाइकाकोव  
 चनुनाइकसोहोइ ॥ विला ॥ घेलतमेंकहंकांनहसोतुमकालि  
 होंजैहोचरावनगई ॥ सोसुनिकैअंहंदोरयसासभरीसवअंग  
 परीपियराई ॥ तादिनकीवानवेलीकेअंगलिअजुहंलौनमि  
 दोदुवराई ॥ लालरहोअनवोलेकहाअवहोचरचाचलिवेकी  
 चलाई ॥ ५९ ॥ टीका ॥ विलवीडभकौहैचसनुपियलविग  
 नेनुवराई ॥ पिगहवरअयौगैरराधीगैरलगाइ ॥ टीका ॥  
 प्रहनाइकाप्रियनुपतिका ॥ ५५ ॥

नैगवनुवहरा इकें गरे सौं लगाइरा धी सधीको वचनु सधीसों  
पतिप्रांनपिया विदुरे नकाहं सुधे सौरै हें प्रेमपियूष  
षप्रियै हितुमानि विदेसकौं हौं न विदा हरि आयोष्यानको  
साजु किये। निरघोड भकौं हें से नै न किये विलधी मगले  
चलि सासलिये। नकही चलिवेकी कदू वतियां कतिपा  
भरि ली ली लगाइ हिये। ४९१ ललन चलन सुनि  
चुपुरही बोली आ पुनुईति। रा ध्योगाहि जाटें गरो मनें ग  
लगली डीठि। यहनाइ का प्रवत्सपत पतिका सधी  
कौ वचनु सधीसों मध्या प्रवत्सपत पतिका प्यारी  
के भवन त्रति हितु करि प्रांनपति आयो विदा हौं न परदेसकौं उ  
महिकें ललन चलन सु निरही अनवोली दौं तिसु आनी  
नवच कहीयो कदू कहिकें चकित सी भई चक चौं हुर सौं दाये  
चितु आवतु सलिल दोअ नैननु सौं बहिकें गलगली डीठि  
रिहेरी हरिसन मुष मेरे जानरा ध्यो वे हां गाटें गरो गहिके  
ललनु चलनु सुनि पलनु मैत्र सुसा जलजे आइ। भ  
घाइनु सधिन हूं पूठै हूज मुहाइ। यहनाइ का प्रवत्स  
द पतिका सधीको वचनु सधीसों किये विधा पर क्रिया हू

विता। घेलति ही सजनी गने में वव भान कु मारि सवूप से  
गनी ॥ कां नरु कालि कै रंगे पयां नु सुनी यरु चाने जे का हरे जे  
वनवां ली ॥ अंधि नु मै च सु व्रा जल के यरु भेद की वात अली हन  
गनी ॥ यों मुहु मेरि जं भाइ वे कौ करि उठ मु पौं छति नैन सयां नी ॥ ५५  
॥ ॥ रहि है चंचल प्रानये कहि कौ न की अगोटा ॥ ललन चलन  
की चित धरी कल नु पल नु की ओटा ॥ टी का ॥ यरु नाइ का प्रोटा प्रव  
स्पत पति का नाइ का कौ वचनु सवी सौ ॥ कवि ॥ मै न सु व संगनि  
मै ने ह की तरंगनि मै अंग अंग पा गिर हं रंग मै ऊ म हि है ॥ कस प्रान  
पारै ते न छि नौ भरि न्यार भये और ही ते व स भये जै सी वां नि ग हि  
है ॥ पल नु की ओटा भये कल न लहत क्यो हू जै सी गति होति सो तो  
आवति न कहि है ॥ ललन विचारी चित चलन की वात अ व कौ  
न की अगोटा ये च पल प्रान रहि है ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ जो ह भरी अति रस  
भरी विरह भरी सवगाता ॥ कोरि सदे से दुहुं नु के चले पौरि लौ जा  
ता ॥ टी का ॥ यरु प्रदे से कौ ग व नु दोऊ नु के हित की अधिकारि स  
वी सवी सौ कहति है नाइ का प्रो वित पति का ॥ क  
काज कौ कां नर की नौ प्रया न म हूर त साधि

दुहं लुकें जें अकलात विद्योगत्रे सूलसलेई चाह भरी असुषी  
ते भरी रसरीति भरी वति यां निरलेई पौरिलें जात दुहं लुकें  
रतें जालीरी कोरि संदेसे चलेई ॥ ४२९ ॥ मिलिचलि  
लि मिलि मिलि चलत अंगन अघयौ भांनु ॥ भयौ महरथने  
रकौ पौरी प्रथम मिलानु ॥ ४३० ॥ ग्रह प्रदेस पयां नकौ  
यसखी सखी सैं कहति है ॥ ४३१ ॥ रमन गमन परदेसकौ  
विचारचित साधि सुभल गन गने सकौ मनायौ है साह  
सुकै ऊर प्रां नपारीं इंकटू नकसो मंगल दरेई गहवर गै  
जायौ है चलत मिलत मिलि चलत चलि मिलत चलत  
चलत मिलत यों हीं वासर वितायौ है भोर कौ महरतु भ  
नहीं मैसां ऊर्भई पौरि हीं मै प्रथम मिलानु ठहरायौ है ॥ ४३२ ॥  
वां माभा माकां मिनी कहि वोलै प्रांनेस ॥ प्यारी क  
तल जात नहि पावस चलत प्रदेस ॥ ४३३ ॥ ग्रहनाइ क  
ठा प्रवत्सपत पतिकानाइ काको वचनु नाइ कसों ॥ ४३४ ॥  
आये हो मागन मोपे विदाइत पावसके घुमडे घनक  
कां मिनी भां मिनी वां मैके वोलतु दु प्यारी कहो मतिने

लोयारंचकहंनलजातहिंयैहितुकेअवयेदुषदीजतभारे॥अैसेमे  
कंडिविदेसचलेकरौमेरीकहागतिप्रांनपियारे॥५३॥प्रो॥  
तंपातिकासाहा॥पियप्रांननुकेपाहुरूकरतजतनअतिचाएु  
जाकीदुसहसापस्योसोति॥निहंसतापुआरि॥प्रहनाइका  
प्रोषितपतिकासवीकौवचनुसवीसौ॥कवि॥तापतपीवि  
रहानलकेवलवीत्रहनागरिषींननिहारी॥आंधिनुरुंभैरेह  
प्रवअनिकेप्रांनसैवेसुधिअंनविसारी॥सोतिसैवेउपवारक  
अनिकेपियप्रांननुकीरववारी॥दाहनवाकीदसानिरेषेकन  
हैपस्योजियसंकटभारी॥५४॥दोहा॥पावकजरतैमेहजरदा  
इकदुसहविसेवि॥हैदेहवाकेपरसयाहिदृगनिहोदेवि॥दीक॥  
सहनाइकाप्रोषितपतिकाविरहिनीनाइकाकौवचनुसवीसौ॥उ  
देवगसौनाइकुरुसवीसौकैहैतौसंभवे॥कवि॥धूमधेंधुर  
वागहरेअसत्रंमरपूरंमहीअवगाहे॥देविरोपावककीजरतंसह  
मैहकीज्वालकरालमहोहे॥जाहिभट्टपरसैहोदेह्यहनेननुही  
निरवैतनुहोही॥जागिरधारीविनावचिवेकौतुहोकरि॥उज्ज्या  
उकहोही॥५५॥दोहा॥कहेजुवचनवियोगिनीविराविज  
अकुलार॥क्रियेनकोअसूनासहितसुचाति॥

यहनाइका प्रोषितपतिका विरहिनी सवीकौ वचनु सवीसौ  
प्रांनपत्नी विनुवा तियकौ इकसाथ सवै दुषअंनि परै  
वाकौ दसाल विपासके वासी असास भैर गहरै गहरै है जेकरै वै  
नवियोगिनि नै अकृलाइ वियोग विधानि भैरै है तैवति पांअव  
वोलिसुवां सवही अंसुवा नि समेतिकेरे है ५२५ तै दुसहवि  
रहदा रुनद सारै हन औ रउपाइ जात जात जै राधियतु प्यौ कौनो  
असुनाइ ५२६ यहनाइका प्रोषितपतिका विरहिनी सवीकौ व  
चनु सवीसौ दसअवस्थाके भेद मै व्याभिजांनिये ५२७ प्रांन  
पिया परदे सुक्रिये तियअंग अन्नंगतरंग विताये सीरौ द्वै जांनि  
जैरै कवहं उपचार विचार जिते सवछाये ५२८ इठिनि धारववासि  
हित मुरजाइ रहीं नभये मनभाये ५२९ सैकहं जौ वचेतौ वचेकहं  
गांउते भांउते मोहनु आये ५३० रहौ अचिअनु नल  
हेअधिदुसासनु वीरु आलीवाटतु विरहजै पंचालीको  
चीरु ५३१ यहनाइका प्रोषितपतिका प्रोठानाइ काकौ व  
चनु सवीसौ ५३२ चिंनु परे नहि जीउरहे दिगौ नैननु  
ऊरहे जनुछाये ५३३ भावै नभोजनु भौनु सुहाइ नहाइ हिये परित  
पतचाये ५३४ अचतुअधिदुसासनु वीरु जकौ वनु कैतउअनु  
पाये ५३५ बाहिरके विकुंर विरहाअवदोपतीके परज्येअधिकार्ये

तियहियनिग्रजुलगीचलतपियनघरेसवरो  
 ॥सूखनेदेतिनसरसईघोठिघोठिघतघोटा॥टीका॥यह  
 नाइकापोषितपतिकासयांकोवचनुसधीसौ॥कवि॥  
 प्राजुनैसंगरमौरारंगअनंगतरंगअमंगिसुहाई॥काहर  
 ककरकोनघरेयकहूतियकेऊरमैलगिआई॥पीपरदेसग  
 योजवतैऊनिनीधनकोधनुपाई॥वेवतघोठिघरोठिघरोठि  
 नसूखनेदेतिवैहसरसाई॥५२॥विरहनिवेदनु॥दोहा॥म  
 रिवेकोसाहसुकेकेवडेविरहकीपीरा॥दोरतिहैसमुहंससि  
 हिसरसिजसुरभिसमीरा॥टीका॥यहनाइकापोषितपतिका  
 सधीकोवचनुसधीसौ॥कवि॥श्रीमनमौरनसौजवतैवि  
 कुरीतवतैनपलोकलपावति॥नीरविनासरुरीज्योवरी  
 तलफैरुभईदुवरीअतिनावति॥साहसुकेमरिवेकोसधीसु  
 ऊघारिकैआननुजौनमैआवति॥

न १५१

तियतनहिलगनिअगि



यहनाइकाप्रोषितपतिकविरहिनीसवीकोवचनुसवीसौ  
प्राणपत्नीविनुवातियकोइकसाथसवैदुषअनिपरै  
वाकोदसालधिपासकेवासीकसासभैरगहरैगहरैजेकरैवै  
नवियोगिनिनैअकृलाइवियोगविद्यानिभरैवेवतिघाअ  
वोलिसुवांसवहीअसुवानिसमेतिकरै॥४२॥दुसहदि  
रहदारुनदसारैहलजौरअपाइजातजातज्यैराधियतुप्यैकोना  
असुनाइ॥४३॥ यहनाइकाप्रोषितपतिकविरहिनीसवीकोव  
चनुसवीसौदसअवस्थाकेभेदमैव्याभिजानियै॥कवि॥प्राण  
पियापरदेसुकियौतियअंगअनंगतरंगविताये॥सीरौद्वैजानि  
जरैकवहअपचारविचारजितेसवछाये॥इठिनिधारववासि  
हितमुरजाइरहीनभयेमनभाये॥असैकरैजौवचेतौवचेकरै  
गाअतेभाअतेमोहनुआये॥४४॥रहौअचिअनुनल  
हेअधिदुसासनुवीरुआलीवालतुविरहज्यैपंचालीको  
चीरु॥४५॥ यहनाइकाप्रोषितपतिकाप्रोथानाइकाकोव  
चनुसवीसौ॥कवि॥चिनुपेरैलहिजीअदेहेदिगलैननुमा  
ऊरैहेजनुछाये॥भावैनभोजनुभौनुसुहाइनहाइरियोपरिता  
पतचाये॥अचतुअधिदुसासनुवीरुजकोवलुकैतअअतुन  
पाये॥बाहिरकेविकुरैविरहाअवदोपतीकेपरज्यैअधिकार्ये॥



यह नाइका प्रोषित पतिका ऊहे गदसाना इव  
चनु सवी सौर तरंग सवी सवी इ सौं कहें तो वें  
वाल म वियोग तै विकल अति प्रान ककु सूज तुन  
व न्हे दु वही कौदा उरी और उपचार करि मारि मा  
मरी जौहि तू हे तो कस प्यारे कौ मिला उरी घरी घ  
चति गुलाव के सलिल तूं कियो क हा चाति हे मो इ  
ता उरी भरि ति घरी ये मारी मारी की डरी ये विरहा  
निवरी ये अब नाहरी जिवा उरी ५३ ॥ ॥ पल  
नुद गति वरुनी नुव टि नहि कपोल ठहरात अं सुव  
परि कति या छिन कृ कृ नि कृ ना इ कृ पिजात ॥ ॥ ॥  
यह नाइ काम धा प्रोषित पतिका सवी कौ वचनु सवी  
सौं नाइ कह सौं निवेदनु करे तो संभवे ॥ कविता व  
ल नंद लाल कैं वियोग तै विकल अति पल पल विधि के  
सेवा सर विहाते हैं ॥ विरहात ताई की वट निवरनी न  
जाति ये ते मानत ये ना के कु सम से गाते हैं ॥ पलुतै प्र  
गृ वट त वरुनी नुहंते परत कपोल पै तुरत ठरि  
जाते हैं ॥ सलिल की वृंदता ती छिति पे परति कै सेंडा

परिअंसुवाह नकिह पिजात है ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ फिरि  
पेदे सुधि छाई पोहिहि निरदई निरासा ॥ नई नई बहुरौ द  
ई उसासि उसासा ॥ टीका ॥ यहनाइ का प्रोषित पतिका  
की अत्रस्था सखी सखी सौ कहति है ॥ कविता ॥ अली  
योगु भ्रैवन मालीको बाकुल बालवरी अकुलार्श ॥ पां  
नकी पुतरीके परी उपचार विचार कहुन वसाई ॥ जैसे  
वाहिदई सुधिरे सुधि छाई पिपादु वरासि जगई ॥ वानि  
रे सौं कसकहिये जिनिपे ममरकी पीर नपाई ॥ ४५ ॥  
श ॥ विरह जरी लखि जौ गननु कसौ न अहि के वारा अ  
ह अउ भजि भीतरी वरसत अजु अगारा ॥ टीका ॥ यहन  
का प्रोषित पतिका अदवेग अत्रस्था सखीको वचनुनाइका  
सौं सखीको वचनु सखी सौं ॥ कविता ॥ विरह विकल मग  
लोचनी विवस भई हरि विनुत न मनयां नतरसत है ॥ प  
नपल वरति न धरति रती कुधीर आधिक अने गदु वर  
दसरसत है ॥ जौ गननि निहारि वारवार यों पुकारि कही  
अलीये अने अत पात दरसत है ॥ अहे भजि आवे गि

भीतर भवनदे विचित्ररतें आजुतौ अंगारवरसतें ॥५२॥

इत आवति चलिजाति अत चलोदसात कहा घाच  
ठीहि डोरें सैरै लगी असासनुसाध ॥५३॥ यहनाइका प्रो

वितपति काकसताको आधिकार सवी कौवचनु संखीसौं न  
इकसौं सवी सवी हसौं कहैतौ होइ दसअवस्थानुमें व्याधि-

स्त्राससं लारी सुकमारतानसं भवे ॥५४॥ मोहनला

लति हारे वियोगरही वजनागरि चित्रकटीसी होतिदि

नैदिन और हीरंग अंगकी वेदनि अंगवठीसी ॥ वातन

आई इती दुवराई सवी लवि सोच समूहमें ठीसी ॥ आवतिज

तिदसात कहा घाअसासके साधहि डोरें चठीसी ॥५५॥

नैकुनपुरसो विरहजरनेहलताकुमिलाति ॥ निनति

नहोति हरी हरी शरी जालरतिजाति ॥ ५६॥ यहनाइका प्रो

वितपति कानाइक कौवचनु ॥ ५७॥ नंदके दुलारे ल्या

रे भयेजवही तैं वहता तो कैं कैं कैं अकुलातिहे ॥ सुधि

आं अँ घरी घरी मूलसे सलज्ज अर प्रानपरे षपरवस

कछूनवसातिहे ॥ दारुन विरहजरजदपिसनेहलता

पुरसी तदपिनै कहुं नकुमिलातिहे ॥ दिनदिनदिन

नकुमगि अधिक होति हीरो हरी वरी वरी जालर तिजा  
हो ॥ ५५ ॥ दोला ॥ यज्ञे कर औरै कछु लगी विरह की लाइ ॥ प  
रे नीर गुलाव के पीकी वात बुजाइ ॥ टीका ॥ यह नाइ का प्रो  
तपतिका अत्रस्था सवी सवी सौ कहति है ॥ कवि त्रै  
र साल धि हो अकुलातिकितो उपचार विचारि थकीरो ॥  
ननवो ले नवो ले विलोचनु द्वरी होति छिने छिन पीरी ॥  
गने हि यै कछु औरै अनौषी वियोग हुता सन ज्वाल लगीरी ॥  
नीर गुलाव के दूनी वरै पिय प्यारे की वात हि होति है सीरी ॥ ६५ ॥  
॥ ६६ ॥ होमति सुख करिकामना तुमहि मिलन की लाल ॥  
ज्वाल भुषी सी जरत लविलगनि अगिनि की ज्वाला ॥ टी  
का ॥ यह नाइ का कैलगनि की ज्वाल की अधिक ई है सुस  
धी नाइ कसौ कहति है ॥ कवि त्रै ॥ कसपान प्यारे लाल  
जव ही ते भये प्यारे तव ही ते प्यारी पलक लन धरति है ॥  
ससकि ससकि अति दीरघ कसा सलेति तल फ्रितल  
फ्रिसुधि बुधि विसरति है ॥

चंडज्वालनिहचोहियेमेंज्वालामुखीकोधरतिहे। मिलिवे  
कीकामनाहियेमेंधरिइंदुमुखीअवसुससुबलुकोहोसु  
सोकरतिहे॥४६॥ ॥ नितसंसोहंसोवचनुमनोसु  
हिअनुमानु॥ विरहअगिनिलपटनिसकेऊपटिनमोह  
सिचांनु॥ ॥ यरुनाइकाप्रोषितपतिकासखीकोव  
चनुसखीसो जोनाइकसोकोहोतौविरहुनिवेदनुहोश  
विदुरेतिहारेमनमोहनपियारेवालनिपटक  
टियेनकरीमदनसताइके। सवहीकेरहुतुहियेमेंयहीस  
सोवहंसोअवलाजिकेसेरहोठहराइके। जानियतु  
यहीऊनमानुताकेवचिवेकोआनिपचिरास्योअन  
गनितऊपाइके। विषमलपटलधिविरहहुतास  
नकीऊपटिनसकतुसिचांनमोचुआइके ॥४७॥  
रहा॥ विरहसुकाइदेह॥ नेहुकीयोअतिउरुउहो जैसे  
वरसेमेह॥ जरेजवासेजोजमै॥ ॥ यरुनाइकाप्र  
षितपतिकाविरहकीअससनेहकीअधिकाइसखीये  
कहतिहेअरुनाइरुहअपनीअवस्थाकहनुहेसखी

मोहसभत्रै॥ कवित्रै॥ देवो वियोगनेनेहु सुधाइ करी  
वरीरसौमां सुनमासौ॥ नेह लताऊलहरलंईहरी  
करे हेरिसधीनुहूँकै पस्योसासौ॥ चावतिहेजियमें  
ऊपमांकविऊकैहेयहदेवितमासौ॥ ज्येवरसे  
पनपावसकेसवरयजिमैजरेआकजवासौ॥ १४८॥  
शेख॥ विरहविधादिनपरतहीं तजेसुसनुसवअंग॥  
रहिअवलेंधोयोभयोचलाचलेजियसंग॥ १४९॥  
यहनारकापोषितपतिकाजाइकाकोवचनुसधीसौ  
सधीकोवचनुनारकसौअसधीसधीसौकैहेतौसभ  
वै॥ कवित्रै॥ जेलेंपाननाथकेसमीपरहेतौलेंअंग  
अंगसरसांनेसुवरसकेकमगिकै॥ न्यारेहोतप्यारे  
केवियोगविधावंटतहींनातोकरिहातौत्रैअंग  
अंगकेभागिकै॥ दुसकीनिकाईकहुवरनीनजई  
तिमाईयेतौदुसससौतअरसौपेमपागिकै॥ पेनभ  
योहीनैरीइहालेंसाथदीनैअवचलिवैविधा  
सौसंगपाननुकेलगिकै॥ १५०॥ ॥ ॥



कागरहियैभयो लषाइनटां कु विरहतचो अघस्यो सु  
अवसेहडके सो आं कु विरहा यहनारका प्रो वितप  
तिका सधी को वचनु सधी सो नारकाइ को वचनु सधी  
सो संभवे विरहा जौ लो समी परसो हरि तो लपि  
मैं अपनो मन भायो कस्योई कांडू लसो यरु मेदु न  
जीयको जद पि हो सव भौं नु भस्योई नेहु छतौ ईहु तो  
दिय कागरको नडू भांति न जां नि पस्योई सेहडके  
सो लि पाऊ संदी अली विरहा नि नि गिनि तै अवह  
अघस्योई ५५० चोहा जस्यो जु आ गि वियोग की व  
हो विलोचन नीर आठौ जां म हि यो रे हे अटेरो असा  
ससमीर विरहा यरु अवस्था विरह की नार कु अ  
चयानाइ का अपनी अवस्था सधी सो कहे विरहा  
सवही तै क ठिन सनेह की लगनियह किनि सुषु पा  
यो मनु प्रेम पशु डारिके जाके तन लागे सोई जानत  
हे मेदु यरु वेद नि विषम को नु सकतु समहारिके कहे  
कविक सयह जौर अरु भुत गति प्रजस्यो वियोग आ  
गि वसोइ गवारिके तउ देवो आठौ जां म अटेरोई र

हियो दीरघऊसासनुको प्रवल विचारि कै ॥ ५१ ॥ सो  
॥ मैल विनारी ज्ञानु करि राओ निरधार यहा बहरी रो  
पुनिदान वै वैदुओ धरि वैहा टीका ॥ यह लगनि स  
को वचनु सघीसों अंतरंगत सघीको कहि वौ है ग्र  
नाइका अथवानाइ कुहुअपनी अवस्था सघीसोक  
ह तो संभवे ॥ वदित ॥ काहेको घोरि घनो घन सास  
वथां उपचारनु कै तनु वारो ॥ मैल विनारी कसो  
निरधार लहे बयह भेदुन वैदु विचारो ॥ जाको स  
पुबुभोऊर मै किनिता हिदिवाइ विथाय हरारो ॥  
ओ धरि वैदु वैहे उपचारु वैहे पुनिरो गुनिदान  
निहारो ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ कोन सुनें कासों कोहें सुरति वि  
सारी नाहा वदावरी जेो लेते है ये वदरा वदराहा टीका ॥  
यहनाइका प्रोषितपतिका विरहकीदस अवस्था भेदमें चि  
तनाइका को वचनु सघीसों ॥ वदित ॥ कासों कोहें कोनु  
यदेहा ॥ ५३ ॥ वस ॥ वका

हरी येतेपरवरज्योनमोनेक्योंहंपानलेतवदाकी  
दरानिपटवदराहरी॥ अंगुदेतुविकलअनंगुतनुता  
तेहेवेदनिदरतिअमरतिचितचाहरी॥ कसपानपा  
अंतरेकीदुहाईनसुहाइकधूवरसतुनेननुतेसलित  
प्रवाहरी॥ ५५३॥ सूरति॥ वि॥ स्पामसुरतिकरि  
धिकातकतितरनिजातीस॥ असुवनिकरतितरोस  
कोंविनुकधरोहोंनीस॥ वि॥ यहनाइकाप्रोवि  
पतिकादसअवस्थाभेरेमेंस्मृतिसवीकोवचनुसवा  
नो॥ वावि॥ श्रीमनभावनेकैविदुरैववभानसुता  
अतिहीअकुलांनी॥ भोजनुभोंनुसवीनसुहाइसुह  
रनवासरवासरवांनी॥ सूरसुतारिनिहारिहीअ  
हारिकधूरिकीपहिचांनी॥ आसुनिकेपरवाहकसा  
विनयेकधरोहोंतरोसकोपांनी॥ ५५४॥ वि॥ सोव  
जागतसपनवसरसरिसचैनकुचैन॥ सुरतिसाम  
नकीसुरतिविसरैहूविसरैन॥ वि॥ यहनाइक  
नैचितकीप्रोतिसवीसाकहतिहेदसअवस्थाभे

अतिसंचारी ज्ञानिये ॥ कविता ॥ कछु न सुहात निसिद्धा  
 न नखियत कौं हूँ कहा बहों वात परवस परे मनकी ॥ सो  
 तहं जागत हूँ सपनें इंचित घटी रहे चित वद्ये वानि व  
 हे प्रीतिपनकी ॥ रस हूँ मैं रिस हूँ मैं चैन हूँ मैं चैन हूँ मैं कौं  
 न मैं वगार हूँ मैं वाट हूँ मैं वनकी ॥ भूलनि सुरति निजत  
 न हूँ की त अ ब्रह्म लति न के सैं हूँ सुरति स्यां मघनकी ॥ १५५  
 दो ॥ भीय हूँ सै सै सौ जहं सुवद दुषदेत ॥ चेत चांदकी  
 चांदनी डारति कौं चेत ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोषितपति  
 का रस अ वस्थानुं मैं ऊहे जनाइका कौ वचनु सव्यो सौ ॥  
 कविता ॥ बाल भई अ वमालती माल समीर तै पीर हिये सर  
 साई ॥ पाव कुपुंज सौ चंपक चंदनु चंद्र कुचंदु लघो न सु  
 दुई ॥ चेतुरे चित चेतकी चांदनी वेधतु वाननु का सु  
 क साई ॥ अंनि वन्यो अ व जै सौ समीर दुषदेत सवै सुह  
 ॥ १५६ ॥ दो ॥ हे ही वौरी विरह वसकै वौरी स  
 गां ॥ कहा जानिये कहतु है ससिहि सीत करनां ॥  
 दो ॥ यह नाइका प्रोषितपति कानाइका  
 ॥ १५७ ॥

धीसो ॥ कुंभजहं अचयो सुपचयोनया हीतै ऊष  
लिजस्यो तमहं उरपिविषकंदुँ सो दोषो ज्वालनिकों  
कलंकी खें चठा यो सी सई सकहा जां निहितुकी नों मति  
मंदसों कै धों सवही की मति हीं न भई मेरी ज्वाली कै धों  
हों हीं वीरो भई विरह के दंद सो दे धियतु पावकते विषम  
विसेष वेष सो तें काहे ते कहत त्रै सो चंदसों ॥ ५५ ॥  
औरै भांति भये वये चों सरु चंदनु चंदु ॥ पति विनु अति पा  
रतु विपति मारतु मारुत मंदु ॥ दोषा ॥ ग्रहनाइ का प्रोधि  
तपति का दस अत्र स्थामै उ भगे नाइ का कौ वचनु सकी  
सों ॥ कविता ॥ त्रै सो हितु करि अत्र त्रै सो विसरई निठर  
इना कन्हई की न कहत वनति है ॥ जेई है सुअद तेई भये दुष  
दाई अत्र कहा कहो माई अत्रु लनाई अति मति है ॥ चंदन सरो  
जचंदु चों सर सिवार चार चंपक हू चंदिका की औरै भई  
ति है ॥ भयो निरदई मंद मारुत हू मारतु है प्रान प्पारे प  
ति विनु पारतु विपति है ॥ ५६ ॥ हरि हरि करि वरि  
वरि कठति करि करिष की उपाइ ॥ वाको जुनु वलि  
वैद ज्यों तोर सजाइ तो जाइ ॥ दोषा ॥ ग्रहनाइ का

व्या

वित्तपका <sup>का</sup>धि अत्रस्था विरहनिवेदनुसखा  
 वचनुसखीसौ ॥ कविता हरिहरिरठतिवट  
 विधाद्धि बुद्धिनुवरिवरिऊठे वोकै नैरें जातज  
 ये ॥ करिकरिधकी हें ऊपाइसव आनी अवकड्  
 वसाइकर सोचभार भरिये ॥ ये हो वलिवेद अत्र  
 वरे सुरसही वचैतौ वचै <sup>वाल</sup> चलिनाकी पीररिये ॥  
 रोवौता पुटारिये धर्म उरधारिये निवारिये गहस  
 रुनाके ठारठरिये ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ मरीडरी किट  
 रोविथा कहावरी चलिचाहि ॥ रही कराहिकराहि  
 अति अत्रमुय अहिन आहि ॥ टीका ॥ ग्रहनाइका  
 प्रोषितपतिकादंस अत्रस्था भेदमे जडतासधीको  
 वचनुसखीसौ ॥ कविता अत्रि सीकें छंडिविदेस  
 गयो हरिजो कवहुं विदुरी नघरी है ॥ हाइये हेर  
 लाही इरही जति याकी लोखे प्रतिमे ॥ वा

लवियोगवजागिमरीवेकराहनिच्योत्रवर्षेवि  
सरीहे। पीरठरीकिपरीहेमरीचलिदेवित्ररीव  
हादूरिअरीहे॥५६॥दीहा॥ मरनुभलौवरुविर  
तैग्रहविचारुचितजोइ॥ मरनुमिटेदुवयेकजो  
विरहदुहंदुयुहोइ॥ टीका॥ ग्रहनाइकाप्रोवितपति  
कानाइकाकोवचनुसधीसौंअरुनाइकरूकोट  
अनुसधीसौसंभवे॥ कविनानेकरीकेविहुरंस  
हीसुवसाजभयेदुमदाइकभारे॥ नैननुनीरुज  
वरसैतरसैदतिआविनुप्रांनपियारे॥ आलीविये  
गविधावरिवैतैभलौमरिवौमतमान्योहमारे॥  
ककोदुअुमैरैमिरिजातुवियोगुसुहेतुहेदोअेदु  
घारे॥५६॥ विरहनिवर्त्तनाइया॥ करकेमीडेंकु  
समल्लोंगईविरहकुंभित्ताइ॥ सदांसमीपनिसवि  
निहूंनीठिपिदानीजाइ॥ टीका॥ ग्रहनाइकाप्रो  
वितपतिकासधीकोवचनुनाइकसौसधीसधीहू

नद  
केहे नदि ॥ पारे नद ला लति हरे विहारे मोपे  
हत वने न जैसी भई वाको गति है ॥ जाली जेर रति  
स वासर समी पति नहू पै पाह्यां नी वर नी ठिहीं  
रति है ॥ वासरे धि पास जे वो द्वां डौ पास वा निहूनु  
पते मान मदन हतासन वरति है ॥ कोमलुकुसमु  
मानौ मी डौ कर वर करि असे कु भिनो ॥ ३ मुरज  
गई अति है ॥ ४ ॥ देहा ॥ नैक न जानी परतियौ  
पस्यो विरहत न द्वां मु ॥ ७ ॥ ठति दि ये लौ ना दि दि द  
रि लिये ति हा रो ना मु ॥ ८ ॥ ॥ यं ह ना इ का प्रो वित  
पति का विरह नि वेद नु स मी को वच नु ना इ क सौ ॥  
क विह ॥ ला लति हरे वियोग ते वा के विहा ति थरी  
विधि वासर को सी ॥ द्वां मु भ यौ अति हीं तनु वाम को  
कां मु द्दे सु धि वु धि हरी सी ॥ से जे मे नै क हू जां नि  
पारे न हि दे वि ये कंच नरे अलि धी सी ॥ ९ ॥



सुनें इकवारहीं नादि उठै दुति दीपक ही सो ॥६५॥ दूर  
जौ वाके तन की दसा देवै गा चाहत आपु तौ वलि  
नै कुविलो कि घै चलि अचको चुपु चापु ॥ विना  
ग्रहनाइ का प्रोषित पति का व्याधि अत्र स्थासवी वै  
वचनु नाइ कसौ नाइ कालें चलिवो प्रयोजनु है  
कविता पाहन सी पुतरी ज्यों परी वरसैं अ सुवास  
रसैं तन तो वै ज्यों ज्यों करे उपचार वरै त्यों पस्यो ह  
लोगनु कौ अति पावै ॥ वाकी दसा अ वत्रै सी भई  
रि जौ अत्र लो क्योई चाहत आवै तौ वह सो चु लै  
नवलाइ त्यों यो अचको चलिये चुपु चावै ॥६५॥  
है ॥ तजतु अठान नहठ पस्यो सब मति आवै  
जाम भयो वा मुवा वाम कौरहतु कां मुवे कां मु  
॥ यहनाइ का प्रोषित पति का विरह निवेदनु  
वीको वचनु नाइ कसों सवी सवी सों कहै तौ हूं संभ  
वै ॥ कविता ॥ लाल मनना वनति हारे विदुरै तै

आल विरह अग्नि में वरतिने दुना धै हें। वे ही का  
मुका सुवां मदे व के भर म भू लि द त्पो वा ही वां म सें  
वे य म वे स वां धै हें। सठ म ति हठ भरि द या उ र प  
र हरि अ ठो जां म र ह तु स रो स स रु सां धै हें। की  
जे धौ क हा ऊ पा ऊ छे ड नु न जो ट पा ऊ त कि ह  
नि वे कौं रा ऊ ला जे प्रो र्हे वा धै हें। ४५५। दोहा।  
वाल वे लि सू वी सु ष द रं हिं रू वी स व धां मा। फेरि ड ह  
उ ही की जिये सुर स सौ चि घ न सां मा। टी का। य र्हे नु  
रा ग नि वे र नु स वी को व च नु ना इ क सों पुर स मां न के  
प्र स डे मे स भ वे॥ क वि त्त॥ हि तु क रि जा को हरि ली जे  
चि तु ला ल य ह कि ते हे क चि त ता हि ये तो दु ष डे जिये।  
जा न ते हो नी कें प्री ति रो ति कौ प्र वी न प नु की जे न ग ह र  
सु वु दै कें सु वु ली जिये॥ रा व रे दु स ह रं हिं रू वे स व धां  
म हीं सों वा ल वे लि सू वी जा हि नि र ॥ ११ ॥ जे ॥

प्यारे घनस्रामजगजरनिनिवारतहोसोंचिकेंसुरसप्रे  
रिडहडहीकीजिये॥५६॥देव॥लालतिहारेविरस्कीच  
गिनिअनूपअपार॥सरसैंवरसैंनीरहूकरहूमिटेनजार॥  
५७॥यहनाइकाप्रोखितपतिकासवीकोवचनुनाइकसौ  
विरहनिवेदनु॥कवित्त॥कसपानप्यारेलालविधुरै  
तिहारेवालअतिहोविकलगमिलिवेकौतरसतिहैसी  
रीहोतितानैंअपचारमीडेंतातीकिनअकुलातिछाती  
परपीरनसरतिहै॥वाकेतनरावरेवियोगकीअगिनिअ  
सीअरभुतगतिसौअपारदरसतिहै॥महाजरहेंतजारसी  
रीनपरतिपजरतिज्यौंज्यौंनीरकीभरतिवरसतिहै॥५८॥  
दोहा॥देवतिवुरेंकपूरलौंअपेजाइजिनिलाल॥छिनधि  
नजातिधरीधरीछोंनछवीलीवाल॥विजा॥यहनाइक  
कोअनुरागुनिवेदनुसवीकोवचनुनाइकसौविरहनि  
वेदनुहूहूहोइ॥कवित्त॥विधुरैतिहारेलालविलवी  
विकलवालपरीविललातिकौंहंधीरुनधरातुहै॥

प्रमाणकस्मभरपरपरजपापर...

वाकोगातुहे॥ कालिहो सुत्रा सुनां हि आजु हो सुत्रवनां हि  
याते परितननुकों जीऊ अकृ ला तु हे ॥ जैसी छि नही जनि

विलाइ जिनि जाइवाल ज्यों क पूरवां लीतें क पूर ऊडि जातु  
हो ॥ ६५ ॥ दोरा ॥ हंसि कतारि हियें तें देखें तुम जु तिहि दिना

लाल ॥ राषति प्रांन क पूर ज्यों वदे चुहट ली माला टीका ॥  
वृत्र नुरी गुनि वेदनु सवी कौ वचनु नाइक सौ ॥ कवित्त ॥ दू

धरी जैसी भई विदुरै तिय से जइ मे न लघी परै सो तो ॥ ग्रानी  
विलोकिकें मी उति हाषण योइ क सा घ सवे सु सु जो तो ॥ वीस

विसे ऊडि जाते क पूर लें राषतौ प्यारी के प्रांननु के तो ॥ जो  
ब्रह्म लाल ति हो सो द्यो घुंघुं ची कोहरा ऊर मां ऊ न हो तो ॥ ६६

दोहा ॥ कहा कहें वाकी दसा हरि प्रांननु केई सा ॥ विरह ज्वा  
लन जरि बालवै मरि वो भयो असी सा ॥ टीका ॥ घर नाइका

प्रो वितपतिका सवी कौ वचनु नाइक सौ ॥ कवित्त ॥ प्यारे  
मनमोहन ति हारे विदुरै तें वृषभान की कुवारि भई धरी

तलकानै ॥ जल विन्मो न ज्यों विकल तल प्रति प्रति के

कवि कव्य त्रैसी होति आनवा नहै ॥ ज्यों ज्यों करि यतुज  
चारुनु की भीर त्यों वढति दूनी पीर है आधिनु हूँ प्राने  
विरह की ज्वाल निसों जरि वेके लै वै वा कौ जरि वो चच  
नयों त्रिसी सके समान है ॥ ५७० ॥ दोहा ॥ यह विन सत नगुर  
खिकैं जगत वेडो जसु लेहु ॥ जरी विषम जु ज्माइये आर सुद  
र सनु देहु ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोषित पतिका व्याधि अत्र  
सखी कौ वचनु नाइक सों ॥ कविता ॥ जरी है विषम युर गिरी है  
चेत ब्रह्म धिरी है चहुं घां व्याधि बंद नकी धरिये ॥ कंचन सेतन  
कौ अतनु ब्रह्मा वार तु है रतनु अचारि है जतनु हरि करिये ॥  
असी गति देवै हों तो मरति परे वै दुबुवा टो अ न लै वै वा  
के नेरे जात डरिये ॥ लोजि वै जगत जसु की जिसे धर सु  
द ही जिसे सु दर सनु वा कौ ता पु हरिये ॥ ५७१ ॥ दोहा ॥ में दे  
दसौ लयो सुकर छु जत छे न कि गयो नीसा ॥ नालत तु म  
रो अरग जा उर है लगे जो अवीरु ॥ टीका ॥ यह नाइक  
प्रोषित पतिका सखी कौ वचनु नाइक सों ॥ कविता ॥  
कव्य प्राने प्रारि लाल विदुरें ति हारें अव रिये वज  
वाल कौ अनंग दु वरा ज्यो है ॥ कौ वरी निपर कभि

नाइ गई मूल जिमि दुबुअन कूल भौ समूह सुबुभा गेणो है ॥  
मुमजुपठा यो सो मै दें नो जाइ वाहि ऊनिली नो अति हि  
मुकरि चितु अनुरा गेणो है ॥ कर पर सत हीं कन कि गयो -  
नी सुअर गजा वा के ऊर मै अवी स है कै ला गेणो है ॥ ७३ ॥  
दोहा ॥ धा की जत नअने क करि नै क नछांड ति गै ल क  
री षरी दुवरी सुलजि तेरी चार चुरे लै ॥ टी का य ह नाइ  
का की लग नि स सी को व च नु नाइ क सों ॥ कविता रो  
म नि रो म नि भोइ गई हिय मै ध सि प्रां न नु मां ज ध ष गी है  
है करि था की ऊ पाइ स वै हरि जंत्र नि मंत्र नि हूं न डे को है  
देह सुषाइ करी दुवरी डरी वा वरी ज्यो सुधि बुद्धि भगी होये  
ते मै ना की नछांड ति गै ल चुरे लै करी वरी चार लजी  
हो ७३ ॥ दोहा ॥ पिय के धां न ग ही ग ही र ही व ही है ना -  
रि ॥ आपु आपु हीं आर सी ल विरी क ति रि ज वारि ॥ टी  
की ॥ ग्रह नाइ का की लग नि तन्म ॥ १ ॥ ॥ ॥ व घ  
नु स सी को ॥ कविता ॥ नु ल ॥ म न

नितौ अंगई यह वं निजई है ॥ ध्रानहीं ध्रानमै अजुक  
द्ववभानसुता भई कां न्ह मई है ॥ अरसोमै लघि  
आपनी मूरति आपु हीरी किनिहाल भई है ॥ पूरने  
मकी जोति जगो अर अरानि सेवे सुधि नू लिगई  
है ॥ ४४ ॥ पुरवय विद्या वाचिवा ॥ अरे परै न करे हिये  
जरे अरे परजार ॥ लावत घोरि गुलाव सों मिले मिले  
घनसार ॥ ४५ ॥ यरुनाइ का प्रोषित पतिकानाइका  
को वचनु सधी सों ॥ ४६ ॥ काहे कौ तू घनसारु  
लावमै घोरि घने घसि चंदनु लोवे ॥ काहे कौ सी अरे  
नीरभिगाइ ऊ सीर पसा निसमी रुडु लोवे ॥ तोरि क  
राजक असी परी पजरी अर अरानि घरी पजरोवे ॥ ये  
अपचार परै न करे कल जातै परै किनिता हि मि  
लोवे ॥ ४७ ॥ पाती ॥ दिवा ॥ रंगराती रौतै हियें पीतम  
लिघी वनाइ ॥ पाती का ती विरह की छाती र हो लगाइ ॥  
४८ ॥ यरुपाती सधी कौ वचनु सधी सों ॥ ४९ ॥  
जवतै वियोगु भूयो लाल मन भोवन कौ तव हीं तेष्वा

रितलफ्रतिमुरजाइकौ नैनजलुवरसतिमिलिवे  
 कौतरसतिसरसतिमदनमरुवडभाइकौ अति  
 अनुरागसौवनारलिवीपानपतिअसैमैअचान  
 कहं दीनीकांहुंआइकौ ॥ हितअकुलातिसुतौविर  
 हकीकातीजांनिरातीपातीरहोतातीदातीसौल  
 गाइकौ ॥ अधा दोहा ॥ करुभयौतौवीहुटेमोमनतौ  
 हेसाथी ॥ उडोजाहु कितहुंगुडीतअउडाइकहाथी ॥  
 येका ॥ यरुनाइककीपत्रीनाइकाकौ ॥ कविताजो  
 करतारचीसुसहीविधिअौरविचारअकारथहै ॥

वेदखरानपुरानैमुनासवुकोअकैहयहगाचकहै

॥ चपस्यौतौकरुभयौमोमनुतौसाथ  
 गुडीकितहुंउडिओरिउडावनहोइके  
 ॥ १ ॥ दोहा ॥ करलैचूमिचउरिउरिउरि  
 गेहि ॥ लहिपातीपियकीलनवृत्तिवांचट  
 पेहि ॥ टाका ॥ अइकका ॥



ताहिदेदिनाइकाकीजुदसाभईसुसयोसयीसौंकर  
तिहै॥ ७५ ॥ मोहनकेविहुरेंमगनैनिचकी  
सोफिरैऊरमेअकुलाती॥ पीतिकेंपीतमआपुलि  
यीकइंअसोअईअचानपाती॥ चूमतिचाइकेनै  
ननुलाइकेसोसचटाइहियेहलसाती॥ वांहनि  
भेंटतिचौंपसौंचाहतिवांचिसभेंटतिह्वावति  
होती॥ ७५ ॥ कागदपरलिखतनवनतक  
तसदेसलजात॥ कहिहैसवुतेरैहियेमेरेहियकीवा  
ता॥ ७५ ॥ अपनीनाइककीअथवानाइकाकीतोनाइका  
परकिया॥ ७५ ॥ पातीमेंलिखतकेसैवनतिजितै  
चाहसागरकोसलिलुचुन्रमेंकैसैकीजिये॥ कहतस  
देसेऊरआवतिहैलजअतिअधिकअदेसेअंहींहि  
नदिनहो जिये॥ मनुअसौमानसुमिलेनकोमधि  
पतीजासोसमुजाइजीकोभेदु कहिदीजिये॥ यातेप्री  
तिरीतिअवरातमेरेहोकीवातआपनैहियेतैनीकी  
भांतिजांनिलीजिये॥ ७५ ॥ तरजुरसीअपर

गरीक जलजल फिर काश॥ पिय पाती विनु हों लिखी  
आंधी विरह वलाइ॥ टीका॥ यह नाइ का प्रोषित पतिका वि  
रह की अधिकारि पत्री लिखिवे तें जां नी गरी॥ कविज्ञ॥  
प्यारे कों संदे सु लिखिवे कों वैरी साहसु कै लिखत न वने  
नमति विरह मली नी है॥ ऐसी ये लपेटि अलि सौ पीस  
जनी के घाह अलि जाइ त्यों हीं प्रांन ना घरा घरी नी है॥ तरता  
रपो निके पर सपर जरी और अ परते गरी अं सूना निजल  
भी नी है॥ बोलत हीं पाती पिय ताती की सुरतिक रिखाती  
गवरि आई आंधि भरि ली नी है॥ १८७॥ दोहा॥ विरह विकल  
विनु हों लिखी पाती दई पठाइ॥ आंक विहं नी यो सुधि  
तसूं नै वां चतु जाइ॥ टीका॥ यह नाइ का प्रोषित पति  
का पत्री आई या तें दो अनु की विरह की अधिकारि तें  
सूं ल्यता जां नियो॥ कविज्ञ॥ विरह मरू तें नत नकी  
तन क सुधि वाल अति व्याकुल अचेत ऐसी दूग  
री॥ लिखिवे कों लई पाती लिखत वने न -- वैसि

बलपेटिपानपतिपेपैठेइ वाकौवि  
कहलौअधि कारिकहोएकसीदुहंकीगतियैकेष  
हभई चपरीपनीनवहजकुअंकहोनीतउवां  
चिसूनेहियकेलगाइहातीसौलई ४८९  
चलतचलितलौलेचलेसवसुषसंगलगाइ  
ग्रीषमनासरससिरनिसिप्योमोपासवसाइ  
५९०॥ यहपनीनाइककोनाइकाकौवचनुस  
धीसौं॥ ५९१॥ रेनिदिनारहतेईमितेरसरंग  
उमंगलमेंमनुडोरें॥ जैसोसनेहवटाइकैदेवि  
रीकेसीकरीऊरंकांनूपियारें॥ लैगयोसंगलगा  
इसवैसुषदेगयौसोचुरैरनहोंटारें॥ पूसकीजां  
मिनिजेठकेद्योसवसाइगयौअवपासरुमारें॥  
५९२॥ ५९३॥ तांगेपिनुकेअंसुत्रानिभरि  
सरांअसोसअपार॥ उगरडगरनेहैरहीवगरवग  
रकौवार॥ ५९४॥ यहवजकेविरहनिवेदनुअधो  
कौवचनुअकसकौंसधीकौवचनुसधीसौं॥ ५९५॥

तत्तन् ॥ श्रीजटुनाथतिहारे वियोगकहनिपरवज  
 कीजुरसोहा जोपिनुकेद्रगयो वरसेसरसैत्रं सुवा  
 नितेनीरप्रवाहो गेलगलीसवपूरिकै नूरिनदीव  
 टिहोतिप्रपारत्रथाहो देवतधीरजकौनधरहरि  
 वाहगोहविनुकोअवगोहो ॥५७॥ श्रीजलपतिका  
 होहा ॥ कियोसयांनीसविनुसौनहिसयांनवहभूल्ल  
 हेरैदुरदिल्लौंकेयोपियत्रागमहूल्ल ॥ टीका ॥ यहत्रा  
 गमोत्सवनाइकासौसवीकोवचनु ॥ व विनी ॥ ल  
 लितकपोलत्राजुमंदसुलकनलागेअाननपेनइस  
 वृत्रैत्रसनाईरी ॥ मेतौबूजीसुषमानितेकहूसवाई  
 ठानिधूघटमैठाकिमुषटीठिक्योचुराईरी ॥ नाहिनस  
 यांनुपनुवीसविसेभूल्लहेसयांनीसवीजनोनिसौव  
 रीजोचतुराईरी ॥ फूलकीसुवासुलौंविकासुपहिले

श्रीश्रीमीतविदेसतंकां हं कही पुकारि ॥ सुनिहलसी  
विकसीहसी दोउ दुहं निनिहारि ॥ टीका ॥ नाइ कु  
अपपति सौं दोउ चुको नेहरे ताकें आगम दोउ चुकें  
दुर्घभयो याही तै परस्पर जा निपरी सयी को वचनु  
सयी सौं ॥ कादिना ॥ कां नरके विदुरै वजवाल ह  
दो मनहीं मनमें सुरजांनी ॥ कसकेह वहरा देवको म  
नुवेरि रहें मिलिबो परिठानी ॥ मोहनुमीतु विदेस  
तेशयो पुकारि कें कां हं कही जववांनी ॥ सो सुनिदे  
उदुहं निविलो किलसी विलसी हलसी मुसिका  
नी ॥ ५५ ॥ दोउ ॥ मगलैनी दुगकी फूरक उर उर  
हजन फूल ॥ विनुहीं पिय आगम उमग पलरनल  
गी दुकूल ॥ टीका ॥ यह आगम भिस्पति का स  
यी को वचन सयी सौं ॥ कादिना ॥ बालसरी अकुल  
तिहियें नदलाल वियोग विधा उर जागी ॥ जैसे मै  
आनित्र्यां न कहों हलसी द्वितीया सुघरो अनुरा  
गी ॥ बांम विलोचन कें फूर कें मगलोचनिजाति उ

गृह निपागी ॥ फूल भई विनु हो पिय आगम चारु दुक  
वचु नावन लागी ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ मलिन देह वै रवस  
मलिन विरह के रूप ॥ पिय आगम और उठी आनन  
आप आन पाटी का ॥ यह आगम मिस्य तिका सवी  
कौवचनु सवी सौ ॥ कविता ॥ लाल मन भावन के वि  
है रम्य कमु वी अति हो विकल चितु पस्वो चिंता कूप है ॥  
अधिक मदन पीर तीर सी घगति हि ये चांदनी लगति  
जे सी गी वम की धूप है ॥ को नौ न सिंगा रुचा सवै सि ये  
मलिन देह वसन मलिन उहीं विरह के रूप है ॥ कहै क  
विक्रम पिय आगम सुनत चटी और आप आन न पे  
अम गि अ नू पे है ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ रहे वरोठे मैं मिलत यि  
प्रांन नु के ई सु ॥ आवत आवत को भई विधि की घरी घरी  
सु ॥ टी का ॥ आगमोत्सा वनाइ का कौवचनु सवी सौ ॥  
कविता ॥ आयै वि दे सतै प्रांन पती यो तिया की सुने कति  
या सिय राई ॥ नैन नुला गिर ही दिवसा धम नौ ज अ

मंगिहिये भरि आई कस कहै मिलि वेकं हं काहू सौं पौरि  
में जो लौं रह्यो सुषदाई आवत आवत की सुधरी विधि  
वासर हूते थरी सरसाई ॥ ४८ ॥ कहि पठई जिय  
भां वती पिय आवन की वात ॥ फूली आंगन में फिर आं  
गन आंग समात ॥ यो लो ॥ आंग मोत्सव सबी को वच  
नुसयी सौं हर्ष संचारी ॥ न विह ॥ बाल वियोग मली  
नमहा विसरी सुधि हा सविला सडू भूले ॥ येते में औधि  
वितीत नई ऊरे ये कहें साध सवे दुष उले ॥ आं वनु तो  
मन भां वन को सुनि कै उ महे सुष पुंज समूले ॥ आंग  
न में हुल सी फिर सुंदरि आंगन आंग समात न फूले ॥ ४९ ॥  
॥ नाचि चंचन कही उठे विनु पाव सवन मेर ॥  
जां नति हौं निरति करी यह रिसि नंद किसोर ॥  
यह आंग मोत्सव नाइ का को वचनु स दी सौ सदी को वच  
नु नाइ का सौं ॥ न विह ॥ राधा यो विसा या सों कहति ज  
कोरु मोहि चारु चित्र पट अ वरे वने दिया योरी ॥ जा  
नियतु बरी चित चोरु नंद पूतु धूतु आली र हि कानन

इतं त्रिजुआ योरो ॥ लहलही होति बहु काली सु  
 निवेलि फूलत सुमनुत्रै सो वनुद्ध विद्ध योरो ॥ पि  
 उनत्रुं घन भये हरि म न ना चि ना चि मोरनु  
 लाहलु म चो योरो ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ वाम वाहु फरक  
 ॥ न न जा रा ॥ व न भू रि ॥ तो तो हो सो भे दि हो रा  
 प्रे रा हि नी दू रि ॥ टी का ॥ आ ग मो त्स व भु ज फ र क त  
 हो ना इ का को व च नु वा म भु ज प्री ति ॥ क दि त्ता का  
 नु वि सा सी वि रे सर लो व सि मे न द हो व हु भां ति हि यें  
 हो ॥ वा म भु जा फ र को तो भे ले अ व हो हू अ व नै है चै प  
 न कै हो ॥ कै से हू वा म न भां व को अ व जो भ रि आं धि न  
 दे ख न पै हो ॥ रा धि हो दू रि या दां हि नी वां ह कें तो हि  
 सो ग ठे अ लिंग नै दे हो ॥ ४९ ॥ दोहा ॥ वि द्यु रे जि यै स  
 को च शं हि वो ल त व नै न व नै दे उ दै रि ल गो हि यें कि  
 यै नि चो है नै ना ॥ टी का ॥ य ह पर दे स ते आ ग मु रो उ नु



दंपति आपसमें कहते वलु और भयें पलु प्रांन रहे ना  
 आयो विदे सविते बहु वासर नंदलला अति चंने के  
 अना ये तो विदो हु भयें हुं निये रुहिला जते वोला  
 वेन वने ना श उल गेल परा इहिये पनि चौ है ति  
 ये सकु चौ है सेने ना ५६३ शो वा जद पिते जरी  
 लवल पल को लगी नवार त उ जे डो घर को भयो  
 पे डो को सहजार शो का यर परे सते आग मु  
 आगत पति काना इ का कौ शो सु क्य संचारी  
 पति का कौ न हुं का ज कौ प्रांन पिया परे दे स  
 मों व हते वित यो है राधिका की सु धिके का  
 कस हति हो दिन भोन को गों नुठ यो है  
 द पिते जतरी निये रो घस त दृपि का सहज  
 र नयो है जे डे को पे डो न का टो करे जमि  
 ष समूह ही ये उनयो है ५६३ जे डे  
 मिस ही मिस आत पर सह दई जोर

पाशुंटीका ॥ यह जे या कनिष्ठा के भेद में सभै सवी  
को वचनु सवी सौ ॥ कविता ॥ कान्ह सुजान के मापे क  
र सरीत के भेद कहे नहि जाही ॥ अतप को मिसुके  
वहरा इई संग और जितों वनिता हों ॥ द्वै लग होत  
इ गेल भट्ट जमुना तरके लिनिकुंज जहां हों ॥ राधि  
का प्यारी को लै चलो संग कि येँ अपनै तन की पर  
हो हीं ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ छिर के नाहन वो उदग करि पि  
चकी जल जो रा ॥ रोचन रंग ला लो भई विये पिय लो  
चन को रा ॥ टीका ॥ यह जे या कनिष्ठा को भेद अल्प सं  
भोग दुष्प्रिता हू होइ सवी को वचनु सवी सौ लक्षिता  
हू होइ ॥ कविता ॥ नदल लाल लनांग नमें जल केलि  
र चीर सरीति रलाई ॥ चूंम कलैर ऊहू वह भांति दुरै व  
भरि अंक करी तरलाई ॥ लोचन भां वती के छिर के कर  
की पिच की जल धार चलाई ॥ सोति के लोचन को रनु  
सं ॥ ५७ ॥ भई रोचन रं ॥

ला जगहो वेका ज कत घेरि रहे  
 घर जाहि जोर सुचाहत फिरत हो जोर सचाहत  
 नाहि यह दान लीला जाइ का को वचन  
 जाइ कसौ लाज को नग हो विजुका  
 जम गुधिरि रहे काहे इतरा इवो लफहत अ नै से हो  
 जोर सुन चाहत हो जोर सको चाहत हो भली भांति  
 जानति हो कां न तुम जै से हो कस्य प्रांन प्यारे व  
 ज विरितति हारे गुन मायन के चोरि वे कौ घर घर  
 पे से हो अब इहि वन जैसे चलन चलत हो सौ  
 हेरि लवि हसत लसत म मन ले से हो ६८६  
 पहला हार हि ये ल से सन की  
 वैदी भाल रायति बित धरी धरी घरे उरो ज निवाल  
 यह जाति वरन नु नाइ क को वचन सखी सौ अ  
 बाना इका हू सौ हो ३ पातरौ लांकु कठोर खे  
 कुच गौ चगे ठिलु नाई भरी है मेच कपोति गैर व डे डे ग  
 ओठ नु में अरु नाई धूरी है हार हि ये पहला को ल से विदु

निसनकोपधुरीकोकरौहे॥रांवंतिवेतुवरीवृजनागरि  
 वनजोतिवरीनिवरीहे॥४७॥दोटा॥ट्टकीभोर्धोव  
 चटकीकीमुवजोति॥लसतिरसोईकेवगरजगरमग  
 डतिहोति॥टीका॥ग्रहजातिवर्ननुसवीनाइकाकेरूप  
 कोनिकाईनाइकसौनिवेदनुकरतिहे॥कदिल॥वेठी  
 आपरसवृजनागरिसरसवेषेदधिभनमौहनकीसुधिवु  
 धिउगरी॥कसप्रांनप्यारेकीदुहाईरोसुहाईवैसैतेसीई  
 विधिनेसकेलिसौभासगरी॥रमकेवदनजोतिविदसव  
 रनधोतीपहिरैलसतिसोतौपूपगुनअगरी॥द्वैरसौप्र  
 कासुअतिजगरमगरतिहवगररसोईकेअपारजोपव  
 गरी॥४८॥दोहा॥जदपिनाहिनांहांनहंवदनलगीजक  
 जाति॥तदपिभौहहांसीभरीहांसीथैठहरति॥टीका॥ग्रह  
 जातिवर्ननुसवीकोवचनुसवीसौनाइकहूसौसंभवे॥द  
 दिला॥वेठीसिगारसजैवृजनारिअचानकमौहनकोदो  
 तहांहो॥पांनिगसौअवलोकिअवेलीअलोकिकेलिक  
 लाचितचाही॥

ननानननांहीं तदपिहंसीभरीचक्रुटीनिमैवीसविसे  
वहरातिहेहंहीं ॥ ५८६ ॥ दुगधरकौहैअथयुलेदेहय  
कौहैठारसुरतसुधितसीदेधियतिदुधितगरभवेभार  
यहजातिवर्ननगर्वताजाइकाकीसोभासवीनाइ  
कसौंकरेसवीसवीसौंकरेजाइकुसवीसौंकरे  
बोलतिवैनहैईहैईरुभरीद्विचाननकौंपियरीहैअ  
थयुलेअत्वीसौंहैसेलोचनदेहयकौंहैसेठारहरीहैग  
र्वकौंभारुधैसुकुमारिजउदुवतोन्ननारिखरीहैनी  
कीतउअतिलगागतिहैमनोकेविकलोळकरंगभरीहै  
ज्योकसत्योंचुंहरीचालतिज्योचिहंरीत्योंनारि  
द्विसौंगतिसीलेचलतिचातुरकातनहारि  
यहजातिवर्ननुजाइककौवचसवीसौंकविहकोकक्ति  
ज्योकसत्योंहींचलेचुरकीअघरेभुजम  
खडीद्विभारीचारुकलाईकीभोरनिग्रींनकीठो  
निजीतैरैबहियारीभोहउचैतिरद्वेकरिलोच  
लेतिक्रिधौंगतिरूपउज्यारीपातुरमानो  
जमेमहेपकीचातुरकातलसुरिनिहारी ॥ ५०९ ॥

कुउघारिप्योलघिरहतरसौनगोमिससैना॥ फुरवित्रौठपुल  
तभयेगत्रेउघरिजुरिनैना॥ टीका॥ यहजातिवर्ननुप  
रेसससवीकोवचनुसवीसौ॥ कवि॥ प्रांनपतित्राव  
तनिरविभ्रगलोचनिदुकूलजौटंजौनौपौठिरहीमिसुक  
रैकै॥ वाठेजोचोपचारहैरहैरठिगत्राइमुवुनिरव्यौउघा  
रिभूरिहितुहियेभरिं॥ कसप्रांनप्यारेकेविलोकित  
मयंकमुवीसैनमैनरहोसुमनुमिसुगयोटरिकै॥ गातु  
पुलंकितभयेअधरमुलकेआयेलोचमललकिमिले  
आपुंहीउघरिं॥ प०शीदोहा॥ नहिअन्हाइनहिजाइद  
रचितचहंटेजोअइतकितीरा॥ परसिफुरहरीलेफिरति  
विहसतिधंसतिननीरा॥ टीका॥ यहजातिवर्नननाइका  
परक्रियाक्रियाविदग्धासवीकोवचनुसवीसौ॥ कवि  
ता॥ न्हाइवेकौजमुनागईवालतहंवनितामिकीहैअ  
तिभीरौ॥ तौंहींअचांनकंनसकैहकहंठीठिपस्योन  
नागरनीरौ॥ चाइचुभ्योचितुन्हाइसुकौनुगयोन

हिजातुकपातुसरीरो अंजुलिनीरुभैरंगहिडारतिना  
कसकोरिकोहयहसीरो ॥५०३॥ देवता मुखपचारिपुड  
रुभिजैसीससजलकरुद्धाश मोरऊचैघूदैनितेन  
रिसरोवरन्हाइ ॥ ५०४ ॥ ग्रहजातिवर्ननुकविकीऊ  
लिहोइसयीकौवचनुनाइकसों ॥ कवितावेठिकी  
रपयारिकेंअंननुहघुभिजैजलकेसनिहैकें ॥ ५०५ ॥  
कैहैकरसोंदुसराइकधांधुस्योसीसकोचीरुभिजैकें ॥  
करपंकजदोअपत्रोंधरिमोरऊचैकटिषीनलकें ॥  
योंवजवालसरवरन्हातिमहाह्विसोंघुदुब्रानि  
तेनैकें ॥ ५०६ ॥ ॥ ॥ विहसतिसकुचतिसीदियेंकु  
चत्रांचरविबवांह ॥ भीजेपटतटकोंचलीन्हाइसरो  
वरमांह ॥ ५०७ ॥ ॥ ग्रहजातिवर्ननकविकीऊनिस  
यीनाइकाकोसोभानाइकसोंदिखाइवेकोंकैहैतोस  
भैवै ॥ कवितादेवदिव्राकरकोंकारिवंदनुकसक  
हेमनहींमैमनावति ॥ वांहदियेंकुचअंचलवीच  
लजाइरियेंहसिनैननवाति ॥ भीजिदुकुकरहेल

राइमहाकविकंचनसेतनकावति॥यौबजमौरिरूप  
जागरिन्हाइसरोवरतोरकौंआवति॥पं०पा०दो०॥  
बुधोवतिपेडीधिसतिहसतिअनागतिरीराधस  
तेनेइंदीवरनयनिकालिंदीकेनीराटीको॥हेये  
जातिवर्नननाइकाकीचेष्टासवीसवीसोकहति  
हे॥कवि॥नहाइवेकौंआइअतिरीजमउराइदियेऊ  
सप्रांनप्यारेकोसूपुदरसतिहे॥इंदीवरनेनीअन  
गवतिअनेकवारभातिपेवहकलिंदीकेनसलि  
लधसतिहे॥परसिउसारेकरकोरिसिसोभानिपा  
नासिकासकोरिमुहमारिविहसतिहे॥वदनुप  
धारतिहेवाकेद्रगठारतिहेगुलप्रधसतिअति  
रंगुवरसतिहे॥पं०१॥दो०॥अठऊचेहांसीभरे  
द्रगभौंहनुकीचाला॥मोमनुकहानपीदियेयो  
यततमायूत्वाला॥टीका॥यहजातिवर्ननु



काकोवचनुसधीसौ ॥ कविता मेनि रजा ॥  
जियकी गतिजानतु कौनु कहजु वियोरी जे  
रूपकीरीज सुभीचितजानतिहों हेकिमेरे  
सी हासीभरी चषभों हनु की इवित्रोठउ  
भावकियोरी ॥ पीवतलालतमा के  
निमोमनुपीनलियोरी ॥ ५७ ॥  
विभरुभीतिदेऊलभिविते  
इहंनुइहंनुकेचूंमेंचारुक  
तिवर्ननुइहंनुके  
नुसधीसौ ॥ कविता ॥ ३  
कीनोविलासुमहा  
चाहिचहूंधों वियोजव  
देजरुअंतरभीतिदुवोऊ  
कौतिगुठान्यों ॥ चारुकपो  
वनुकेअतिहोंसुसुमान्यों ॥ ५  
वनुविचक्ररुऊचैकियेनिचोंहैं

प्रकेपिया लगी विरो मुषे देना ॥ टोका ॥ यह जाति  
वर्ननु नारका की सो भासवी सवी सों कहति है ॥ न  
विना कां न्ह कहि अति ही हितु कै तवराधिक कत्रे  
जिये में यह अरि ॥ श्री वं नू वा इ दुरा इ कपोल कि  
ये रत नैन कहु मुसिकाई ॥ वीरो वनाइ लई क  
रंज ववैवै कौ मंजु जाऊ क साई ॥ यो हित की  
सर साई विलो कि भई मन मोहन के मन भाई ॥  
है ॥ नाक मोरि नाहीं कौ के नारि निहोरे लेश ॥ दु  
वन ओठ विच अंगुरि नु विरो वदन पौ देइ ॥ टी  
का ॥ यह जाति वर्न न सवी कौ वचन सवी सों ॥  
कवित ॥ आजु दुहं कौ विलासु अली में दुरे दर सौ  
कहतें न हीं आवतु ॥ नंदलला अति हीं हितु कै व  
वभान कु मारि कौ पां न व वा वतु ॥ ओठ नु सों वि  
अंगु लिहै मुसिकाई कै नैन सौ नैन

नासिका मोरि मरोरि कैं भों ह करै तिय नांहित्यु न्यौ सु  
धुपावतु ५९० ॥ दिहा ॥ वतर सत्नाल चला लकी  
मुरली धरी लुकाइ ॥ सोह करै भों हनु हसे दें न करै  
नटि जाइ ॥ ५९१ ॥ यह जाका पर किय प्रोटा जाति  
वर्नन सधी को वचन सधी सों ॥ कादि न आजु अ  
ली वष भां न लली मन मोहन सों रस वे लि टरी है वा  
तन के चस कैं सुरली मुरली हरि को शव काइ धरी है  
ज्यों ज्यों ह ह करि मांगें लला व्रह्म ल्यों ल्यों कहु इठ लाति  
धरी है दें नु करै मु करै हसि भों हनु सों ह करै र सभा  
इ भरी है ५९२ ॥ ॥ गदरा नै तल गोर टी अ पन अ  
उलितार ॥ हूठे नों दे इठ लाइ इग करति गवारि सुमा  
र ॥ ॥ यह जाति वर्नन नाइ का की सो भा नाइ क  
सधी सों कहु लुहे ॥ ॥ सोभा के भरत भरी रूप कैं  
से सांचै ठरी विनु हों सि गार हू विकहीन परति है ॥ ल  
लित लु नाई स नै गदरा नै गात मै सर सत स नाई अ  
नि भरी और भर नि है ॥ वरु रारे वदन पर अ पन की से  
है या उ तै सी यो चि वुक गाड मन कों हरति है ॥ सह  
ज सुभाइ इठ लाइ कैं गवारि गोरी हूठे नों दे चलाइ न  
न घाइ ल करति है ५९३ ॥ दे ता ना क चठी सी वी

रेजितेद्वीलीद्वेल॥फिरिफिरिभूलिव्रहैगहैप्यो  
 ककरीलीगेल॥टीका॥यहजातिवर्ननसषीकोव  
 नसषीसों॥कविहः॥सखिजातचलेदोउतीरथ  
 पंथउराहनेपांइनुंरंगुठरै॥बहप्योरकीरीजरिजा  
 वनिप्यारीकीमोपैनक्योंहं वषानिपरै॥अतिना  
 जुकद्वेलद्वीलीतियाजितनाकसूकोरिद्वैसी  
 वीकरो॥कविकसकहैइंहिचाइपग्योतितजांनि  
 कैपीतमपांइधरो॥५९३॥दोहा॥जालरंधमगअग  
 नुकौकहुउजासुसोपाइ॥पीठिदियेंजगत्पोंरसौडी  
 ठिजरोवालाइ॥टीका॥यहजातिवर्ननसषीकोव  
 नसषीसों॥कविहः॥वालकीदेहकीदीपतिभूरि  
 सुपूरिअराइविहइरसौहै॥जालदरीचिनुतैकठि  
 कैवठिजोतिनुकोसमुदाइरसौहै॥लालुभयोअव

रूठगभूरिसीवाइविकाइरसौहै॥पीठिदियें  
 गत्पोंबहडीठिजरोवालगाइरसौहै॥५९४॥  
 हचनी॥दोहा॥दे ॥१॥  
 याइ ॥१॥

राइ... यह जाति वर्जन सखी को वचन सखी से  
... एइ नहीं पै वने हित की गति त्रै सी कहूं अवल  
नल ही है दो अ घरे अति चाइ भरे निसि दो दो सर है  
महे चित ही है चोर मिह चनी वेल हिं वेलत कौ न  
हूं भांति अघात नहीं है ज्यों हीं दुरै ऊर सौं लपटा  
कै जो छ वितौ लपेटै ऊर ही है ॥ ५१५ ॥ दोया दुगमि  
हृव म्रग लोचनी भरे अलटि भुज वाघा जांनि गरी  
प्रिय नाथ के हाथ पर सही हाथ ॥ दोया यह जाति व  
र्जन सखी को वचन सखी सौं ॥ कवि ने वेठी हुती व  
य भांन कुमारी अचानक आयौ तहां गिर धारी ॥ प्यारी  
के लोचन मीचिलये अनि हीं भुज लोति भरे खो अक  
वारी पीतम के करके पर सैं अम गे पा ऊर आनद बु  
द्धि विचारी ॥ या ही तैं वामन भां वन के परिंचां नि  
हैं सी सुविच वन प्यारी ॥ ५१६ ॥ दोया पीतम दु  
गमिह चत प्रिया पांनि परस सुषुपाइ ॥ जानि पिछां  
नि अजांन लोने कन होति जनाइ ॥ दोया यह  
जाति वर्जन सखी को वचन सखी सौं ॥ कवि ने ॥  
वेलत मै कहूं पाहिली घांते अचानक हीं चलि आयौ

विष्णुसिद्धिर्गणपतिः ॥ १ ॥  
पञ्चमः ॥ २ ॥  
श्रीकनकैश्वर्ये नमः ॥ ३ ॥  
गोविन्दस्य नमः ॥ ४ ॥  
श्रीकनकैश्वर्ये नमः ॥ ५ ॥  
गोविन्दस्य नमः ॥ ६ ॥  
श्रीकनकैश्वर्ये नमः ॥ ७ ॥  
गोविन्दस्य नमः ॥ ८ ॥  
श्रीकनकैश्वर्ये नमः ॥ ९ ॥  
गोविन्दस्य नमः ॥ १० ॥  
श्रीकनकैश्वर्ये नमः ॥ ११ ॥  
गोविन्दस्य नमः ॥ १२ ॥  
श्रीकनकैश्वर्ये नमः ॥ १३ ॥  
गोविन्दस्य नमः ॥ १४ ॥  
श्रीकनकैश्वर्ये नमः ॥ १५ ॥  
गोविन्दस्य नमः ॥ १६ ॥  
श्रीकनकैश्वर्ये नमः ॥ १७ ॥  
गोविन्दस्य नमः ॥ १८ ॥  
श्रीकनकैश्वर्ये नमः ॥ १९ ॥  
गोविन्दस्य नमः ॥ २० ॥  
श्रीकनकैश्वर्ये नमः ॥ २१ ॥  
गोविन्दस्य नमः ॥ २२ ॥  
श्रीकनकैश्वर्ये नमः ॥ २३ ॥  
गोविन्दस्य नमः ॥ २४ ॥  
श्रीकनकैश्वर्ये नमः ॥ २५ ॥  
गोविन्दस्य नमः ॥ २६ ॥  
श्रीकनकैश्वर्ये नमः ॥ २७ ॥  
गोविन्दस्य नमः ॥ २८ ॥  
श्रीकनकैश्वर्ये नमः ॥ २९ ॥  
गोविन्दस्य नमः ॥ ३० ॥

दिनराती वासुपरोसेपेत्रासुतउगुरलोगनुकोम  
तिसोचक्रकाती जौतरसेप्रिलैतनवनैअभिला  
धनुकीअवलीसरसाती टाटीकीओरउसास  
सुनेंफरिहं कहजारकहोतिहैहोती ॥५१॥  
सांठोदेवोलतिहंसतिप्रोटवि  
लासअप्रोट त्योंत्यों चलतसुपियनयनद्ध  
कयेहकीनवोटयहमदपांनसमयसवी  
कौवचनसवीसौकतिआजुवाहनीकीवारनी  
कीमेविलोकीवहसोभाभरेनेमनुमेअवलोंव  
सतिहै ॥ ज्यो ज्यों वह टाठेनोंदैदेवोलनिसरसैवन  
नागरिनवेलीहरिहेरिहैसतिहै ॥ कहैकविच  
सउरलागिवेकौललकतिप्रोटाकैसेसकल  
विलासविलसतिहै ॥ त्योंत्यों हकीतिग्रनेनद्ध  
कायेअसेपीकेनेनपलकनहूकीगतिभूलीद  
रसतिहै ॥ ५२० ॥ होवा ॥ हसिहंसिहरतिनवलति  
यमदकेमदउमदाति ॥ वूलकिवलकिवोलतिवच  
नललाकिललकिलपटाति ॥ टीका ॥ यहमदपांन

1  
 समयसषीकौवचनसषीसौ॥कविता॥मोहन-  
 भगमधुपांनैकैललेलीवालकरतितमासेकहुसो  
 परसातिहे॥हंसिहंसिहरतिवसेरतिदुकूलकेघ  
 केजकिपरतिनकाहूतैसजातिहे॥जोवनकर  
 भरीमदकेतरंगभरीवोरुनीमेंउमंगभरीअति  
 मदातिहे॥बलकिवलकिवैनवोलतिमयंकमुकी  
 लाकिललाकिलालऊरलपटातिहे॥५२१॥दोहा  
 लिलिचंदनवैदीरहीगोरंमुहनलयाइ॥ज्योंज्योंमद  
 लीचैटैत्योंत्योंउपरतिजाइ॥टीका॥यहमदपां  
 मयनाइकाकीसोभानाइकुवैहैअथवासषीसौवैहे॥  
 वित्त॥कहुआजुलसीमदपांनसैमंललनाकौप  
 नाजियतैनदरे॥कविकसकहैवलकैललकैमन  
 मोहनसौहसिअंकभरे॥दुतिचंदनकीविदुलीकौ  
 रहीमिलिगोरलिलारनजानिपरे॥अरुनारिचैटै  
 मदकीमुखज्योंहोंत्योंत्योंहीत्योंजोतिषरीउघरे॥५२२॥  
 दोहा॥निपरलजीलीनवलतियनहकिवारुनीसे



शुद्धौ तौ अतिमीठी लगे जौ जौ टाठ मरिइ विना  
यह मरण समो सबी कौ वचन नारक सौ अथवास  
वी सौ ॥ कविता ॥ काज भरी अति हीन वना गरिजा  
की सुधाई सुधाई कें गारि ॥ ताहि हकी छवि दे विवेकौ  
पिय प्यारे भुराई कें वारुनी प्यारि ॥ जौ जौ उमंग उठै  
मदकी तिय तौ तौ निसंके देति टि ठारि ॥ ठी ठौं  
ई लागति नीकी महा ब्रह्म मानें भरी बहु भांति मिठाई  
वामत मासो करि रही विवस वारुनी सैइ ॥ जु  
तिहं सातिहं सिहं सिजु कति जु कि जु किहं सिहं सिहं  
यह मरण नारक की सोभा सबी नारक रै  
करति है सबी सबी हसौं कहै ॥ नारक वारुनी  
विसेइ मन मोहन सौ मानु ठानि आ जु सुग लोच  
नित मासे को लसति है ॥ वारु तरु नारि मैं निकारि  
विहारी तौ तौ गौर मुख पर अरु नारि सर सति है ॥  
वहू वदन पट घूंघट कें ठां किलेति कवहुं उधारि  
रंगु वर सति है ॥ जु कतिहं सतिहं सति जु कि जु कि  
सतिहं सिहं सिजु कै जु कि जु कि कहै सति है ॥ ५२५ ॥

रूपसुधा आसवद्वयो आसन्नपीयतं वनेन ॥ प्प्रा  
 लेत्रोठपियावदनर होलगायैनेन ॥ टीका ॥ यह  
 मदपांन समयनाइकाकी सोभादेविनाइकुहकि  
 रसोसुसधीसधीसों कहतैहै ॥ कविता ॥ वा  
 रुनीकौवनिआयोसभो कहतैनेन वनेकहुकौं  
 तिगुभारो ॥ प्प्रावतिरंगुभरोमृगनैनिरसो  
 दुतिकौभरिभौनउज्यारो ॥ आसवरूपसुधा  
 कोह्वेयोमदुपीवेकौचूलिगयोसुधिप्रारो ॥  
 प्रालेसोंओठपियासुषनेनलगात्रंरसोद्वि  
 कौमतवारो ॥ परपा ॥ दोहा ॥ मलितवचनुअध-  
 धुलितदुगललितखेरीदकनजोति ॥ अरुनव  
 दनहविमदहकीसरोह्वीकोहोति ॥ टीका  
 यहमदपांन समयनाइकाकी सोभासधीसोकह  
 तैहै ॥ कविता ॥ नैनकहुउघरेसेमुदेअरुवैन

नुमैसिधलाईरसो लो स्वदेवूद निसौंजलके  
ग्रुन्नुदुतिअंननोपेचटको लो तेसोयकूप  
जागरिनागारिसोद तिसोभसनीगरबो लो  
सजगीतनजोवनजोतिहूकेमदहोतिथरौप  
बोली परसु...  
दुकिरसालसोरभसनेमधुपमाधुवोगंधे  
रठौरजौरतजपतभौरजौरमधुअंध  
यहवसंतरितुसमयजोमानवतीनाइकासो  
सधीकैह तोमनाइबोहोइजोनाइकानाइकेसो  
कैह तोस्वयंभूतहोअैसैनाइकहूकोकरिवो  
संभवे... फूलनिकेरसकेचसकेअवमाहि  
थकेसबवेलिजितोवन माधुरीकेमृदुगंधसनेअ  
वविंदुपरागसोपागिरेइतन मंजुरसालकेसोर  
भसोमिलिमत्तभयेसुरतौनरहोमनठौरनिठौर  
निजौरनिकूंमिजुकेमधुअंधमुद्गावतकेगन ५३  
... फिरिघरकौबूतनपधिकचलेचकित

तभागि॥ पूरलोदेधिपलासवनसमुदास  
हेदवागि॥ दीका॥ ग्रहवसंतसमयेहेनाइका  
वचनुनाइकसोंहोइतौप्रवत्सपतपतिका  
धौकौवचननाइकसोंहोइ॥ जावेत्तोंदेधो  
तुराजकोसमाजुचनिवागिनिमेंप्रफुरलि  
सुमनरहैंहंजातिजागिकें॥ कुसमपलास  
अंगारजांनिचहूंओरचंचुनिसौ॥ चिपतच  
अरअनुरागिकें॥ अगेंतेविलेकिश्रुलेमेंन  
रचितअंलेनूतनपधिकभूलेभरमदवागि  
॥ परींउरअंलपरदेसकोविसारींगेललौ  
हेचलेघरकोचकितचितभागिकें॥ परथांस  
॥ वनवाटुनपिकवरपरालधिविरहिनुम  
नुमेंन॥ कुसोकुहोकहिकहिउठतकरिकारि  
रातेमेंन॥ दीका॥ ग्रहवसंतसमयसधीकौव  
वचननाइकसोंहोइतौमनाइवौन॥ कौकौवच

नसहीसोंहोइतोआपनीअवस्थाकरिनामैन  
मंहीपकोमानिमतोडुमडारिचेटेचहूंअरनिटू  
कातदेघतहोंविरहीजनकोंकरिलोचनलाल  
कुहो कुहो कूकत ॥ वीसविसेवनवाटनुमैवर  
पारवसंपिकभूलततूकत ॥ प्रांनपतीविनुक्यौ  
वचिवौअवदाऊपरैरिपुक्यौटकचूकत ॥ पर  
दिसिदिसिकुसमितदेधियतऊपवनवि  
पनसमाज ॥ मनोवियोगनिकेकियोसरपं  
जसरितुराज ॥ टीका ॥ यहवसंतसमयहैसवी  
कोवचननाइकासोंहोइनाइकसोंहोइतोपुत्र  
त्पतपतिका ॥ कावेनी ॥ आयौहैमदनुदि  
तिपालकोहुकमुपाइआमितप्रवलसेसौअ  
मनुच ॥ यौहैमानुगटतोरिवेकोंअधिक  
प्रचंडदेधोसवहीकेमेंऊरअनुरागुऊमगायो ॥

नऊपवनजिततितत्रवलेकियतुदिसिदिसि  
समसमरुह्वविद्यायोहैवेरुवांधिवियमवि  
गिनुकेरोकिवेकौमानोरितुराजसरपंज  
वनायोहै॥५३॥दे॥॥हैऔरैसौद्वैर्गईटरी  
धिकैनाम॥दूजैकरिडारीधरीवैरीवैरंग्राम॥  
का॥ग्रहवसंतसमयनाइकाकीत्रवस्थासवीना  
कसोंकहतैहसवीसवीदूसोंकहै॥कवित्तामैह  
सोंविहुरीजवतेतवतेनलहीकलयेकधरीहैलें  
ननुनीरुठैरिसिवासंरव्याकुलवालत्रचेतधरी  
॥ऐसीदसापरिलेहैहुतोपुनिऔरैभईसुधिऔ  
धटगेंहै॥ता॥॥॥रललनैदेधौवसंतकेमोस  
धारीकरोहै॥५३॥॥॥॥मरितुादे॥॥कहलं  
नवसतत्रहिमयूरमगवाघ॥जगतुतपो  
वंधु॥भकियौशोरघदाघनिदावा॥टीका॥ग्रहयो

सम

धर्मरं तु यनाइ काको वचनु नाइ कसों होइ तो प्रवत्स्यता  
गिका सवी को वचन नाइ का सो नाइ कइ सों होइ  
हो तो वर हों न वर हो न हेरे अहिनु कों अहिक  
रि श्रुं डनु के रंधनु गहत है करि करि रितु के उदरे  
नर हरि आइ सो वतत पोवन की रीति निवहत है ह  
रिनु की छा तो तर वेठत हरिन आइ छो डि चित ठाइ  
नु विरोध विसरत है दे विरितु ग्रीषम कों तीवन  
प्रतापु वल्लु रू लाने कहलाने पुत्र तव सत है  
वेठि रहि अति सयन वने पेठि सदन तनमं  
इधि दुपदरी जेठ की छां हो चाइ ति छां ह  
ह ग्रीषम रितु नाइ काको वचनु नाइ कसों स्वयं  
सैं हीं नाइ क को वचन नाइ का सों जो नाइ क की र  
नाइ क सों कहै तो प्रदेश के निवारन होइ  
स लिल सुघत जात जल चर अतु लात घल  
अं प्रसकल उरत वरि वरि कै कौं कवि कस्य

पर अनिल सव पावक हो सो ते कौ नुरे ही र धरि कै ॥ ग्री  
षम के जात पे को भी घम पत पुत किटि किन सकति कर  
डो लो डो लो डरि कै ॥ स घन विप न त ह धा नै कू प कंज  
नि में द्यो हो विर मति क हूं द्वां ह अ ट करि कै ॥ ५३ ॥  
॥ ना हिल ये पावक प्र व लै लु वें चल ति च हूं पास ॥  
मान हूं विर ह व सं तै कै ग्री षम ले ति ऊ सा स ॥  
य र ग्री षम समय ना इ का प्रो धित पति काना इ को  
व च नु स की सों ॥ क वि ॥ चं दु कर मंड ल तै मं डि कै अ  
बंध धार व र ष त पा व क प्र चं ड कि धौं य हरी ॥ क स प्रां न  
प्रा रे की दु हा ई धौं ज र् ई व ड वान ल को लु वें ता थै व च ति  
दु प हरी ॥ चं दु कर मंड ल तै पा व कु न व र ष तु लु वें न व  
ल ति जि नै ह रे धि म ति ह री ॥ मे रे जां न प्री त म व सं त  
कौ वि यो ग भै यं ग्री ष म वि र हि नी ऊ सा स ले ति त हरी  
ज ज ज त कै ति ॥ लो ह ले चु भ की च लि जा ति जि त





अपैरपहिचान्ये॥ द्यौसनिसांकोविवेकसुतोचक्रई  
वक्रानिकेवोलतजान्ये॥ पञ्चादोद्य॥ कुटंग-  
कोपतजिरंगरलीकरतिजुवतिजगजोइ॥ पात्र  
सगूठनवातयहवूठनहूरंगहोइ॥ टीका॥ यहव  
समयसयीकोवचनुनाइकासोंमनाइवो॥ कपि  
ना॥ पात्रसत्रावतहंषगपुंजनिमोदसोंकुकभचइ  
दईहै॥ चारभरोवहुभाइभरीमिलिरंगरलीवनितां  
निवईहै॥ कोपप्रसंगुकुटंगुनिवारिनिहारिघटइ  
गईजुन्हईहै॥ गूठनहैयहवातगुसांइनिगूठनदधि  
रुरंगभईहै॥ पञ्चादोद्य॥ धुरवाहोंहिनत्रलिऊठे  
धुंवांधरनिचहुंकोद॥ जारतत्रावतजगतकौंपात्र  
सप्रथमपयोद॥ टीका॥ यहवरषासमयनाइका  
प्रोषितपतिकानाइकाकोवचनसयीसों॥ कपि  
मेरौकहोमांनिजियुनिहचेंकेभांनित्रालीप्रथ

महोपासकसकेवल ऊपरतैहें सीतलुसमीसमिल्ये  
तैसोईसहाइकरुविरहाविचारेकहिक्केसैउवरात  
हैं॥ जगहिजरावतयेआवतघुमडियनताहोवा  
सवगकुलसोसयेकरतहें॥ चपलानचपलफ  
ररुचालज्वालनिकोतेईधूमधारेयन्तधुखा  
परतहें॥ पउवाबोवा॥ त्रिअचिरजीवीअमरनिध  
काफिरोकहाइ॥ छिनुविहुरैजिनिकोनदिन  
पावसआवसिराइ॥ शीका॥ यहवरमासमयस  
धीनोवचनुनाइकसौनाइकसौनाइककोसधे  
सोकविहूकोऊक्तिहोइ॥ कविता॥ घोरिघटाधुमडे  
चहुंओरकरैवहुभांतिनुसारविरावो॥ भूमिहर  
वहसीतसमीसगहैगतिमंदसुगंधसुहावो॥

मैंछिनऐकविहोडुभयोजिनिकीगईछुरिन  
वो॥ त्रिअचिरजीवीभयेजमनेअजरामरक्यौन  
संककरावो॥ पउवाबोवा॥ अवतजिनाऊऊ

अथोसावनमांसु॥वेलुनरहिवैमसैंकेंप्रउंस  
कीवासु॥टीका॥यहवरघासप्रयपोषितपतिकाना  
काकोवचनुसवीसैं॥कविज्ञा॥जोलैंमनुरेसोह  
तोलैंनऊसासीगाथअंगयैंविरहदुषसूलनिकोस  
वै॥प्यारेनदनकीआवनअधिआसतैंसैंसैं  
दोजीवअवकहकहिवै॥अथोसवीसावननुनअथो  
मनभावनुरीअवतूंऊपाइनुकौकांडिवृथावहिवै॥कह  
प्रकुसमकीसुवासुकौप्रकासुभैयंवेलुहेनप्रांननुकौकु  
ननसैंरहिवै॥५४॥दोहा॥तियतरसैंहंमुनिकियेक  
रिसरसैंहंनेहा॥धरवरसैंहैंहैरहेजरवरसैंहैंमेहा॥टीका  
प्रहवरघासप्रयदेकविकीऊक्तिअनुस्वयंदूतुनाइका  
जीवचनुनाइकसैं॥कविज्ञा॥हरिजूपुहमिजलभरेव  
दिनाऊपवनचहूंअोरसैंभकेऊमगिऊदेरेहा॥महमहिल  
को॥नहलहीछविदाइरहेकुं॥३॥

लुके रहे। कमडि घुमडि परसतु से गुह मिघन सौ है सरसौ  
है वरसौ है जु कि कै रहे हेरि हेरि मुनि मनतिय परसौ है  
होत इत धन वंद अनुराग के उने रहे ॥ ५४ ॥ कवि विहार  
च ॥ चलित कलित अमस्वेद कन कलित अरु न मुषेत  
ना वन विहार या की तस निषेध काये नैन ॥ ५५ ॥  
यह वन विहार नाइ का की सोभा नाइ क की आस कि सवी स  
धी सों कहति है ॥ ५६ ॥ सुषमा कलित तरु नाइ की ए  
राई मांजळ मणि प्रकास चरु नाइ के सुहाये है ॥ ते से ई ललि  
त अमस्वेद कन जल कत जग मणि जोति के समूह सरसा  
ये है ॥ कौरे कवि कसदे विरे हे अन मेव के के चलत न के  
इ पणि चै से री जछाये है ॥ विपनि विहार रस छा की व्रज  
लवा की या कित प्रभा नै घरे लोचन ध काये है ॥ ५७ ॥  
होत ॥ ५८ ॥ वर जे दू लो हठि चेटे नास कौ घे न स काश ॥  
कटि हुम चीम च कल च किल च किव चि जा ॥ ५९ ॥  
हवर घास मया हि डोरे की सोभा सवी नाइ क सों कहति है

धीकोवचनुसवीसैं॥क विल॥भूलिवेकोचसकोल  
ज्यो है इनुद्योसनुमेंछांडिसवुठोरउहांओरठहरातिहै॥  
वरजियो ज्यो ज्यो त्यों त्यों मंनंतिनडकनत्राहुटुंकेचठ  
तिसकुचतिनसकातिहै॥गातकीनसुधिसम्हारक  
रअंचलकीहारुविलुलितीपदुरीनुषुहरातिहै॥म  
चेदुंओरकेहिडोरेकीमचक्रकटि टूटतिसील  
चकिलचक्रिचजातिहै॥५४॥सरदसितीहो  
हा॥शघनघेराहुटिगोहरविचलीचहुंसिराहकि  
धोसुचैनौजाइजगुसरदसूरनरनाह॥टीका॥प  
सरदसप्रयराजनीतिप्रसंगकविकीऊक्ति॥कवि  
शाघनघेराहुटिगयोअंधिजरोनिटिगयोविसदप  
नापुजगमग्योदुविद्धाईवैं॥कहैंजैविकसऊरहर  
षेनिरविचलेपधिकचहुंजों

लेहियकामलअमलभयेजनथलघटेअपचजनऊ  
हजमगाइकै॥ सरदसुभटसूरनाहकीनिकाईनीतिदे  
वैसवजगतुचुवैनीकीनोआइकै॥ ५५५॥ हेरु॥ चर  
नसरोरुकरचरनइगधंजनमुचुचंदु॥ समैआइसुं  
रसरदकाहिनकरतुअजंदु॥ ग्रहसरदसमयकवि  
कीऊति॥ सोरुतअरुनसरसीरुहचरनकरजि  
नहिजगतुछिअसदनगनाबई॥ कलापरिपूरनसुधानि  
धिवदनुत्वसेजाकीअदभुतनैकिहुविकहुकहतनआ  
बई॥ देहियतसंजनतरनकजरारेनैनकैहकविकसेदे  
धैजीऊसवुपावई॥ समैसुयपुंजसनीसुंदरसरदआइ  
कौनकेनऊरमेंअनंदसरसावई॥ ५५५॥ हेमंतरितु॥ पि  
॥ कियौसेवैजगुकामवसजीतेजितेअजेइ॥ कुसम  
रहीसरधनुवकरअगहनगहननदेइ॥ धीका॥ ग्रहसं  
तसमयकामोहीपनुअधिकहोतेहेसनाइकअधवाना

कासधीसौकैहैसैरसधीकैवचनुसंभवेकविकीउ  
कहै॥ कवि॥ सिंगीसेमुनिसिद्धइससेसतकतसेके  
कीनेविकलगनैकहैकाहिकाहि॥ मानियतुजाकोनो  
डमैअंधाकुजीतेमहिमंडलकेअजीतोसोजितोक  
प्राहि॥ कहैकविक्रसजिनपूलहीकेअंधसौकेसेके  
नेवलीभेरेसाहसुइतीकपाइ॥ जीतेजिहितोनेपलो  
कैसेवल्लुमनमयुअगरनुनगरहनेतुसरचापु  
करताहि॥ प॥ हो॥ ज्यैज्यैवटतितिभावरीस्यो  
सोवटतअनंत॥ अकअकसवल्लोकसुषकोकसो  
कहैमंत॥ टीका॥ यदहेमंतसमयकविकीउकिमु  
थैहैसजोगअगरमेवनेविपलभहैमेकोककोपसं  
गअन्यक्तिहजानिये॥ कवि॥ हिमरितुअईभइसा  
तसरसाईदेविभाजिगईगरमकरोजअचलनमे॥ वा  
सरकीलघुताविलोकिमुरिजातकोकसूहमदेकर  
सौतेनुतपनकेतनमे॥ कहैकविक्रसज्यैज्यैरजनी



वदति तेषां तेषां उमगतु मे दुःखानुरागिनुके मनमै ॥ ३ ॥  
कञ्चोकलोकलोकवाटतत्रपारसुससोकेहे वियोगी  
के किन्नो कनुके गनमै ॥ ५७ ॥ रोका ॥ मिलि विदुरे  
तविदुरतमरतदंपति अतिरसलीन ॥ नूतनविधिरे  
मंतसवुजग्नेजुराफ्रकीन ॥ रोका ॥ यहे मंतसमय  
सधीको वचननाइका सों होइतो मानवती अरु कवि  
इकी उक्ति होइ ॥ कविता ॥ रोका ॥ येके हे धियें दुइनुवी  
येके प्रां नहितकी उमंग नई नई योगहत है ॥ अतिर  
सलीन रोउ मिलें हीं विहार करे कहे कवि कस्यचित  
अति उमहत है ॥ विदुरे निमे बहूतो जीवेको भरोसो  
नाहि अति अकुलाइ मैन विपान सहत है ॥ और येव  
इयोहि मरितुकी नवलरी जगतमें सबही जुराफ्र  
करत है ॥ ५८ ॥ सि सि विरि रितु वन न हि ॥ ॥ अ  
त्रतुजातनजांनियतुतेजहितजिसियराब ॥ घरहि  
जसांई नो घयेो षरो पूसदिनमान ॥ रोका ॥ यहे  
सिररितु समय रोउ ॥ नुके हितकी अधिक इहे सु

शुक्रकी लगति है सुसमी दिनकी लघुता कहत है पर  
दिनकी निदा को लघुता ॥ वां वनद्रगोक्षे विभारी वृत्ति  
गोशं त्यों है वियोगिनि कों दियो अकुला तु है ॥ दंपति उम  
गोत्र नुराग उजिलत करये है रहतु मिलि दुहुं नु को गा  
है ॥ पूस को दिव सु लघु मां नु भयो असें जैसें स सुर के प  
में ज मां ई सकुचा तु है ॥ तेज को न ले सुर को सीतल सु  
मा उग से जो न तु न को अ क व शो क व जा तु है ॥ ५५  
गठ ॥ रहिल सकी सव जगते में स सिर सीतै कें त्रासा ॥  
गर म भा जि गठ वै भई ति य कु च अ चल म वा स ॥ ६  
॥ ग्रह स सिर रितु को समय क वि की उ कि होइ ॥ ७  
विज्ञ ॥ स सिर में शो जो रि सीत को प्र व लु जा के त्रा  
स हि य स व ही क प त श ह रा इ कै ॥ ता हि ल यि ह र म तै  
निक स त जी सर म गर म च ली हि यैं ह ह रा इ कै ॥ अ  
वर अ व नि पौं न पां नी तं जि तू ल त को टि कि न त हं

ॐ सकीभगीभहराइके॥ उंचेउंचेउंचेचल  
वनागरीकेविकटमत्रासजाइरहीठ  
दोहा॥ तपनतेजतपतातपतिअतु  
रसीतुकेयोहंनघटेविनुलपेटेतियला  
ससिररितुनाइककोवचनुनाइकासोंसवीह  
कविहकीउक्तिहोइ॥ नविना॥ मोलविसालकोअए  
सालदिजेसकोतेजइतेपरहोअ॥ राषहुकारनिहलिव  
मेंतनपावकपुंजअगीठीसजेअ॥ माहकोसीतुविह  
तुनकेयोहंकोरिउपाइकरोकिनिकोअ॥ जोलगिपी  
प्रियासबुजाइरहंलपटाइनसेकेहोअ॥ पपप॥ दिह  
लगति सुभगसीतलकिरिनिनिसिमुषदिनअवगा  
हि॥ माहससीभ्रमसूरत्पोरुतिचकोरोचाहि॥ वि  
धरुससिरसीतुकविकीउक्तिमुषादे॥ कविना॥  
रमेंसीतनेकरोहंजोररीतिआहिधौमहंमैचांदनी  
चेंनउमहतेहं॥ सुंपुटसरोजगहकुमुदविका

लिनइकातकोविहदहते॥सिरीसिरीसुभ  
वेकिरिनिलगतिगतरोतिकोबिलाससवेद्यो  
हीलहतै॥ससिकेऊरेकोसुषुमनिसवित्त  
कीजोरचोंपसोंचकोरचितवतसिरहतै॥५५२॥  
गुवर्नन॥दोहा॥दियेजुपियेनधिचबनु  
षिलतफ्रगुषियाल॥वाठतहंअतिपीरसुनक  
तुनवनतुगुलाल॥रोका॥यहहोरीवेलकौस  
भयनाइकोकोअनुरागकीअधिकईसुसधीससौसों  
कथतिहा॥कवित्त॥हरिषेलतफ्रगुवधूगनमध्यस  
षासवकेसरिरंगसनें॥इतचाइभरीवषभानसुताउ  
मगोहरिकेउतमेदुमनें॥जवेनेंननुमेंतकिठस्यो  
जाअपनैकरसौवहराइधनें॥अतिवाठतिहेजअ  
रतेअवहकाटतेपेनगुलालवनें॥५५३॥दोहा॥  
ठिदियेहीनैकुमुरिकरघूंघटपरुटा॥भरिगुला

कामूठसागइ मूठसागार यहहोरीषेल  
कोसमयनाइकाकोसोभानाइइसवीसोंकहतेहै

मोपेकहूकहतैनवनैकरिजेसीहंसोवृजल  
रिसईहै पीठिदिघैहोमुरीमनुलैवहफ्रागुनबेलधि  
लारिगईहै घूघटकोपट्टारिकेंभौहउसारिकेंनैकनि  
हारिगईहै योंभरिमूठिगुलालसोंप्यारीअचांनकमूठि  
सीमारिगईहै ५५५ ज्योंज्योंपट्टजटकतिहंसति  
हठतिनचावतिनैन त्योंत्योंनिपटउदारतउफ्रगुनादेत  
नैन यहनाइकापोटाहोरीषेलकोसमाजुना  
कुसोभादेधिवैकेंलोभलाणैहैसुसधीसधीसोंकहैहै

फ्रगुनबेलकोसमाजुवनिआयोजेसोंजेसोंये  
रसनासोंकहतवनैनैहें सांकरिगलीमेंनंदलालकोप  
रिवालमनभायेकरतिवटावैचितचैनेहै ज्योंज्योंनह  
इभरीलोचननघाएपट्टजटकिंकहतिहसिहसिघुदुवैनेहै  
सोंत्योंचितुलालनकोनिपटउदारतउफ्रगुनाकोधैं  
तउमानतुमेनैनेहें ५५५ हुटतमुठिलुसंगहै

लोकलाजकुलचाला॥ ल॥ १॥ १॥ १॥ १॥ वलचितु  
 ननुगुलाल॥ ट॥ का॥ यहरोरीधेलेकोसमयेसधीसधी  
 सौकहितै॥ क॥ वि॥ होरीकोसमाजुवरसौनेकेवग  
 रत्राजुकहकहौत्रालीवलित्रायौनीकोछालरी॥ इ  
 तजुवतीगनेमैराधिकाकिसौरीउतसहितसयानि  
 वस्योमदनगुपालरी॥ इ॥ रतमुठीकेसंगदूटतैहके  
 यौवेरगुरजनलोकेलाजलाजकुलचालरी॥ क॥ ह  
 कविक्रसत्योंहीलागतैहैकतनयेकेसाभवउचि  
 तलोचनगुलालरी॥ ५५॥ दो॥ ज्योंज्योंजुकिजाप  
 तिबदनुबिहसतित्रतिसतरा॥ त्योंत्योंगुलालरु  
 ठीजुठीजुकावतुपोजा॥ दो॥ यहरोरीधे  
 लनाइकाकीचेष्टेविनाइकरीज्योहैस्यनाइह  
 जुक्तिकरतुहैसुखवीसवीसौबरहितै॥ व  
 आजुवजेदेस्योहोरीधेलेकोसमाजुव

नेन नुमें रहे हावहार के राधावन सावको को विल्ला  
हुल विजाली सचीम घनाक को रिग गुमान जात  
गरिकें जैजै प्यारे पुत्रि पुत्रि जा पति वर नु विहं  
सति सतराति दिस कौसो रुखु कारिकें तौ तौ देवि  
जक्यो जक्यो कसन प्रान प्यारे लाल जिज का का  
वतु गुलाल मुठी मुठी भरि कें ॥ ५५ ॥ अरु रसमि  
जये दो अहुहु अति टिकि करे टेरें न इवि सौं छिर कत प्रें  
मरंग भारि पिच काई नैन ॥ ५६ ॥ अरु दो अहुहु को प  
रस्वरा वलोक नु हें सु मधी सधी सौं दोरी के घाल की  
समतो दें कें कह तिहे ॥ ५७ ॥ आजु वष भान की कु  
त्रादि मल्ल मोह नैन नैन ननु में रायो दोरी के सो घालु क  
रि कें भरे हित चाइ को ड चूकत न दइ टिकि रहे ट कल  
इ को ड जातु न हों टरि कें ॥ ५८ ॥ मि जये वना इ अति रसमै प  
रस पर फ्रागु अ नुराग कें गुलाल रंग छरि कें ॥ ५९ ॥ कस व  
हें छिर कत इ वि सौं इ वीले दो ड नैन पिच काई का  
प्रें मरंग भारि कें ॥ ६० ॥ अरु अति कें पकहु कहु रें ॥ ६१ ॥

सपसी जिलपटाइ ॥ लियो गुलालु मुठी भरि हूत तं जुठे  
कजाइ ॥ टो ॥ यह होरी बेल को समो सवी सधी सो कहति  
रो अनु के सात्तिक भाऊ कपुहे ॥ कवि ॥ मेरो कसो मानि  
एके तले चलि दे विरौ कजा नु वज धूम उहोरी बेल की अन  
तै ॥ कसरि मे सनै रसिक रसीले जहा वर या तहां हो सव सु  
अनु की नू टि रूठी है ॥ जद पि पर सपर दो अमुष मां डि वे कौले  
अति चाइ सो गुलाल भरि मूठी है ॥ कहु करुं पंकज पसी  
तल पटा त कहु को पै गिरि जात ता तै सो लें हो ति जूठी है ॥ ५५ ॥  
ना सु न ल ॥ दो ॥ रहो रु की क्यो हूं सु चलि आधिकरा  
ति पधारि ॥ हरति तपु सव द्यो सको लगि लगि उरहि विद्या  
रि ॥ टो ॥ यह वायु वर्न नु कविकी उक्ति ॥ कवि ॥  
ऐसी रहो रु कि क्यो हूं आवन न पाई जा के विनु मिले पां ननु  
गति अकुला है तो है ॥ ले चन चकित जा को आग  
म विलो कि वे कौ चहुं और चित वद्धा ती हो ति ता ती है ॥ क्यो  
क्यो चलि कै अचान कहीं आधी राति आइ गइ  
आइ जाती है ॥ हरति तपति सवधे ॥ ५॥



कविक्वसुषसिद्धिसरसाताहापक्षर... पुत्रतले

श्मकरंरुक्कनतठतठतरद्विरमाइयावतुदसिनेतेच

ल्लोचक्योवरोहीवाइ... यहपवनवर्ननककी

कृत्ति... लिषिमलसलि

लपरस्तु... सुतभयिहयवांचेवाजमका

सीरीकांहेदे... रल्यहि। मनथपववअसैसभर

मनुपरागज... वास्वामिकांसाविषमिकांसा

केधरेधरेसुरा... केलागेबंधा। कोणचनजिम

सोवरोहीचले... उरदायसवृज्याकेह। ६७१। मडिइ

नवमल्लीकुसु... मंअनलिबिजोसाविषमिकांसा

रहियवरसिरेह... नोजेबंधा। सदाचदाजमनहु

प्रसंगमेंनाइका... वारमडिइकेह। गरषावावा।

सवीनाइकासो... काआदिअसमदि। यनरयम

कुंजनितेहरेहरेनि... सुषरपरागसनीजाहि

कलितमक्षिकाकेकुसुमनवीननुतेनिकसतिसुरासि

तसरसातीहै। वरसिरेहकीसीरीआवतिवियारिदेकोपरसि  
जारतिवियोगिनुकीकातीहै। ५६२। दोतय रुक्योसांकरे



वारिनुकुंजगलीतलजावति ॥ ५६ ॥ रलितभंग  
धंदावलीजरनुसंनुमधुनीरु ॥ मंदमंदजावतुचल्लोकुंजर  
कुंजसमीरु ॥ ५७ ॥ यहवायुवर्ननुकविकीकृति ॥  
विता ॥ षंडनिकेसवदअषंडतेई सुनियतेगुंजतुअनेदम-  
स्योअलिनुकीवंदुहे ॥ सुमनुसमूहनुकीधूरिसोंधुरैटंगातम  
रजनुकमगिजरतुमकरंदुहे ॥ रंगरंगफूलनुकीजूलमैरु  
पायैतनुजगतविदितपाकेयोविक्रमअमंदुहे ॥ मानतरुतो  
रिवेकौंजावतुगुमानभस्योमंदगतिपत्रनुमनोजकोगय-  
हुहे ॥ ५८ ॥ चंदेदूयादुहा ॥ द्वैजसुधादीपतिकलावहल  
विडोठिलगाइ ॥ मनोंअकासअगस्तिप्रायेकेकलीलवार ॥  
येका ॥ यहचंद्रोदयवर्ननुसकीकौवचनुनाइकासोंअगस्ति  
आकेतरुतेंसंकेतअंस्थालमूचनुदेजतेमिलिवेकीअत्र  
धिसूचनुसाधारनतेंकविकीकृति ॥ ५९ ॥ देविओहे  
तियाकेमयंककीकैसीकलाअभजोतिजगीरे ॥ सोहविचा  
हिचकोरनिकीअवलीहलसीहियमोदपगौरै ॥ यौनिरघी

धरुनाईलियेंअपमाकविकेकरैमैअमगीहै॥मानहुवोंमअ  
भस्तिकेरुवहिरेककलीपहिलेंईलगीहै॥५६॥दोला॥धनि  
हैहेजजहांलघोतज्योदुगलिदुषरंदु॥तुवभागिनिपूर्वक  
गोत्रेअपूर्वचंद्रः॥६॥अरुचंद्रोदसुसवीकौवचनुनाद  
सोंप्रयोजनुनाइकदिवाइवैअनुक्तिरूपेमेंसंतवै॥न  
केना॥प्रसंगमें॥नकलकालोनिधेधिपरिपूरनधिः  
निधिसौहैअकलंकनवदुवनिजोकंदुहै जादिदेदि  
जवदलचौरतिप्रनिकनक्रुचिसुंदरताथेसोइतक  
मंदुहै॥धनिप्रहृहेजजहांलोकैकैनिरविपायोदुषरं  
गनिकौगद्योदुषरंदुहै॥पूर्वकेचौरपुत्रपुत्रुना  
दुनिरविअपूर्वअदित्तयोचंद्रहै॥७॥दुषरं  
धोचु॥नेरा॥अनुदुकरइकेकाइकेकानु  
रमाला॥इहिवांनिकनेमनःसंविनाइ  
दीवा॥अरुकीकइकेकाइकेकाइकेका

इमें वसो ॥ नवित्त ॥ द्विसों फ्र विसी सकिरी टिव न्योस  
प्रसाल हि वें वल माल लसे ॥ कर कं जहि मंजुर ली सुर ली  
द्विनी कटि चास प्रभाव रसे ॥ जस कहै लखि सुंदर मूरति  
पौ अभिलाष हि वें सरसे ॥ यह नंद कि सोरु विहार सदा हीं  
ब्रां निक मोरिय मांज वसे ॥ पद्मा दौटा ॥ मोर मुकट की चं  
इक नियो राजत नद नंदु ॥ मनु ससि सेषर की अब स किये  
सेष सत चंदु ॥ दिका ॥ यह श्री कसजू के मुकट की सोनास  
षी को वचनु नाइ का सों अरु भक्त हू को संभवे ॥ कदि है  
आजु लघो वजराज कुमा रु सुदे ससि गार वनें सगे रै है  
की रीज कही न परे अब लोकि विलोचन मोद भरे है ॥ च  
सकौ है सिर सोरु त मोर किरी टि चंदा द्वि पुंज भरे है ॥ म  
नों अक से ससि सेषर सों हरि सेषर चंद अनेक करै है ॥  
दोहा ॥ मकरा कत गोपाल के कुंडल सोरु त कांन ॥ मने  
धसो हिस धर समर डो टो ल सत नि सांन ॥ दिका  
यह श्री कसजू को ध्यान है अरु त रु नाई गूई हृदे में व

जोपेकौं नीदया अपराधीकोहोतुमकौं न उधा स्यौ कौं न अना  
कंधु भये प्रभुको विनुदास भये तु मता स्यौ ॥ त्रैसेई कैं संप  
तिकरौं कवि कस्यकैहैं पुकारि कैं रास्यौ ॥ तूठै तूठे निसां  
फ़िरौ प्रभु ठौई धा कुअ नारक पास्यौ ॥ ५७५ ॥ दोहा ॥ धौरैं ई  
नरीजतैं विसराई वहवांनि ॥ तुमहूं कां न्मनौ भये आजु  
॥ लि के दंनि ॥ दीका ॥ यह भक्त कौ वचनु भगवान् नसौं ॥ क  
॥ द्वै अति अर तेमै विनती वहु भंति करी करुं नारस  
मिनी ॥ कस्य कपानिधि दीन के वंधु सुनी असुं नी तुमको हे  
कौं नी ॥ रीकतरं चकरी गुनेतें वहवांनि विसारि मनौ तु  
भदीनी ॥ जानि परी तुमहूं प्रभु कलिकाल के दातनी की  
गति लीनी ॥ ५७५ ॥ दोहा ॥ मोहितुमैं वाठी वहसको जीतैं  
जदुराज ॥ अपनैं अपनैं विरंदकी दुहूं निवाहन लाजा ॥ दी  
का ॥ यह भक्त कौ वचनु भगवान् नसौं ॥ न लिता ॥ तुमजे जेता  
रे तेते मोतेन पतित भारे मोसौ पूरो पापीको उदूसरो नपेधि  
ये ॥ तुमैं वांनि परी प्रभु अधम उधारिवेकी मैरैं ये कपापही की  
टेक अवरै वियौ ॥ दुहूं नु कौं लाज प्रभु आपनैं विरंदकी है पूरी  
॥ ५७५ ॥ दोहा ॥ ॥ ५७५ ॥

सो बहसवाटी कौ लुल चिजा इत्रव जीते कौ लुदे धियो ॥ ५७१ ॥  
हो ॥ ज्यो है हों त्यों हों जगो हों हरि अपनी चाल ॥ दहन करे  
अतिक दिने हे मोतारि वों गुपाल ॥ ५७२ ॥ यह नक्त कौ वच  
न अपनी पापु करि वै कौ पनु भगवान् कौ उधारि वै कौ पनु उ  
पावल सौं प्रगट करतु हे ॥ ५७३ ॥ हों उनकी गनती मैं न  
हों प्रभु जेतु मतारे ते आपनी गों ही ॥ कस कहें गनते न वने क  
हुपापी लुकी परमावधि हों ही ॥ हों नी हे जो कहु हों नी वे हे गति  
मेरि ये चाल कु चाल सि सौं ही ॥ बल नु हे प्रभु करे उधारि वै  
भूलिन की जे वृथां हटु यों ही ॥ ५७४ ॥ ५७५ ॥ कौ न भंति राखि  
विरदु अवे देषि वी मुरारि ॥ वीधे मो सौं आनि के गो धे गो धै तारि ॥  
५७६ ॥ यह भक्त कौ वच नु भगवान् सौं यह दीन उधार न वि  
रदु हे सुनि खैं जानि करतु हे ॥ ५७७ ॥ पतित उधार न कर  
तु सुनु को उ सो उ सां चजूठ अच व वहरा इ गो वना इ के ॥ करे क  
वि कस जिनि और के भरम भूलो हों तौ हों गरु वपापी मन वच  
काइ के ॥ ता स्त्रो हे पषेरु ये कु गो धुता ते गो धतु म सोई जसुरा  
घो हे जगत वगरा इ के ॥ कौ न भंति राखि हे विरदु प्रभु देषि  
ये नू कठिन वनी हें अब वीधे मो सौं आइ के ॥ ५७८ ॥ ५७९ ॥  
मो हू ही जे मो व ॥ ज्यो अने क अधम लि दियो ॥ जो वंधे हों तो युते

वांभौअपनेंगुननि॥टीका॥यहभक्तकोवचनुभगवान  
सैंकिमुक्तिकरोतेवांधिरावैतोअपनोकरिरावै॥क  
नित॥भांतिभांतिअरतकोअरतिनिवारतेहोप्रगत्यु  
कारतनिगमगनसाधियैः॥तातैकविक्रसदनबंधु  
यासिंधजूसैंवारवारविनतीपुकारियैहेभाधियैः॥अ  
धमअनेकनिकोंज्योहीदोंनोमोषुतुमत्तोंहीमोहो  
षुहीवौचितअभिलाषियैः॥वांधिवैईजोपेमनमांनोम  
हरजतौजूआपनेंहेंगुननुवनाइवांधिराधियै॥५५॥  
देहा॥निजकरनीसकुचेरिगतसकुचात्रतइंहिचा  
ल॥मोहसेनितविमुषत्योंसनमुषरहिगोपाला॥टी  
का॥यहभक्तकोवचनअपनीविमुषताभगवान  
कोंभक्तनिसैंसनमुषरहिवेकोपनुप्रगटकरतु  
हे॥कवित्त॥जानियेरेनतिहारीप्रभूगतिवेदह  
नीकैंकैंभेदनपावैत॥संगफिरे-नग्यान्ननिकैं  
मुनिपावैनधांनसमाधि॥१०॥



पनी करती निहें सकुच्यो बहु स्यो सकुचावत ॥ हैतु  
मसो नितहें विमुधेतु मदी नदयाल सनं मुषावत  
दोपरी को लयो ॥ २५ ॥ नाहर जिनाहर गरमि  
बोलु सुनायो टेरि ॥ फूसी फोज में वंदि विचर सी सवनु  
तने हरि ॥ २६ ॥ यह दोपरी को समग्र कविकी अकिस  
धारनैतें ग्रामी नप संगे में वंदि मै है प्रे अपने पतिके विन  
मको भरो सो जा निह सी है ॥ २७ ॥ आयुध कुटिलो  
अं अघट साजें सुभटनु को भीर भारी चा स्यो अोर विक  
ली ये ई जात घेरि कै ॥ नाहर की गरज गूर सों गर जिपि  
ता ही सभे पाछे ते सुनायो बोलु टेरि कै ॥ बाके अति विर  
मको भाउ जिय जा ल्यो यह जी तें गो समरु ये क ये क  
निवे दि कै ॥ प्रवल चमू के बीच वंदि में फूसी है त अ  
मगि ऊछा रह सी सवनु तने हरि कै ॥ २९ ॥ जल  
है ॥ नहि पाव सरि तुरा जय रहत जित रवर मति भूल  
अपत भये क्यो पाइ हे क्यो न वदल फूल फूल ॥ ३० ॥  
यह अन्यो कि काहू दाता के धोषे सू मपे कडू के उचो

तहां कही ये जगरे के प्रसंग में गठ के प्रसंग हूँ मैं संभवे। कविता ॥  
मघवा के जल सौं उमगि अपकानों वहु पछि लु कौरा ध्योतें  
प्रसाइ स मुदाइ हैं। कोडि चित भूलवा भरो सैं मति भूलै अव  
वैसी तो वन कजी बिनीठि वनिचाइ रे। पावसन जां निरि  
तुराज को समा जु यर योही के सैं हरित भरित छवि छाइ है ॥  
सुनितर वर जो लोहैं है न अपतु तू व तो लो न वदल फूल  
संपति न पाइ है ॥ प२२ ॥ दोहा ॥ को छूटे नो इहि जाल परिकात कु  
लंग अकुलातु ॥ ज्यों ज्यों सुरजि भज्यो चह तु त्यों त्यों ऊर ज  
तु जातु ॥ टीका ॥ यह अर्थ ॥ कि सिंसार जाल अघवा प्रेम जा  
ल के बंधन मे कहिये ॥ कविता ॥ तव तो न जां न्यों लगिला  
ल चलु भ्यां नों चिं अव पर वस परिकोह पछितातु है ॥ क  
है कवि कस्यो के बंधन को यै हरी तिनै क अट कत अंग  
अंग वधि जातु है ॥ रे ध्योतें पधरू को अछूटे नो इहि जा  
ल परिकोह कौं तू वा वरे कुलंग अकुलातु है ॥ ज्यों ही  
ज्यों ही सुरजि भज्यो चह तु त्यों त्यों व

रोइघरो करजतुजातुहे ॥ पच्छरररर ॥ इरर  
गधितुंनघगर्विनिसांका जिहिं पहिरें जगद  
लसतिहसतिसीनाका ॥ इरर ॥ यररत्रत्यो  
हूमेधनसौं चयत्रागुनसौं अधिकसोहतुहोइ  
हिये ॥ इरर ॥ सुरनिसमेतनाकयाहोसौं व  
वमुक्तिजुतमुकतिपुरीसोदरसतिहे ॥ करेकवि  
मनमोहनकोमोहिवेकोमोहनीकोसिद्धिमाने  
भासरसतिहे ॥ तोहिपहिरेंतेजगनयनग्रसतिर्या  
रुविवरसतिमानेनासिकारहसतिहे ॥ अहेनघउर  
निसांकातूंगरवुकारिंहेहोमुकतावेगधसहितलस  
हे ॥ पच्छररर ॥ विसरिमौतोधनितुहोंकोपूछेकुलज  
तिपीवोकरितियजोडकोरसुनिधरकरिनराति  
यररत्रन्योक्तिकोअओहेकुलतेभयो लघुम  
सुअरुवडोओरजाइपहुंच्योहोइतहांकहिये  
कोंनविनाबुकरेकुलजातिकोजीवनअ  
इजगमेंगनिहेसर्वतेंवडभागीतुहोंअरुअर

मोवनि (तैं हें लसो कत पूरवका र ३  
 रेके मुकता तनि ॥ द्यो सनिसांति यको  
 तुली कें निसां कें पीवो कै रिनि ॥ ५२ ॥  
 पाइत सनिकुचक अपरुचिर मिठो सो सवुगो  
 थोर रहि वैरु जो मो लुहु विला उं ॥ ५३ ॥  
 जो किल घुमान को वेडे ठिकाने पडुं च्यो तें हुं क  
 ॥ ल विना सुद्धि मेवरो लघुना मुर्म उत पाति न  
 मयां नौ ॥ कौ न हूं भगिल सो घुं घची न वना गरिने  
 उच उठिकानौ ॥ याही ते मो सो से वे जग को मनु तो हि  
 गुमानु धरो अधिकानौ ॥ गोरहु टै रहि जै वै वही मुख  
 कालि मारंग वजार विकानौ ॥ पंश दोहा ॥ नहि प  
 रागुन हि मधुर मधुन हि विका सुइं हि काल ॥ अली कली  
 ही सो वधो अगे कौ न ह जाल ॥ दोहा ॥ य हें नाइ को प  
 तन में अव ही जो वनु अयो ना हीं नाइ क की आसक्ति पा

श्रीधिसुसवीसयसौं कहति है ॥ नोह परागुन  
हम करं द्रजें प्रगटीन सुवासु विकासर ॥ जौनै प्रौजों  
धौं है हेक रागति असेो पगे अत्र वही ॥ इक आसर ॥ शूली घनी  
कुलवारिर साल पेका हूके नैकन मानतुतासर ॥ रीजर  
लीमति कंज कली पे अली मडरां नो रे हे नि सवासर ॥ ५७  
मोर चंद्रकास्यां मसिर चठि कत करति गुमांनु  
लघिवी पां इनु पर लुंति सुनियतुरा धामांनु  
ग्रह अन्पोक्ति को कुलधुमांन सुवडी डोर पाइ गर बु करेता  
को मांन भंग होतें जा नैयें तहां कदिये ॥ घनसां  
मनै जापनै सी सै परा धी वना इकें चाइ के चाइनु सौं धरि है  
जिनिया कौं तू जी भें गुमानु करे अ वलौ सव जो म लघी परि  
हे कहि को हे कौं मोर की चंदि को अ सी डि ठाई के ठार र होठ  
रि है ॥ वष भांन कु मारि कामांन सभें तर वानि तेरे लुटि  
वौ करि है ॥ ५८ ॥ जिनिदि नरे वेवे कु सम वीं शु  
वीति वहर ॥ अ व अ लिर ही गुला व भे अपत कटी ली डार ॥  
॥ यर अन्पोक्ति को अ धन वानु निर्धन भयौ तहां धन के लो  
भी जा च न कौं कहि वौ भ्रमर के प्रसंग के गत यों व न हू के  
कहि वौ सभे वौ ॥ क दि ॥ जब हो हो त अ दितरि तुरा ज को  
प्रतापुती यें कहै ॥ क वि क व स जा को विक म अति अ पार ॥

इति वाटिका निवेदे वेद सु ब्रह्मदु सर सें गु सम म र प्र उ  
धभार उ हों आ सला गे इ तत्रा वतु चले यो ज्ञो जलि तो व  
वितीत भई ज्ञो सर उ हों वहरा गंध भु प्र दु ता परा गो को न ले  
सुर सौ अवर ही अप त गु ला व की क टी ली डार ॥ प र्धी चि हा ॥  
वह कि व डा ई आप नी क त चा तु र म ति भू ला वि नु म धु म धु क  
र कैं हि यें गे ड न गु ड हर फू ला टो का ॥ य ह अ न्यो हि को अ गु  
न ही न हे और ग वु अ धि क क र तै है ता सों गु ड र के फू ल को प  
संग कारि सं जे वै क वि ज्ञा ॥ क हा न यो जों पे पा यो स ह ज अ  
स न रं गु उ म गि ल लि त छ वि र ही त न द्वा ई हे ॥ व हि कि व ह वि  
चित आप नी व डा ई में तूं का हे कौ र च तु ग र व्रौ पौ न पा ई हे ज  
हिर सु लै वे ही के च स को ल गे ॥ हे सो क्यो सु म नु सु गंध त  
तो पे म ड रा ई हे ॥ गु ड हर फू ल इ त रा तु क्यो तूं फू लि फू लि  
नु म क रं द अ ल्यो भू लि हून भा ई हे ॥ प र्धी चो हा ॥ स्वार ए



नेको गुनगर वृहसो से वे संसासु कुच ऊचपद लाल चर  
जरे परे हूं सा ॥ टीका ॥ यद् अन्वोक्ति अति दूरी हूं जनेत्र  
नादर सौं रे हेत हां सौं कहि वौ संभवे ॥ क्वचित् ॥ कोटी वे  
कुल की पदवी गुन की गरु वाई न जी में धरे ॥ क्यो न से वे ह  
वोई को रें ज गु पां नि प हां ॥ नि हूं ते न हरे ॥ हा र नि हा र वि के  
हि आ स वि धा यो हि यो प ने टै न टै रें ॥ उच्च उरो ज नुं कौ सु  
लो भु है हि य यो तें गै रें हूं परें ॥ ५३ ॥ दो हा ॥ अति अंग ध अति  
धरौ न दी कूप सर वाइ ॥ श्रो ता कौ सा ग रु ज हां ता की प्पा स  
जाइ ॥ टी का ॥ यद् अ प नो कार जु को रे हूं सौं हो इ त हां य ह  
हिये ॥ क्वचित् ॥ कूप ग भी र स रो व र वा पी कि ती म हि में न  
जा ति व यां नी ॥ को टी न दी रु व डी सरि ता न द जे र च ना ज ग  
स नै ठां नी ॥ क ति म म द्दि म को उ ज ला स य दो उ अ ग धि वि  
ओ ध रो पां नी ॥ वा को व र हां क वि क्त य स म्मु द्रे हे जा की व व  
जि हं ठै र सि रां नी ॥ ५४ ॥ दो हा ॥ वि ष म व्र षा दि क की व व  
रे ह से वे जू सो धि ॥ म रु ध र पा इ म ती र हूं मा रू क रु त प यो  
टी का ॥ यद् अ न्वोक्ति अ प नो प्र यो ज नु का हू को रे ते



दिभयो होइ और वडे के बहुत समृद्धि है अरु अपने काम नाहीं आव  
ति तहां कहिये ॥ ५३ ॥ विषको तरनिते चै विषम करनिसव  
सलन सुकात कहूं जैं डही रहतैं जीवजंत जल घल प्रवल  
वलसव अकल पकल होत कलन लहतैं आतपके ताये अ  
तिपासके सताये जल सोधत फिर तप्रांन राषिवौ चहतैं अ  
ससमै पाये कां हं भागै मती राता सों माहू लोग जल निधि  
न्या इही कहतैं ॥ ५४ ॥ पासे दुपहर जेठके जीये मती रजु  
निधि अमित अपार अगाध जल मा रो मूंड पयोधि ॥ ५५ ॥ य  
ह अन्नोक्ति अपनोकार जे जे सैं तै सैं सिद्धि भयो पाइँ सर्व संपन्न  
मिलै तहां कहिये ॥ ५६ ॥ कौन काम जगतमें तासको वडाई  
जातै कहूंगर जसैरे नहि कौन हूं पनमें ॥ छोटे होते आपनो सक  
जहोइ काजतौ पैवाकी पर तर और कौन व भुवनमें जाके प्रा  
॥ निदाधकी व घामें वां मतोरे पाइव चै सिय राई भई  
में ताके आगे कहै कोउ सागरकी वात जैं डोसलिल  
अपारे के सैं आवै वाके मनमें ॥ ५७ ॥ ॥ को कहिसके व  
डनि सों लवें वडी यों भूल ॥ दों नैं दई गुलावकी डन डार नुये  
मूल ॥ ५८ ॥ यह अन्नोक्ति कोउ प्रवीन मह जांनि अजांने  
अविवेक कों करै तहां कहिये ॥ ५९ ॥ को यह वात वै है स  
के कहि भूलि कै काम करै करतार नैं जैसे ॥ येती करी जगकी  
रचनापे विचार विना न करै नहि तैसे ॥ देवहु कोउ उसासे

नसासवडेजुकरैकहुकांमअनेस॥त्रासयकट॥६॥  
लावकीफूलसुगंधदयेमदुकेसे॥५७॥नेहा॥दिन  
आदरुपाइकैकरिलेआपुवधान॥जोलगिकागसरा  
सुतोलगितोसन्नमान॥टीका॥ग्रहअन्धोक्तिकोउके  
दिननुकौं वठवारितंगवुकेतहोकहिये॥नदि  
भूमरकंठकठोरमहासुरेकहैलोचनरंगुहेकारे  
चकहुव्रतपहिनुमैअरुभहुकोसाजुकुचीलति  
रो॥आदरुपाइदिनादसकौअभिमाननुसोकह्ये  
वितधारे॥वाइसजोलैसराधकोपसुसुतोलगि  
आयुतिहारे॥५८॥देन॥मरतुप्पासपिंजरापस्ये  
समुवासरकेफेर॥आइसुदैदेरियतुवाइसुवलिकीव  
॥टीका॥ग्रहअन्धोक्तिभलेमानसकौंदुसुदीजेअरुनी  
केकोआदरुहोइतहोकहिये॥नदि॥देवोसमेंकेप्रभाद  
कोभाउभयोजगुओगुनहोकौरिजेवा॥वूजगईगुनद  
दनुकीप्रगटेअवकरकरूपअनौवा॥प्पासोंमैरेपिंज  
रामेंपस्येचकुहेमदुवैननुकोजुकहोवा॥आदरुवै  
॥लिदेवेकीवेरवुलावतचाहकचाइसोंकोवा॥५९  
॥इहिआसाअटकेयारैआल॥

हे फेरि वसंतरितु रनि डार निवे फूल ॥ १०० ॥ यह अन्वो  
के जसं कच्छु जाने पाये होइ तहां वै सि ये चा साल गाये रहे  
हं कहिये का कधुनि देतें यह होइ कि वा हो नरो से क्यार  
॥ कविना विइ न डार नि फूल हु ते जि न कर सने स  
हु सु भुलांने ॥ वीति वहार गई ति नि की कु समा वधि  
धत्त चु भे न रि चाने ॥ जे हे वसंत वहार ते वे यह वा सु  
व सोर भरी को विकाने ॥ आस ये हे जिये में धरि भों स  
नव के मूल रहे म डराने ॥ १०० ॥ दोहा ॥ परु पां वै भध  
गं करे स पर परे ई संग ॥ सुधी परे वापहु मि मे ये कै तु ही  
वे हंग ॥ कविना ॥ यह अन्वो कि जो को उ पराधीन अ रूप  
इ सी ना ही तहां कहिये ॥ कविना ॥ जो जनु कां कर वी नि  
नरे न करे जु अधीन द्वा का हू को सेवा ॥ पां धनु ही के वे ने पर  
गुरु विसाह को जानतु भा वन सेवा ॥ नी के रहे घर नी के  
हं संग पूरव पुं न्यनु को फूलु लेना ॥ को न हं ना ति नि अ  
पराई सुधी अ वनी पै हू त ही हे परे वा ॥ १०१ ॥ दोहा ॥ क  
र ले सू धि सरा हि हूं से वे रहे ॥ रा हि मो नु ॥ गंधी अंध गु ल  
व को ग व ई गा ह क को नु ॥ दोहा ॥ यह अन्वो कि को उ  
हु न करे तहां कहिये ॥ कविना ॥ रा ध्यो हे उ धारि ते अ  
लि क अ तरु अ गें जा के मृ दु गंध सों म ह कि र सो भों नु  
आ डि जे डि रा घ स व ही ने ली नो दे धि वे को सू धि सू

नुसराहिगुलौ। मोलुसुनेसवहोनेहसिकैमचाईकुके  
धुगहिअवतुंकरतुकेपानगेनुहे। अरेगंधीअंधेरेहिये  
भियेतौचेतुकरिगाहकुगुलावकेगवेलेगाऊकेनु  
॥६०॥ दोहा ॥ विनइहं नागरवडेजिनिआदर  
गोआव। फूलैअनफूलैभयोगवईगाऊगुला  
व। टीका ॥ ग्रहअन्नाकिप्रवीनलोगानुकोसमु  
दायहोइगुनकीवृक्षकोअनकरैतहांकहिये। क  
विन। चाइसैंआदस्तैरोकरैअरुतोहिसैंराधेहि  
यैअनफूलै। तोमदसोरभकोरसुलैजिनिकैअ  
तेमोदुरहैअतिअल्लो। किंमतितेरीवटायेध  
नीरिजवारनवेजिनिकौतकिभूल्लो। जैसेगना  
खुकेवसवासमेंफूलिगुलावभयोअनफूलै। ६०३  
दोहा ॥ गोधनतूरखोहियेघरियकलेहिपुजाइ। सम  
किपरैगीसीसपरपरतपसुनिकेपाइ। टीका ॥ ग्रहअ  
न्याति ॥ ६०३ ॥ नौअनेतरं

कहिये... सुनिकोनसकीकलगावतिगीतजेके  
किनकंठसुभाइनुसों. बहुभांतियुकेपकवांनवनइम  
वेसवेसतभाइनुसों. अरुगोधनतूमदुमानिदियेंवहुभांति  
पुजाइलेचाइनुसों. परिहेसुधितोदिसवेतवहोपसुपूजि  
हेगोजवपाइनुसों. ५०५. करिफुलेलेकोआचवत  
मीठों<sup>क</sup>असराहि. गंधीअंधगुनावकोअतरुदिघावतुकाहि  
... अहअन्पोलिमूरथजानिबासोंचतुरईजनावैत  
सोंकहिये... नगरकेवगरतेतेरीअुचीटेरसुनि  
चोंपसोंनुलाइलीनोंकहीअोंअउरे. वैठारस्योनिकर  
अतिप्रोतिसोंहुकमुकोंनोंसोंधोवेसकिम्मतिकौहमहि  
अउरे. आचवनुकरिअेंफुलेलेकोकहतमीठोंतेन  
सोंअोंअोंसुघराईकोप्रभाउरे. काहेकोंअघारतगुनाव  
अैअतरुअंधीकहांगइतेरीचतुराईअववाउरे. ५०६  
... प्रतिदिवतजेसाहिदुतिदीप  
इरपनधाम. जवजगुजीतनकोंकियौकाइबूहमनु  
काम... यहसोराजाकोवर्ननकविकीउक्ति

वनुजाइकसोना

सधीइसोहोइ

वित्त ॥ राजतुर्दण्डमंदिरमेंमहिमडनुश्रीजैसिंघसत्रा  
 ई ॥ तौप्रतिविंवनिकीअबलीचहुंओरलसेअतिहोइ  
 विहोई ॥ कैथीअनेकसरूपधरैरविरजतुमंडलीमें  
 डिसुहाई ॥ मानहुंजीतिवैकोजगतैरचनावहुब्यूह  
 कीकांमवनाई ॥ १२ ॥ दाहा ॥ चलतपाइनिगुनीगुनी  
 मानिकमुतियमाल ॥ भेटभैवैजैसाहिसौभागिनच  
 ह्यतुभाल ॥ टोच ॥ ॥ येहराजाकोदांजकविकीठक्ति ॥  
 ॥ वित्त ॥ दीजतभगाईकैतुरंगरंगरंगनिकेतुरतभडार  
 ५६पाइनुसोभरिबै ॥ किम्मतिविसालसालसुवरन  
 गललालहीरामुक्ताहलकसिखारटुरिये ॥ गुनी  
 नगुनीसवकोजतनिहालहालजाचककोविपति  
 नेकभांतिहरिये ॥ भेटभैवैविपिति सत्राडिजैसाहिज  
 होतुवडभागफलुभागुकराकरिये ॥ १३ ॥ देला ॥  
 तिनरनजयलाहिमुषुलविलाषनकोफ्रेज जा  
 नेराधरहुचेलेलैलावज्जकोनेज ॥ १४ ॥ यरा

जा लूराता अरुदा लुका चित्त शायका ७५॥  
करम सदाई जयसिंघके अंग जगमगतु रिते सको से  
नज अंग अंगमें लाये पोई रहतु नित समर विजे को चा  
रं लुकारि वेको मनु रहतु उमंगमें परद लुलाय लुके  
अपको वद लुल वि सन सुयर हिन सकतुर नरंगमें  
आधरुन जां नै सो अ ला धनु लह तु व सु जा चें सो अजा  
धी हेतु मो जके पु संगमें ६९० ॥ १० ॥ सां मा सैन सयां न सु  
प्रसवे साहि के साथ बाहु वली जय साहि जू फतेति हारे  
दुष्य ॥ १० ॥ यह राजा को जय सिद्धि वर नन कविकी छ  
के ॥ १० ॥ जगमपो दिल्ली हुन पतिको प्रतापुन न  
अंडमें अयंड दोवे अरि लुके माथे हे तेरेई उदंड भुज उंड  
के भरो सै सो अ रहत नि संक अ ददा तु य रह गाथे हे सुभद  
माज सामा सयन समाज सुय सवै सव भांति लुको  
हिजू के साथे हे रहति सदाई जयसिंघ महाराज सदे  
समर विजे की सिद्धि रावरेई हाथे हे ६९१ ॥ १० ॥ अनीव  
दी डी उम डील वें अ सिवा हक मट भूप मंगलु कारि मां न्यो  
हियें भो मुह मंगल रूप ॥ १० ॥ यह राजा को सूरता अ

वीरसुकविकीकृति॥ कवित्त॥ साभारवाप  
कमडिअमितदलसईयदसुभटमहाविक्रनिधान  
जुरजेगरुगैहनिपटलिकटआइविकटकुवंड  
साधिवरषतवांनैहें॥ साहसीसत्राईजैसाहिभूपत्रे  
सेसमेवीरसराच्योधिरुनयोतिहिचानैहें॥ कमगि  
उद्धरमहामंगलुकैमान्योहियैवदनकौरंगुभ  
वैमंगलसमानैहें॥ १२३॥ दोहा॥ यौंदलकोटवल  
कैतंतवजयसिंघभुवाला॥ अथअघासुरकैपरैजैप्रह  
रिगाइगुवाला॥ टीका॥ यहराजाकीसूरताअरुपरकर  
कविकीकृति॥ कवित्त॥ येकरसनासोंमोपैकैसैंकर  
परैजेतेविक्रमअमितकौनेत्रपतिसत्राईतैं॥ केस  
अघासुरकैतैराघोवजुरजेसैंत्रैसैंहसनगिलीकी  
खीऊगिलाईतैं॥ जेजियानिवास्सोदावानलसों  
नदुसुवलुकैविपतिहिरवानकोवहाईतैं॥ काली  
कुचालीकाटिदूरकीनोंमुहकमकीरतिप्रगाथ  
गुत्रोप्योकीपीठजराईतैं॥ १२३॥ नैत



...दुनीदेतिअसीससराहि पतिनुराव वारुचु  
कीजयसाहि... यहराजकोपराक्रमसवपेऊपक  
रसुकविक्रीऊक्ति... आयोइतउमडिअजीतसि  
घंअंअइतुसंगलेविटपसुभरनुकेसमाजकों। कहकवि  
कल  
कलइतदिल्लीकेप्रवलदलनिकसेसप्रससाजेंसमरके  
साजकों। जैसेसमेंवीरुविसुमेसकेअजानवाहु राधी  
तेहुंकीलाजकरिकेइलाजकों। घरघरतुरकिनिहिंदुनी  
मेमिलिसवदेतिहेअसीसजयसाहिमहाराजकों।  
...रविंदौकरजोरियेसुनैसामके  
वैनु भयेहलौहंलवनुकेअतिअनघौहैन...  
यहदासपदसचौरहनसमयसमीकोवचनसवीसौके  
विहूकोऊक्तिहेइ... गोपवपूनिकेचौरचुरइक  
मपेजाइचट्टोहरिजोंही। दूधसोंगाहिपाइकेवेस  
कुचीसतराइकेमागतिजोंही। देवदिवाकरकोंकारजोरि  
प्रजाभुकरोकदीवातरसोंही। योंसुनिकेंसुहसोंही।  
ईसवकीअधियाजुहतीअनघोंही। १९३...  
रतियदोसुपुरांनसुनिभुलकिहंसीमुसिकांनि। कसु

राषीभिश्चनेमृद्वर्द्धमुसिकानि॥टीका॥य  
सपरसपोरानीककोपरिहासकविकीकृति॥ ज  
वित्त॥पंडितरासमाजमेंवैठिकथायोंपुरानप्र  
गमेंभाषी॥जातुनिरेपदवीसविसेपरदारसोंजो  
हतकोअभिलाषी॥सोसुनिवैमुलकीअगलो  
वनिजासोंहोडीठिमिलाइकैराषी॥भरुजूचाहि  
विलोकतहोउमगोमुसिकानिमरुकरिराषी॥२९  
रा॥चितपितमारकजोगुगुलिभयोभयेंसुतसो  
गु॥फिरिहलस्योजियजेतिगीसमज्योजारजजोगु॥  
टीका॥परहासपरसजेतिगीकोपरिहासकविकीक  
कै॥कवित्त॥पुतभयोइवजेतिगीकैग्रहसोधतुसो  
चितमेंहलसाने॥डीठियस्योपित्रघातकजोगुवि  
घारिहियैअतिहोअकलाने॥जारजजोगुलव्यो  
वहोमुलक्योअरमानिहलासुसयाने॥भूलिग  
भोरुषुलिकठेनोमुषुअनरपुजुहिद्यैअधिका

नो ॥ २५ ॥ विद्या ॥ बहुधनुर्लेत्रे हे सांजुके पाशे  
सदा हिते वै हवधूहसि भेदसौ रदीनाह मुसचाहि  
काय एहा सपरहे सेवेइको परिहा सुकविकी कति  
काकेह विप्रचिनात्ता के भेदमें द्यौं इके वेरुहती  
रवारघरी नो ॥ काहू नपुंसकको वह काइ धनो धर  
नेवहुते यरुही नो ॥ पाशे प्रचंड बटा वतु हे चितव  
लि कलोलको चाऊन वी नो ॥ येवतियां सुनि  
कीतियापति के सुवज्ररचितेह सिदी नो ॥ २६ ॥  
का देवर फूलहने जु सुव अठे हर विप्रग फूलि  
हसो करति जो वरि अलि दु देह दोरि निभूलि ॥  
का ॥ यह नाइका परक्रिया मुदिता देवर सेव  
सक्ति हे सु सखी सखी कों सों कहति हे हर्ष अरु सहास  
संचारी हे ॥ कवि ॥ धिले मे देवर के करके वे  
जही फूलें गीन वलातन ॥ आनहुपुंज अमंगित  
फूलि अठे अतिको मलगातन ॥ देह दोर निभू  
नी उपचार करै लै हे भेदको वातन ॥

जेयकीवतियारसविग्रतियाहसिहरतिनातना १९११  
॥ औरसवेहरषीहसतिगावतिभरोऊकाह ॥ तुहोवहू  
विलषीफिरेक्योदेवरकेव्याह ॥ दीका ॥ यरनाइकाप  
रकियागुरजनकोवचनुदेवरसोप्रोतियहकंजि ॥ द  
दिना ॥ तुहोसवसाजैअनेकसिगारवनीठनोडोलेहू  
लासउमारे ॥ गावैहसैहरखेवरखेसुवकाडूकीसंक  
धरेचितनाहै ॥ भोनमेंमंगलसाजभरेवहूसोई  
लबैहसवजोचितचोहै ॥ देवरकेइंहिव्याइवइदि  
लषीसीतुहोलषियेकरिहोहै ॥ १९५ ॥ अचइ  
नारसादेहो ॥ समपलरिपलटपुकादिहै  
तजेनिजुचाला ॥ भोजकरुनकरुनइहै  
कपुतकलिकाल ॥ लीजायउरइहै  
भवेकलिजुगका ॥ ५१

रि करों विनती इ कसार भोपौ सिगरे जगु जोये जाति स  
भोप लटे प्रकत्पो फिरि क्यो न सुभा अते जे सबु कोये  
आरत सिंधु दया को स मुद्र अनाथ को नाथ कहवत  
होउ क्लेशयो देवे मह निरदे कलिकाल कृतहि  
आवत सोउ ॥ ९९ ॥ दीरघ सासन लेह दुष सु  
ष साई हि न भूलि ॥ दई दई क्यो करतु हे दई दई सु कवलि  
॥ यह करु नार सुभक्त को वचनु आपने मनै  
न चित्त ॥ जो तू दुषु लेहो तू जिनि अकुलाइ लेले दीर  
असा सचित चिंता में न दुलिये ॥ सुसु तो लेहो सव  
भांति सावधान रहि संपति मगनै के हर विन  
लिये ॥ धिर न रहत ऐतौ दुष सुष होत जात कस  
नामय की सुरति न भूलिये ॥ काहे कौ करत अति  
र ॥ तु क्ल दई दई दई जो दई सो भली भांति सों कवलि  
दिये सुसी सच ठाइ ले आही भांति अयेरि ॥

जापैसुषचारतलसोताकेदुषहिनफेरि॥१॥ का॥ य  
हभक्तकोवचनुआपनेमनसो॥ कविता॥ राधितुवा  
जाकेविसासुहियेश्रुतिजाहिसदापरिपूरनेटेरेरक  
तेराअकरेपलयेकेमेजोवहनेककपाकरिहै॥ जोक  
हुतोहिदयोजगदीससोसीसचटाइकेच्योअत्रयेरे  
जापेलयोसुषुचारतुहैअवाकदेयेदुषकोजिनिफे  
रो॥ २१॥ दोहा॥ कोजैचितसोइतैरजिदिपतितनुके  
साथमेरेगुनशोगुनगुननुगनोनगोपीनाथ॥ टी  
का॥ यहभक्तकोवचनुभगवानसो॥ कविता॥ निग  
मपुकारतकेवधहरिहरितुमसरबरकोसरनइसारे  
निरारिये॥ असरनहरनदुषदतातेकहुअवतेरोव  
रवारहाडिकोनसोपुकारिये॥ जैसेतुमतारेपतित  
नुकेअनेकपुंजकरहेकविजसजेसेमोहकोउधा

रिधे कीजेचित्तसोईजातेहोइजिरधारप्रधुमेरेगुन  
ओगुनकहुनउरधारिये ६२२ भजनकसो  
तातेभज्योभज्यो नयेकोवार दूरभजनजातेकसो  
सातेभज्योगवार यहभक्तकोवचनुआपते  
मनसो मेरीतोसोषसुनीअसुनीकारि  
तेमनओरमतोअंगयोरे मैकहीवाहिभलीविधि  
सांभजितुंहितैभजिदूरिभयोरे जाकीकहीअति  
दूरिभज्योइसोतेभज्योहितुसाजिनयोरे कस  
कहेप्रहस्यानपुतेसबुयेकहीवारकहातेवियोरे  
हरिकोंफिस्सो नपेंडइलोभफिस्सोसवदेस  
मनुनभयोकरुंजरोभयेउजरेकेस  
हभक्तकोवचनमनसो जलथल  
पकहंजनप्रतपालकहें विघननिनासकज्यो  
मरदिनेसरे तीनिलोककीलौमूठतैनताको

कोंची नौरस विषय नि सों भी नों तें लें वं नें डै  
सेने सरे ॥ कहें कवि कश्मन व संश्रुति रादि  
रहो हरि कों विसरि गयो फि स्त्रो दे सरे सरे ॥ पै डै  
नग वनु की नों क ह जग आश ली नों तून से त भ डै  
सिर भये से त के सरे ॥ ६४ ॥ सोर हा ॥ मैं ल मु ज्यो लि  
ए धार यह जगु का चो का च सौ ॥ ६५ ॥ के रूप च पा र पा ते वि  
वै त ल वि ज्ये ज हा ॥ ६६ ॥ का ॥ यह सां तर स सर्व म ई ष  
दे वि यै ॥ क वि ज्ञा नि प ट ज सार दु व दं द को ज गार  
स भां ति भ स्यो भ य भ्र म नि के भा रे है ॥ सां चे को सो  
सौ तां घे सां चो सो नि हा रि य तु जो लो ल वि य तु  
क धू धि र नारे है ॥ यों तो म ल मा ज मे तो स म्  
सो वि चार क रि य ह जु ग क



स्वारेहे जिततितपूरिहोपूरजपुरिसुत्रहयेके  
रूपुतहंप्रतिविंवितअपारेहे ६२५ ॥ १० ॥ ॥  
पाइवेतापसोंराघोहियेहमाम ॥ मतिकवहूंअंशेंहं  
पलकूपसीजेसंम ॥ टीका ॥ ग्रहभक्तकोवचनु ॥

गोत्रेशुनसेसुजाकोध्रावतमहेसुमुनिस  
धितसमाधिबहुभांतिमनुलाइके ॥ जैसीकोअविधि  
चित्त

मौपेआवतिनबनेजातेंवसकस्योविभुवनपतिकों  
रिजइके ॥ येकवातऊरधारिआपनोहियेमेंकरिरा

योहैहमामतिहूंतापसोंतचाइके ॥ वहकरु ॥ ॥  
कहावतुहेदीनबंधुमतिकहंपलकूपसीजेइ

इके ६२५ ॥ १० ॥ ॥ व्रजवासिनुकोअचितधीनु  
नुसचितनकोइ ॥ सुचितनआईसुचितईकोहो  
होइ ॥ टीका ॥ ग्रहभक्तकोवचनुप्रयोजनुग्रह

विधांनसुचितईनाहं॥कवि॥जाकीतनसे  
वनीरदसोदेवियतिपीतपटदांमिलिदमकृपि  
॥लोचनललितलसैरसभरेतामरसकुचित  
कअलिग्रवलिसुहईहै॥त्रैसोवृजवासिनुको  
धतधानुहतामैतैनदीनोमनुमतिविषपरचाई  
कौनभांतिसुचितईजियजोलौतोलौनाहिरूप  
निकाईवहजियमेंनअईहै॥६७॥दो॥लोपके  
इद्रलौरोपेपुलैअकाल॥गिरिधारीराघेसैवैगोगोप  
पाल॥दीका॥अहवीररसश्रीकसजुलगाअधल  
रिकैवृजवासीसवराघे॥कवि॥लेयोवलिनास  
नेकोप्योअतिसुरपतिप्रभुताकेऊमदिल्लयाम  
यैहै॥आहकरिकहीवारिवाहसुवेनल्लेद्वयामो  
वैत्रैसेचलनचलायैहै॥३७॥  
करारघनमानोमदाप्रन्देव

॥३७॥

मेनं देके सुवन कर गिरि धरि गोपी ग्वाल गाइ वद सवरी  
चाये है ॥ २२ ॥ प्रले करन वर सन लगे जुरि जल  
रइ कसाय ॥ सुरपति गर्वु हस्त्रो हर वि गिरि धरि गिरि धरि  
उच ॥ टीका ॥ यह वीर सगो वर धन को समये हर वि  
प्रद ते उता ह सु अहै ॥ ना निता ॥ प्रले के घु म डि घन अ  
प्रवज मंड लो मंडि के अ यंड धार लायो जरु अति को नि  
वि वि कल भये गोपी ग्वाल गाइ सव का हू के हिये मेरौ  
धीर जु नर ति को ॥ ता हो समें ज सु धा को लालु अ सो ह  
लु दे वि हर वि हरे या भवु ज की वि पति को ॥ पात लें अ  
ठार अ गो गिरि न रु पां नि पर दूरि को नो सर व गर व सु  
र पति को ॥ २३ ॥ अ य र स ॥ श ॥ कह ति न दे व र के  
कु व त कु ल ति व क ल ह ड रा इ ॥ पं ज र ग त मं ज र ति  
म सु क लें सू क ति ज इ ॥ टी का ॥ यह भ य र सु दे व  
की ध र ता स वी को व च नु स वी सो न इ का ख की  
क नि ता ॥ दे व रु च प ल चि त उ र मे कु भा उ ध रि क

श्रीवातयज्ञोदिनुरातिहै॥कैहंकविक्रसपर  
मसुसीलवालसकुचिमनहैमैमनुहोअ  
लातिहै॥कहिनसकतिकाहूअंनसोहियेको  
कुंदुकुलतियकुटमकेकलहिरातिहै॥निब  
विलाऊकेपेयेरूपजराकोजैसेअैसेयहवा  
निसिदिनसूचीजातिहै॥६३०॥अइतरस॥  
है॥मोहनमूरतिस्यामकीअतिअद्भुतगतिजो  
वसतिसुचितअंतरतअप्रतिविंवितजगहोश॥  
कीका॥यहअद्भुतरसभागवानकीन्यायकतावर्न  
नुभक्तकोवचनु॥नवित्त॥अैसीनअैरतिहंपुर  
मेंरुविजैसीवानंदकिसोरमेंदेयी॥ताहिविलोकि  
मनोजकीमूरतिकोवरनैअतिरूपविसेयी॥अैर  
केहाकहैसुंदरस्यामकीअद्भुतरीतिषरोअवरेयी॥

अंतररायी वसाइ हिये कौत अ जगमै प्रतिविंदिते  
धी २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५०  
हि प्रौहकमान चलचित वेजे चुकति नहि वं  
विलोकनि वाना ॥ २६ ॥ यह अद्भुत रसुसयी को  
वचनुनाइ कासोनाइ कौ वचनुनाइ कासोना  
इकाको वचननाइ कसों सवीह सों संभवे ॥ २७ ॥  
२८ ॥ सीयेतू कसते अति अद्भुत गति यह तेरी कमेने  
ती वरनत नवनति हे कौहे कवि कथाये तो प्रगटवि  
लोकियुती भुवुरी कमान जिहि विना हीत नति हे  
तिन तैन कोरे डोठि कुटिल कराहि सर चूकति न  
चलचित वेजे कौहनति हे तेरी या विलोकनि  
की निरवि अने श्री ती मेरी मति अति हित कौ  
तिगसनति हे २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४०  
२ मजुरति चतुरचि प्रीति परतिगं हि दु रजन रिये

नईयहरीति॥ का॥ प्रह अइतार २६ ॥ ७

इक अघवाना इका कौ वचनु सधीसों॥ कपि ॥ ॥

गीरहे मनमे रिखसाधदईयहरीति नईदुहंघांतो॥

गचनप्रीतमकी छवि सों करमे सवुट्टे कुटंब

को नातो॥ कसको छतिचोंपकेचाइजुरैरिहियकै

भसहेतुनसंतो॥ वैरिनुकी करमे परैगांठिअने

वैलिसुसोसनेरको नातो॥ ६३॥ ॥ ॥ तोल

धिमे मनजो लक्ष्मीसोगतिकहोनजाति॥ ठांठी

डगडेतातअउडोरैरैरिनराति॥ ६४॥ का॥ य

अदुतरसैहेदृष्टानुराजनाइका कौ वचनुना

कासों॥ कवि॥ तैरंतनराजैव्रथभानकी

कुवारिजैसीअसौछविपुंजतिहंपुरमैनदनुहे॥

मिंजोर अरु भुतरी तिअवरे धोता हि सुमि  
मिंजोर अरु भुतरी तिअवरे धोता हि सुमि  
कहत वने न क्यो इता हिल विप्रो मनु जोगी  
लह तु हे पार पि अ म गों डी के डी ना ड ग डो म  
नु त डे डे धो जोगी जा स क डे जो ई र ह तु हे  
या अ नुरा गो चित्त को गति समु जे  
को जे जे डे सां म रा त्यों त्यों ऊ जल  
यह अरु भुतर सभ क को वच नु ज  
नाइ का को वच नु स मी को हे श त डे सं मी  
ने न नु मा जर हे धु त्ति के वर नु व  
मोर को डे ठि सु ह ई प्रां न नि मै त डे सा व  
कवि का स को हे सु धि ज्ञान नु लाई य

पगेचितकीककुचद्रुत्तरातिकहीनहिजर्हि॥  
डेनारेहरगसाममेंज्योंहंज्योंत्योंत्योंगहैय  
तेउज्जलताई॥७॥सोतरसा॥दोहा॥ज  
भकरिमुहतरहरिपखौइहिधरहरिचितुलाऊ॥वि  
यत्रवापरहरिज्योंनरहरिकेगुनगाऊ॥७॥  
प्रसांतरसुभक्तकोवचनमनसोंभयसंचारी॥  
वेत्त॥दसहृदिसानुमाख्यापिरहोजाकोधाकुक  
होवाकेविक्रमकोकहलेंप्रभाऊरे॥तिनुकानौतो  
रतिहंलोककेसकलवलीकोअपेनवच्योवहुकियें  
हंऊपाऊरे॥ऐसेकालकरिकेंपखौतूंमुहतरहरिकंस  
कहैयधरहरिचितलाऊरे॥हरिमानिविषयत्रवानि  
परहरिमननरहरिदेवकेसमजिगुनगाऊरे॥७॥प  
रस्ताविक॥दोहा॥दूरिभजतप्रभुपीठिदेगुनविस्तार  
खकालपगभतनिरगंननिकउररिजंभरंगभंग



॥ दोष ॥ यह भक्त को वचन जव यों गुण भिन्न  
तव यों प्रभु दूर हैं अरु निरगुन तव है त ही त ही

हैं यह रीति कलिकाल के राजा निकी करि .

॥ कवित्त ॥ कस को व विवेक सी रीति प्रभु अरु

गनि वाहत सो अ पी डि दे दूरि हों दूरि भजे गुन  
स्तार को जव को अ नी कें ही क्यो न ल हो गुन मुक्त

सा च के वादि य चो प्रति को अ निर्गुनता प्रगै

गु अति हों नि कोटे प्रगै तव दो अ ॥ २७ ॥ ॥ ॥

अने क्यो गुन भरी चो है या दि वला इ ॥ जो पति संप

ह विना ज दु पति रो घे जा इ ॥ दोष ॥ यह पर स्ता दि

संप्रति विना हो रहति य वंगि ॥ कवित्त ॥ अंग

अ भरी अति चंचल या हि क हो जिय कों अ वि व

नंद कि सोर क पा करि कै वर संपति ह विनु जो प

धो ॥ या विनु का जु क छु ल सरे सबु को अ ये है ॥

॥ ॥ ॥ ज्ञानिये है चित चा ह त या हि उ

कुताकृतपापैः कृत्यादिह ॥ ५ ॥ भवपारावार  
कलघिपारको जाइ ॥ तियक विद्याया ग्राहिनी  
हवी चहो जाइ ॥ ऐसा ॥ यरपरस्ता विक संसार  
पारै के कौं पे का खी अ वरो धै ॥ विज्ञाने  
मो ह वा सना भयानक ॥ अर जहा असुर मनो जजा  
विक मुमरुतु है ॥ ऐसो भव सागर अ पार विकर  
मरु कहै क विकस को कलघि निव रहतु है ॥ साहस  
के ये मै धरि जतन अने क करि सव को उ या हित  
रि पार भो चरुतु है ॥ तरनी की क विद्याया ग्राहिनी  
विकर गहिरा घति प्रवलता तै वी च ही रहतु है ॥  
है ॥ जगतु जना यो जिहि स कल सो हरि जां ल्यो नां हि ॥  
ज्यो अं धिनु जगदे विद्ये अ धिने देवी जां हि ॥ ऐसा ॥  
यहांतर स भक्त को वचनु निर्वेद स्याई भाव ॥ अ विज्ञाने ॥  
ताहित जिकौ तू भ्रम भू ल्यो भटकतु वीरे जां तै ल हि य

तु सव सुधनु को गो तु है ॥ मानि अ न रुचि हरि भज न पि  
 दू व द्वां डे नो जानि वृजि विषय विषम विषमो तु है ॥ जि  
 नि सव जगत जना यो भली भांति व्र है प्रभु पे न जां  
 न्यो जै सो मोह को उदो तु है ॥ देवो जिनि आं विनु हों  
 सव दर सा यो ति नि आं विनु कों का ह भांति देखि व  
 न हो तु है ॥ ६४० ॥ ॥ को अ को रि क संग्र हो को अ ला  
 हजार ॥ मो संपति ज दु पति सदां विपति विदार न हर ॥  
 य ह सां तर सु भक्त को व च नु ॥ ॥ संग्र  
 को अ को रि को रो रु भरो को अ ल हिके ल हिके भ डो रे ॥ को  
 अ हजार कं जो रि धरो व हु भांति ल हो म नै मे षु भारे ॥  
 क स कृ पा निधि दी न को वं धु सु र दु म दां नि प्र ता प उ ज्ञा  
 रो ॥ संपति मे रं व हो जु दि पति विपति सदां जु विदार न  
 हारे ॥ ॥ जा तु जा त वि तु हो तु है ज्यो चि ते मे  
 सं तो षु हो त हो त जो हो इ तो हो इ घरो मे मो षु ॥  
 यह पर स्ता वि क क वि की उ कि ॥ ॥ सुर ते वें

नसमें जैसे या को मनुस व ठोरें तस मिटि रहे ग्यां नहीं  
 तोटे कमें लै सो मनुस दां जो पै रहे ये कर सतौ पै को रहे को  
 प्रम तु फिरें चौरा सी जने कमें कहे व विजस जै सो हो  
 त हो त हो इतौ पै हो इ जना या सही मु क ति घरी ये कमें ॥११॥  
 दोहा ॥ ग्रह वरि द्यान ही और की तू करि या व ह सोधि ॥ पां  
 ह न ना व च टा इ जिहि की नै पार पयोधि ॥ दी का ॥ ग्रह  
 सांतर सुभक्त को वचनु आपने मनसो ॥ क विज्ञा  
 सागरु जगह भौर भारी विकराल गाह ज दृ पि पहा  
 रहतें दी रघ ल हरि है ॥ देख न डराइ के तारा इ हे मति वा  
 रवार वा वरे त अ न ते रौ क छू वै विगारि है ॥ वांध्यो जिनि  
 सिंधु जो है दी ननु को वंधु जिने संन पति कुं जर की की ली  
 घर हरि है ॥ राम म हारा ज धरै विरद की लाज सो ई सा  
 जि कैं जि हा ज कैं नि वा हि पार करि है ॥ ११३ ॥ दोहा ॥ प  
 तवारी माला प करि और न क छू ऊ पा ऊ ॥ तरि संसार  
 पयोधि कैं हरि नां वै करि ना ऊ ॥ दी का ॥ ग्रह सांतर  
 सुभक्त को वचनु मनसो ॥ क विज्ञा ॥ जहं काम को धम

संपत्तिके जात जात जसा शिका ॥ चतुहा पुर  
 जा वरु रे सम फिस तो व के विवेक म ॥ १३

दशमनतिमंज लैहं सूजतुनक्यो इंपारपरिवेकोदा  
ऊरो से चुभस्यो सलिललहरितामैं लोभको  
हे त्रया विकराल भारी भौर नुको नाऊरो कसक  
हे पस्यो तूं विकर भवसागर मे त्रवकछू और लउ  
पाठचितलाऊरो मेरो कस्यो मानि याहि सुवहीत  
रे जो पतवारो करि मात्वा हलो वैं करि नाऊरो  
हरिको जतु तुमसों ये हविनती वार हजार जि  
रिति हिं जति डस्यो र हों पस्यो र हों दरवार  
ब्रह्मांतर सुभक्तको वचनु भगवान् जसों  
दी सतुको जे और दया निधिते रोई ये कुभरो सों गौ  
हों वेदपुरा ननुकी सुनिसा विहियें धरि आसहु  
सलहहों दी नउधारन वार हें वार ये हविनती व  
जे दि कहें हों जैसें इतै से डस्यो अपस्यो दरवार  
रिति होर रहे हों ॥ ४५ ॥ मन मोहनसैं  
करि तूं घनस्यो मसम्यारि कुंज विहारी सों  
गिरधारी अरधारि ॥ ४६ ॥ यह भक्तको व  
नसों ब्रह्मान ब्रती नाइ का सों सवीको वचन

भवे ॥ कविता ॥ मेरो कहौ मानि मन मोहल  
मोह करि सुंदर वरन घन स्याम कौ सम्हारिले ॥  
जवन कुंज के विहारी सौ विहार करि गिरवर  
गरी सुवकारी कर धारिले ॥ भूलि हूँ चित ब्र  
वधा वार मेर चावे मति कहै कवि कस्य यह सु  
मति विधारिले ॥ थिरु नर हतु धनु जीव नु भल नु  
तनु जानि वृज जीवनि सौ चौपतुर धारिले ॥ २६२  
दोहा ॥ जपमाला छोपे तिलक सरे नये कौ का  
मु ॥ मन का चैना चै वधा सां चै रा चै रा सु ॥ दो  
हा ॥ यह परस्ता विक जौ लौ मन मै क चडि है तो  
लौ अ पर कौ स्वाग का मना हो चावतु ॥ कविता ॥  
शिक मनो हर भालवना इ कै माल धरौ ऊर मै किनि  
सौ लौ ॥ छापनि सौ तनु मंडित के अरु धानु लगा  
इर हो किनि कौ लौ ॥ ना चतुना च वधा कवि क



हिठोरकेलाइकैरिहिकोवसवासुतिहोथलेके  
होदेवोनिहारिसिगारकेभेदमेंदेवियेवातपत  
चयहैहै॥जदपिलालअमोललगेपातउपाइल  
पाइनुहोलगिरेहो॥हेवहभोउरकोविदुलीतउ  
भामिनिभालहोपेदुयेहै॥स्त्रीरहल॥अ  
ज्योतस्योनाईरसोश्रुतिसेअतइकरंग॥नाकवासुवे  
सरिलसोवसिमुकतनिकेसंग॥दे॥॥यहपरस्ता  
विकभक्तकोवचनुप्रयोजनुग्रहइकरंगश्रुतिसेवतु  
रसोसुतन्योनाहीअसवेसरिजुकाइकेसमानहीति  
ननाकवासुपायोकाकुध्वनिकेहेतंतवेरकोदोषुद  
रिहोतुहेश्रुतिकानहूकरियेतोसभैवे॥कचित्त॥संग  
लागोयेकरंगश्रुतिहोकोसेवतुभरोसोधारिधारिजियत्रै  
सोनेहुनसोहो॥कहेकविकल्पतासोसवुकेअकहतु  
हेअजहूलैतस्योनाहोतस्योनाहीरसोहो॥प्रेमकेप्र  
भावकीइहलैअधिकारिजाकेचित्तअइतिनहींपरमप



दुगहो है विमल सुठार मुकता नि संग वसिल सिन  
कको निवासु देयो वे सरि दुगहो है ६५७ ॥ १ ॥ अ  
निशारे दीरघन यन कि तो न तरु नि समांन वरुधि  
तव निशारे कधू जिहि वस होत सुजांन ॥ १ ॥  
ग्रह परस्ता विक्रम्योक्ति हूवने कवि को अक्षि  
वीको वचनु नाश का सौ ॥ १ ॥ जगत में सब सौ  
करत सब प्रीति अं पै प्रीति रीति जानत जे प्रीतिके  
निधान है करतु सिगारु रधि पधिस वुको उं पै सि  
गार करि वे के भेद भाऊ भै विनांन है अनिशारे १  
जशारे दीरघ दुग निवारी के तो न तरु नि महिमंड  
न में आंन है प्रेम चरी वरुधित वनि कधू शारे ही  
हे होत वस जाहि निरवत हीं सुजांन है ६५९ ॥ १ ॥  
जो चो है चटक न घटै मै लो हो रन मित ॥ १ ॥ रजरा  
हुवा इतो लोह ची कने चित ॥ १ ॥ ग्रह परस्ता वि  
मित्रता में रजोगुन ललागे सुद्धरे है मित्र को वचनु  
वि ॥ जगत में महगी है सब होतै प्रीति ये कसा

विनुको<sup>अ</sup> ताकोलेसहूजदरसे॥यहोहजतनु  
कविकसद्राकेपालिवेकोमानेमतिदोयुजौ  
तूअधिनिहूंदरसे॥जौमैनेहचोकनैहियेकीये  
करसराघोचातुचटकऊजराईअतिसरसे॥  
तौपिकाहूभा<sup>ति</sup>याहिमैलोमतिकैरेमीतअसैराधि  
सैरजराजसुनपरसे॥६५२॥देहा॥जोसिर  
रेमहिमांमहोल्हियतिराजाराश॥प्रगटतज  
॥अपनीयेंसुमुकटुपहिरोयतुयाशाटाका  
अन्योक्तिजोआदौमानसुहे<sup>आ</sup>नलेदरलाइक  
इलिरादरसौरावैतटांकहिये॥कवित्त॥जो  
गतिजवाहरुलैवहुभातिरच्योअतिहोइवि  
जाकीजगमगहोतिप्रभामतिजाइलवै  
मोललचाई॥जाइधैरिसिरभूपनुकीमहि

कहतु है। मोपेक छू कहतै नवनै चित चात  
जैसी विहारि गई है। मैं जवतै निरधी जवतै ऊर मेन  
साइक मारि गई है। पास जअ पति देह लग्यो तउरी  
सनेह की पारि गई है। लो चौधे आंधिनु सैं इहि जौ  
लो धी चितौ नि निहारि गई है ॥ २५९ ॥ इत्या ॥ तौल गि  
या सदने में हरि आवैं किहि वार ॥ विकट जेर जौ लौं  
रघु टै नक पटक पाटे ॥ इत्या ॥ यह सांतर सुभक्त को व  
नु मनसौ ॥ सरल सुभाऊ गहि संतनु के सं  
हि संगहि धर मुला गि भंति के घाट कोरे ॥ दो डि जोर  
नगाइ करु नाम यके ये हे समु जाइ तो सों कहतु निरा  
कै कवि कसतु हीं देधि धौं विचारि मन मंदिर मेर  
तौ लौं आवैं किहि वार ॥ जेट है विकट ॥ वृथा वाद  
ज जीरनु सों जौ लौं ये घुरत नां हि कपटक पाटे ॥

